Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/483
वर्ष 12 | अंक 347
नई दिल्ली, मंगलवार, 29 अक्टूबर, 2024
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

स्पोर्ट्स 12

सलीमा होंगी भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान

2025 में होगी जनगणना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

नरेंद्र मोदी सरकार 2025 में लंबे समय से लंबित जनगणना शुरू करने जा रही है, जिसे 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य है। इसके बाद लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए राष्ट्रव्यापी परिसीमन प्रक्रिया होगी, जिसके 2028 तक समाप्त होने की उम्मीद है। हालांकि, अभी तक इस बात पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है कि सामान्य जनगणना के साथ-साथ जाति जनगणना भी की जाएगी या नहीं। यह घटनाक्रम कई विपक्षी दलों की ओर से जाति जनगणना की मांग के बीच सामने आया है। हालांकि, सरकार ने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है और जनगणना प्रक्रिया का विवरण अभी सार्वजनिक नहीं किया गया है। आगामी जनगणना दौर में सामान्य, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की गणना के साथ-साथ धर्म और सामाजिक वर्ग पर सामान्य सर्वेक्षण शामिल होने की उम्मीद है।

विवरण से अवगत लोगों के अनुसार, सरकार ने अभी तक जाति जनगणना पर कोई निर्णय नहीं लिया है। देश की जनसंख्या का सारणीबद्ध करने की प्रक्रिया 2025 में शुरू होगी और 2026 तक समाप्त होने की उम्मीद है, जिसके बाद परिसीमन के माध्यम से लोकसभा के लिए निर्वाचन क्षेत्रों को बनाने की प्रक्रिया शुरू होगी। पिछली जनगणना 2011 में की गई थी, और अगले दौर की शुरुआत में 2021 के लिए योजना बनाई गई थी, लेकिन कोविड-19 की दूसरी लहर के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। जनगणना चक्र अब 10 साल के पैटर्न का पालन करने के लिए तैयार है, जो 2025 से 2035 तक और बाद में 2035 से 2045 तक चलेगा। रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त के कार्यालय ने जनगणना अभ्यास के दौरान नागरिकों से पूछे जाने वाले 31 प्रश्न तैयार किए थे। इन सवालों में यह भी शामिल है कि क्या घर का मुखिया अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति से है और परिवार के अन्य सदस्य पिछली जनगणना में पूछे गए थे। सूत्रों ने कहा, संभावना है कि जनगणना और एनपीआर का काम अगले साल की शुरुआत में शुरू हो जाएगा और जनसंख्या के आंकड़े 2026 तक घोषित किए जाएंगे। इसके साथ ही जनगणना चक्र में बदलाव होने की संभावना है। इसलिए, यह 2025-2035 और फिर 2035-2045 और भविष्य में इसी तरह होगा। उन्होंने कहा कि परिसीमन पर कोई भी निर्णय लेने से पहले इन सभी कारकों पर विचार करना होगा।

जनगणना अभ्यास के तहत प्रत्येक परिवार से पूछे जाने वाले 31 सवालों में घर में सामान्य रूप से रहने वाले कुल व्यक्तियों की संख्या, क्या घर की मुखिया एक महिला है, घर के कब्जे में विशेष रूप से रहने वाले कमरों की संख्या, घर में रहने वाले विवाहित जोड़ों की संख्या आदि शामिल हैं।

सवालों में यह भी शामिल है कि क्या परिवार के पास टेलीफोन, इंटरनेट कनेक्शन, मोबाइल या स्मार्टफोन, साइकिल, स्कूटर या मोटरसाइकिल या मोपेड है और क्या उनके पास कार, जीप या वैन है। नागरिकों से यह भी पूछा जाएगा कि वे अपने घर में क्या अनाज खाते हैं, पीने के पानी का मुख्य स्रोत, प्रकाश का मुख्य स्रोत, शौचालय तक पहुंच, शौचालय का प्रकार, अपशिष्ट जल का आउटलेट, स्नान की सुविधा की उपलब्धता, रसोई और एलपीजी/पीएनजी कनेक्शन की उपलब्धता, खाना पकाने के लिए प्रयुक्त मुख्य ईंधन, रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेलीविजन आदि की उपलब्धता।

कांग्रेस, आरजेडी और कई अन्य दल जाति जनगणना की मांग कर रहे हैं। बिहार में जेडीयू जैसे बीजेपी के गठबंधन सहयोगियों ने भी इस बारे में बात की है, लेकिन केंद्र पर कोई दबाव नहीं डाला है। केंद्रीय स्तर पर, अंतिम निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके मंत्रिमंडल पर छोड़ दिया गया है। बीजेपी की दूसरी सहयोगी तेलुगु देशम पार्टी भी मानती है कि जनगणना होनी चाहिए, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू आम जनता, (शेष पृष्ठ 9)

भारत-स्पेन साझेदारी ने पकड़ी नई रफ्तार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज़ वडोदरा, गुजरात में सोमवार को टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के उद्घाटन के बाद। साथ में टाटा संस के चेयरपर्सन नटराजन चंद्रशेखरन भी दिखाई दे रहे हैं।

पायनियर समाचार सेवा। वडोदरा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने सोमवार को वडोदरा में सी 295 विमान के निर्माण के लिए टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया। इस बात पर गौर करते हुए कि भारत और स्पेन के बीच साझेदारी को नई दिशा मिल रही है, मोदी ने कहा कि यह परियोजना न केवल दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करेगी बल्कि 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' मिशन को भी गति देगी।

मोदी ने एयरबस और टाटा की टीम को अपनी शुभकामनाएं दीं और दिवंगत रतन टाटा को श्रद्धांजलि भी दी। एयरबस सी 295 एक मध्यम सामरिक परिवहन विमान है जिसे स्पेनिश एयरोस्पेस कंपनी सीएएसए द्वारा डिजाइन और शुरू में निर्मित किया गया था, जो अब यूरोपीय बहुराष्ट्रीय एयरबस डिफेंस एंड स्पेस डिवीजन का एक हिस्सा है। सी 295 का उपयोग चिकित्सा निकासी, आपदा प्रतिक्रिया और समुद्री गश्ती कर्तव्यों के लिए भी किया जा सकता है। मोदी और सांचेज ने सुविधा के शुभारंभ के अवसर पर प्रदर्शित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। सी295 विमान कारखाना नए भारत की नई कार्य संस्कृति का प्रतिबिंब है, मोदी ने कहा, किसी भी परियोजना के विचार से लेकर क्रियान्वयन तक भारत की गति को इस कारखाने में देखा जा सकता है, जिसका शिलान्यास अक्टूबर 2022 में किया जाएगा। परियोजनाओं की योजना और निष्पादन में बेहिसाब देरी को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देते हुए, मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में वडोदरा में बॉम्बार्डियर ट्रेन कोच निर्माण सुविधा की स्थापना को याद किया। मोदी ने कहा कि उस कारखाने में बने मेट्रो कोच निर्यात किए जा रहे हैं, और विश्वास व्यक्त किया कि सोमवार को उद्घाटन की गई सुविधा में बने विमान भी निर्यात किए जाएंगे। प्रसिद्ध स्पेनिश कवि एंटोनियो मचाडो को उद्धृत करते हुए मोदी ने कहा, जैसे ही हम लक्ष्य की ओर चलना शुरू करते हैं, लक्ष्य की ओर रास्ता अपने आप बन जाता है।

मोदी ने कहा कि एक दशक पहले रक्षा विनिर्माण की प्राथमिकता और पहचान आयात थी और कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भारत में इतने बड़े पैमाने पर रक्षा विनिर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा, 'हमारी सरकार ने एक नए रास्ते पर चलने और भारत के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने का फैसला किया, जिसके परिणाम आज स्पष्ट हैं।' मोदी ने कहा कि भारत के रक्षा क्षेत्र में बदलाव इस बात का उदाहरण है कि कैसे एक सही योजना और साझेदारी संभावनाओं को समृद्धि में बदल सकती है। कौशल और रोजगार सृजन पर जोर देते हुए मोदी ने कहा कि टाटा-एयरबस कारखाने जैसी परियोजनाएं हजारों नौकरियां पैदा करेंगी। उन्होंने कहा कि कारखाना 18,000 विमान भागों के स्वदेशी विनिर्माण का समर्थन करेगा, जिससे पूरे भारत में एमएसएमई के लिए अपार अवसर उपलब्ध होंगे। मोदी ने कहा कि भारत दुनिया की प्रमुख विमान कंपनियों के लिए भागों के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। उन्होंने कहा कि नया विमान कारखाना भारत में नए कौशल और नए उद्योगों को बड़ा बढ़ावा देगा। पिछले दशक में भारत के विमानन क्षेत्र के 'अभूतपूर्व विकास और परिवर्तन' पर प्रकाश डालते हुए मोदी ने कहा कि सरकार देश के सैकड़ों छोटे शहरों को हवाई संपर्क प्रदान कर रही है, साथ ही साथ भारत को विमानन और एमआरओ डोमेन का केंद्र बनाने के लिए काम कर रही है। (शेष पृष्ठ 9)

जम्मू-कश्मीर के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास एक गांव से गुजर रहे सेना के काफिले में शामिल एक एम्बुलेंस पर आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी किए जाने के बाद सेना के जवान घटनास्थल के पास चौकसी बरत रहे हैं।

सेना के वाहन व धार्मिक स्थल पर आतंकी हमला

मोहित कंधारी। जम्मू

1984 के ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद, भारतीय सेना ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर में दूसरी बार सेना के लड़ाकू वाहन को तैनात किया, ताकि अखनूर के एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल के अंदर से विदेशी आतंकवादियों को बाहर निकाला जा सके। ग्राउंड रिपोर्ट के अनुसार, सोमवार की सुबह अखनूर के बटाल इलाके में सेना के वाहन को निशाना बनाने के बाद, भारी हथियारों से लैस विदेशी आतंकवादियों के एक समूह ने एक धार्मिक स्थल पर धावा बोल दिया और कई संरचनाओं को नुकसान पहुंचाया।

एक धार्मिक स्थल के बेसमेंट क्षेत्र में छिपे विदेशी आतंकवादियों के एक समूह को बेअसर करने के लिए चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियान में राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) के शीर्ष कमांडो को भी शामिल किया गया था। जवाबी गोलीबारी में धार्मिक स्थल को भारी नुकसान पहुंचा। सेना ने लगभग 11 वर्षों के अंतराल के बाद ऑपरेशन में पैदल सेना के लड़ाकू वाहन बीएमपी-टू को तैनात किया था। (शेष पृष्ठ 9)

फैंटम ने दिया सर्वोच्च बलिदान

पायनियर समाचार सेवा। जम्मू

भारतीय सेना के वीर कुत्ते फैंटम ने सोमवार को अखनूर के बटाल इलाके में चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियान के दौरान सर्वोच्च बलिदान दिया। अभी तक एक आतंकवादी को मार गिराया गया है, जबकि शेष विदेशी आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए अभियान अभी भी जारी है। व्हाइट नाइट कॉर्प्स ने एक्स पर एक पोस्ट में सर्वोच्च बलिदान को स्वीकार किया। व्हाइट नाइट कॉर्प्स ने एक्स पर पोस्ट किया, 'हम अपने सच्चे नायक - एक वीर भारतीय सेना के कुत्ते, फैंटम के सर्वोच्च बलिदान को सलाम करते हैं।' इसमें आगे कहा गया, (शेष पृष्ठ 9)

25 नवंबर से शुरू हो सकता है संसद का अगला सत्र

- सरकार चाहती है संसद का अगला सत्र महाराष्ट्र और झारखंड चुनाव नतीजों के बाद ही आरंभ हो

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

संसद का अगला सत्र आयोजित होने को लेकर बड़ा संकेत सामने आया है। यह बताया जा रहा है कि पीएमओ और संसदीय कार्य मंत्रालय संसद का अगला सत्र 25 नवंबर से शुरू करने पर चर्चा कर रहे हैं। यह कहा जा रहा है कि संसदीय कार्य मंत्रालय इस मुद्दे पर कुछ विपक्षी दलों से भी जल्द वार्ता करने वाला है। हालांकि यह माना जा रहा है कि विपक्षी दलों की राय जो भी हो. लेकिन सरकार चाहती है कि संसद का अगला सत्र महाराष्ट्र और झारखंड चुनाव नतीजों के बाद ही आयोजित किया जाए। इन दोनों राज्यों के चुनावी नतीजे 23 नवंबर को आएंगे। सूत्रों के मुताबिक सरकार का एक वर्ग चाहता है कि संसद का अगला सत्र 25 नवंबर से शुरू किया जाए. जिससे चुनावी कार्यक्रम की वजह से किसी नेता को संसद की कार्यवाही से दूर न होना पड़े। यह कहा जा रहा है कि संसद का यह सत्र 25 नवंबर से शुरू होकर 12—18 दिसंबर तक चल सकता है। इस सत्र पर महाराष्ट्र और झारखंड चुनाव के साथ ही वायनाड उपचुनाव का भी बड़ा असर होगा। जो भी दल महाराष्ट्र और झारखंड में चुनाव जीत दर्ज करेगा। उसकी ओर से संसद में हंगामा किया जाना तय माना जा रहा है। इसी तरह से वायनाड से प्रियंका गांधी के उपचुनाव जीतने पर भी लोकसभा में वातावरण और माहौल बदलने की उम्मीद है। यह कहा जा रहा है कि उनकी जीत के बाद लोकसभा में कांग्रेस की व्यूह रचना उनके हाथ में आ सकती है, जिससे कांग्रेस सरकार के खिलाफ बेहतर समन्वित तरीके से हमला कर पाए।

नए मंदिर में अयोध्या मनाएगी रामलला की पहली दीपावली

बिस्वजीत बनर्जी/कमलेश श्रीवास्तव। अयोध्या

अयोध्या शहर में त्रेता युग की दिव्य महिमा का स्मरण करते हुए ऐतिहासिक दिवाली मनाने की तैयारी चल रही है। यह दिवाली 500 साल बाद भव्य मंदिर में बालक राम (रामलला) के औपचारिक रूप से स्थापित होने के बाद पहली दिवाली है। हिंदू पौराणिक कथाओं में बहुत महत्व रखने वाले इस शहर में उस दिन की खुशी झलक रही है, जब भगवान राम 14 साल के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे। आज, उत्सव बालक राम के इर्द-गिर्द केंद्रित है और अगले तीन दिनों तक अयोध्या खुशी से जगमगाएगी, इस अनूठे उत्सव को देखने के लिए पूरे भारत से श्रद्धालु आएंगे। अयोध्या में भव्य दिवाली उत्सव की शुरुआत विश्व रिकॉर्ड बनाने के प्रयास के साथ हुई, जिसमें छोटी दिवाली पर 25 लाख मिट्टी के दीयों से राम की पैड़ी को रोशन किया गया। इस शानदार प्रदर्शन के साथ लेजर शो, प्रोजेक्शन मैपिंग और भव्य आतिशबाजी का प्रदर्शन होगा, जो शहर के नज़ारे को एक शानदार नज़ारे में बदल देगा।

दीपोत्सव उत्सव में निवासियों और तीर्थयात्रियों की सक्रिय भागीदारी से और भी रौनक बढ़ जाती है। अयोध्या की सड़कें और ऐतिहासिक स्थल जीवंत सजावट से सजे हुए हैं। राम कथा पार्क से लेकर साकेत कॉलेज, सरयू घाट और राम की पैड़ी तक का इलाका देखने लायक है और राम मंदिर को 50 क्विंटल ताजे फूलों से सजाया जा रहा है। मंदिर के चारों प्रवेश द्वारों पर भव्य तोरण द्वार बनाए गए हैं, जो उत्सव की आभा को और बढ़ा रहे हैं।

इस उत्सव का एक खास आकर्षण राम कथा पार्क में स्थापित राम दरबार है, जहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रतीकात्मक रूप से भगवान राम का राज्याभिषेक करने के लिए गुरु वशिष्ठ की भूमिका निभाएंगे। शाम होते ही, शहर की भव्य सजावट की प्रशंसा करने के लिए भक्तों और आगंतुकों की भीड़ उमड़ रही है और वे हर शानदार नज़ारे को अपने कैमरों में कैद कर रहे हैं।

इस पारंपरिक उत्सव में आधुनिकता का तड़का लगाते हुए राम कथा पार्क में विशेष रूप से बनाए गए मंच पर हाई-टेक प्रदर्शनी लगाई जा रही है। गुप्तारघाट, बड़ी देवकाली, नयाघाट और भरतकुंड जैसे स्थानों पर नौ अन्य मंच बनाए गए हैं। देश भर से करीब 900 लोक कलाकार इन मंचों पर पारंपरिक संगीत और नृत्य प्रस्तुत करेंगे, जिससे अयोध्या में भारत की सांस्कृतिक विविधता देखने को मिलेगी। इसके अलावा श्रीलंका, नेपाल, त्रिनिदाद और (शेष पृष्ठ 9)

विमानन कंपनियों को 60 से अधिक उड़ानों में बम रखे होने की धमकी मिली

नई दिल्ली(भाषा)। भारतीय विमानन कंपनियों की 60 से अधिक उड़ानों में सोमवार को बम रखे होने की धमकी मिली। सूत्रों ने यह जानकारी दी। पंद्रह दिन में विमानन कंपनियों द्वारा संचालित 410 से अधिक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में बम रखे होने की झूठी धमकियां मिली हैं। इनमें से ज्यादातर धमकियां सोशल मीडिया के जरिए दी गईं। मामले से जुड़े सूत्रों ने बताया कि एअर इंडिया और इंडिगो की करीब 21-21 उड़ानों और विस्तारा की करीब 20 उड़ानों को सोमवार को धमकियां मिलीं। एअर इंडिया के एक प्रवक्ता ने कहा कि सोशल मीडिया के जरिए सोमवार को एअरलाइन की कई उड़ानों में बम रखे होने की धमकी मिली। प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करते हुए संबंधित अधिकारियों को तुरंत सतर्क कर दिया गया और नियामक अधिकारियों के मार्गदर्शन के अनुसार सभी सुरक्षा प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन किया गया। इस बीच, विमानन कंपनियों को बम रखे होने की झूठी धमकियां मिलने की पृष्ठभूमि में सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंचों से दायित्वों का पालन करने और सूचना प्रौद्योगिकी नियमों के तहत निर्धारित सख्त समयसीमा के भीतर गलत सूचना तक पहुंच को तुरंत अवरुद्ध करने को कहा है।

नोएडा में चार मंजिला भवनों में लिफ्ट लगाने की पालिसी बदली

- इन भवनों में सभी फ्लोर से एनओसी लेने के बाद लगाई जाएगी लिफ्ट

रिंकू यादव। नोएडा

शहर चार मंजिला भवनों में लिफ्ट लगवाने की पॉलिसी में बदलाव किया गया है। इसके तहत अब जिस ब्लाक और टावर के लिफ्ट लगाने के लिए अनुरोध किया जाएगा। उस टावर और ब्लाक के सभी तलों के आवंटियों द्वारा अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा। इसके बाद ही प्राधिकरण की ओर से लिफ्ट लगाने की अनुमति दी जाएगी। इससे पहले प्रथम तल और उसके ऊपरी तलों के 50 प्रतिशत से अधिक फ्लैट आवंटियों द्वारा अनापत्ति का शपथ पत्र लिया जाता था। इस संशोधन को प्राधिकरण ने अपनी बोर्ड में पास किया।

नोएडा के कई सेक्टरों में प्राधिकरण और निजी बिल्डरों द्वारा चार मंजिला के भवनों का निर्माण किया गया है। नोएडा की भवन नियमावली के तहत ये फ्लैट बहुमंजिला की श्रेणी में नहीं आते। ऐसे में इन भवनों में लिफ्ट लगाने के लिए प्राधिकरण बाध्य नहीं है। हालांकि यहां बुजुर्ग की संख्या को बढ़ते देख लिफ्ट लगवाने के लिए सेक्टर वासियों की ओर से लगातार डिमांड की जाती रही। ऐसे में प्राधिकरण ने 186 बोर्ड बैठक में इससे संबंधित एक प्रस्ताव रखकर उसे पास किया। जिसके तहत जिस टावर में लिफ्ट लगानी है उसके प्रथम तल और ऊपरी तल से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा। संबंधित सोसाइटी और आरडब्ल्यूए से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा। निर्माण का खर्चा आवेदन कर्ता को उठाना पड़ेगा। (शेष पृष्ठ 9)

स्थानीय बाजारों में बढ़ती भीड़ से सड़कों पर चलना हुआ दूभर

कमला नगर, गोविंदपुरी, मदर डेयरी, पुस्ता रोड पर लगने वाली पैठ बढ़ा रहीं समस्या

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी के विभिन्न इलाकों में स्थानीय बाजारों में भारी भीड़ के कारण दिल्ली की सड़कों पर समस्याएँ पैदा हो रही हैं, जिससे यात्रियों को इन सड़कों से होकर गुजरना मुश्किल हो रहा है। हालाँकि, त्योहारों से पहले की स्थितियाँ इसे और भी बदतर बना रही हैं, क्योंकि सड़कों पर वाहनों का चलना दु:स्वप्न बन गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के पास स्थित कमला नगर के बाजारों में, सड़कें यात्रियों के लिए एक डरावनी कहानी हैं, क्योंकि यहाँ बहुत से लोग कपड़े, सजावटी सामान, फूल, दीये और दिवाली के लिए सामान खरीदने आते हैं। सड़क के दोनों ओर लंबी दूरी तक अपनी दुकानें लगाए हुए फेरीवाले और विक्रेता तथा खरीदारी के लिए लोगों द्वारा अव्यवस्था फैलाए जाने के कारण वाहनों का निकलना बेहद मुश्किल हो जाता है। यह बाजार आवासीय कॉलोनियों के पास भी स्थित है, जहाँ अव्यवस्थित पार्किंग भी एक समस्या है।

एक दुकानदार ने कहा, 'अधिकारियों को आवासीय कॉलोनियों में पार्किंग की समस्या, अतिक्रमण और कमला नगर जैसे बाजारों में यातायात की भीड़भाड़ को हल करने की आवश्यकता है।' गोविंदपुरी इलाके में भी एक ऐसा ही बाजार है, जहां बुधवार को लगने वाले साप्ताहिक बाजार में रोजमर्रा की चीजें सस्ती कीमतों पर बिकती हैं, जिससे यातायात पूरी तरह से बाधित हो जाता है, जिससे न केवल वाहनों बल्कि पैदल चलने वालों के लिए भी चलना मुश्किल हो जाता है। इस समस्या को और भी गंभीर बना देता है, यहां सड़क के किनारे अपनी दुकानें लगाने वाले विक्रेताओं द्वारा अतिक्रमण और उपभोक्ताओं द्वारा सड़क पर सीमित जगह में यातायात के मुक्त प्रवाह के लिए जगह बनाई जाती है, जो गोविंदपुरी मेट्रो स्टेशन और आवासीय अपार्टमेंट के करीब स्थित है।

एक ऑफिस जाने वाले ने कहा, मैं गोविंदपुरी एक्सटेंशन में रहता हूं और हर बुधवार को अतिक्रमण और सड़क के किनारे पार्किंग के कारण पहले से ही संकरी सड़कें और भी बदतर हो जाती हैं। वहां विक्रेता अपनी दुकानें लगाए हुए हैं और ग्राहक सड़कों पर खड़े रहते हैं, जिससे चलना बहुत मुश्किल हो जाता है। एक अन्य यात्री ने कहा कि ई-रिक्शा की बढ़ती संख्या भी परेशानी को बढ़ाती है। उन्होंने कहा, इतने छोटे से हिस्से में वे इतने अधिक होते हैं कि वे पूरे रास्ते को जाम कर देते हैं, जबकि पैदल चलने वालों के लिए भी मुश्किल से ही जगह बचती है। उन्होंने कहा कि जब वे रात 9 बजे के आसपास ऑफिस से वापस आते हैं, तो इलाके से गुजरना एक दु:स्वप्न बन जाता है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, शहर में 11 ऐसे पॉइंट की पहचान की गई है, जहां ये बाजार अव्यवस्था पैदा करते हैं और वाहन फंस जाते हैं या एक जगह से दूसरी जगह चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वी रेंज में मदर डेयरी, रोड नंबर 57, पुस्ता रोड और जीटीबी अस्पताल रेड लाइट के इलाकों में ये समस्याएं प्रमुख हैं। एक ट्रैफिक पुलिसकर्मी ने कहा, मदर डेयरी में साप्ताहिक बाजार लगता है, जबकि शाहदरा में रोड (शेष पृष्ठ 9)

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 29 अक्टूबर, 2024

तीनों प्राधिकरणों की एक जैसी औद्योगिक भूखंड नीति

सार्क एंड एसोशिएट को मिली थी जिम्मेदारी, एसओपी तैयार करने के लिए समिति गठित

● 58 सेक्टरों को मिलेगा गंगाजल, बायर्स की होगी रजिस्ट्री, बोर्ड ने लिया निर्णय

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण व यमुना प्राधिकरण में औद्योगिक प्लाट के आवंटन की पॉलिसी एक समान होगी। तीनों प्राधिकरण की तरफ से सार्क एंड एसोशिएट को इस कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

इससे पहले एसओपी (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजर) तैयार करने के लिए तीनों प्राधिकरण की एक समिति बनाई गई। जिसकी बैठक में तीनों प्राधिकरण के वित्त नियंत्रक एवं महाप्रबंधक की बैठक हुई, जिसके आधार पर आवंटन की प्रकिया, लीज रेंट व अन्य प्रक्रियाओं के संबंध में एकरूपता लाने पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण बोर्ड ने मंजूरी दे दी है। इसका प्रारूप अभी सामने नहीं आया है। पूर्व में हुई बैठक में बताया गया था कि 8000 वर्गमीटर तक औद्योगिक भूखंड का आवंटन ई ऑक्शन और उससे ज्यादा के भूखंड का आवंटन साक्षात्कार के जरिए किया जाएगा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण बोर्ड ने सीनियर सिटीजन सोसाइटी में घर खरीदने वाले मूल आवंटी के अलावा सबस्क्रिप्ट मेंबर्स को भी ब?ी राहत दे दी है। अब ऐसे खरीदारों के नाम भी फ्लैट की रजिस्ट्री हो सकेगी। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण बोर्ड ने इस आशय के प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी है।

इस सोसाइटी में कुल 845 फ्लैट हैं, जिनमें से 190 फ्लैटों की रजिस्ट्री हो चुकी है। प्राधिकरण की तरफ से सोसाइटी परिसर में ही शिविर लगाकर रजिस्ट्री की जा रही है। बता दें कि सीनियर सिटीजन सोसाइटी के नाम ग्रेटर नोएडा के पी-4, बिल्डर्स एरिया में 1997 में भूखंड दिया गया। विवादों के चलते 27 सालों तक इसकी कार्यपूर्ति न हो पाने के कारण इसके सदस्यों के पक्ष में लीज डीड नहीं हो पाई। इस प्रकरण मुख्यमंत्री के संज्ञान में आने के बाद और प्राधिकरण के चेयरमैन मनोज कुमार सिंह व सीईओ एनजी रवि कुमार के प्रयास से विगत मार्च 2024 से इसकी रजिस्ट्री शुरू हो सकी। जल विभाग की तरफ से ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण बोर्ड को गंगाजल की स्थिति से भी अवगत कराया गया, जिसके अनुसार 85 क्यूसेक गंगाजल परियोजना के अंतर्गत 58 आवासीय सेक्टरों में से अब तक 50 सेक्टरों में गंगाजल की आपूर्ति की जा रही है। इस साल के अंत तक सभी 58 सेक्टरों में गंगाजल की आपूर्ति शुरू कर दी जाएगी।

वहीं, ग्रेटर नोएडा वेस्ट में भी गंगाजल पहुंचाने की योजना पर काम शुरू हो गया है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में तीन रिजर्व वायर और ग्रेटर नोएडा ईस्ट में एक रिजर्व वायर बनाने के लिए टेंडर जारी कर दिया गया है। टेंडर स्वीकृत होने के बाद रिजर्व वायर बनाने का काम चल रहा है। इस साल के अंत तक ये रिजर्व वायर बन जाने की उम्मीद है।

प्रतीकात्मक फोटो।

प्रदूषण पर एक्शन : जेवर में मिक्सर प्लांट हुआ सील, तीन पर केस दर्ज

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जेवर में स्थित नवादा गांव में चल रहे एक मिक्सर प्लांट को पर्यावरण विभाग द्वारा सील किया गया है। बताया जाता है कि रात के समय मिक्सर प्लांट चलाकर प्रदूषण फैलाया जा रहा था। लोगों की शिकायत के बाद विभाग द्वारा यह कार्रवाई की गई है।

करीब डेढ़ साल से नवादा गांव में मिक्सर प्लांट लगा हुआ है। क्षेत्र में बनाई जा रही सड़कों के लिए तारकोल आदि को बजरी में मिलाया जाता था। मौसम बदलने के कारण लगातार प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। इसी को देखते हुए ग्रेप का नियम भी लागू है। जिसके बाद पर्यावरण विभाग प्रदूषण फैलाने वाले लोगों पर लगातार कार्रवाई कर रहा है। इसके बावजूद भी अधिकारियों को चकमा देकर लोग रात के समय प्रदूषण फैलाने से नहीं रुक रहे हैं। पर्यावरण अधिकारी देव गुप्ता ने बताया कि नवादा गांव में लगे मिक्सर प्लांट को रात के समय चल कर रहे क्षेत्र की हवा में प्रदूषित किया जा रहा था। मिक्सर के कारण धूल और चिमनी से अधिक धुआं निकलता था जिससे आसपास के लोग काफी परेशान हो रहे थे। लोगों की शिकायत के बाद टीम सोमवार को मौके पर पहुंची और प्लांट को सील किया गया है। उन्होंने किसानों से प्रदूषण को देखते हुए पराली नहीं जलाने की अपील भी की है। जेवर के दो गांवों में पराली जलाने पर तीन किसानों के खिलाफ रविवार रात को केस दर्ज हुआ है।

पटाखों की बिक्री के खिलाफ पुलिस का अभियान

नोएडा। नोएडा में प्रतिबंध के बावजूद अवैध रूप से पटाखों की बिक्री करने वाले लोगों के खिलाफ पुलिस ने अभियान छेड़ा हुआ है। ऐसे में नोएडा पुलिस ने अलग-अलग स्थानों से तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से बड़ी मात्रा में पटाखे बरामद हुए हैं। थाना बादलपुर प्रभारी ने बताया कि, पुलिस को सूचना मिली कि बिसरख रोड की कृष्णा कॉलोनी में जूते चप्पल व परचून की दुकान चलाने वाले विजेंद्र सिंह व अमित कुमार अपनी अपनी दुकानों पर अवैध रूप से पटाखे बेच रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने दोनों की दुकानों पर छापा मारा। इस दौरान यहां से बड़ी मात्रा में पटाखे बरामद हुए। पूछताछ में दोनों ने बताया कि वह दीपावली पर मुनाफा कमाने के लिए अपनी-अपनी दुकानों पर चोरी छुपे अवैध रूप से पटाखे की बिक्री कर रहे थे। दोनों दुकानदारों को गिरफ्तार कर पटाखों को सीज कर दिये गये।

नर्सिंग छात्रा से दुष्कर्म और ब्लैकमेल करने का आरोप

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

दनकौर कोतवाली क्षेत्र की एक यूनिवर्सिटी में नर्सिंग की पढ़ाई कर रही छात्रा ने एक युवक पर दुष्कर्म और ब्लैकमेल का आरोप लगाया है।

पीड़ित छात्रा ने सोमवार को कोतवाली पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई, जिसमें युवक पर पिछले 6 महीनों से दुष्कर्म और धमकी देने का आरोप है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। छात्रा मूल रूप से सुल्तानपुर की रहने वाली है और दनकौर की एक यूनिवर्सिटी में नर्सिंग की पढ़ाई कर रही है। साथ ही, वह कस्बे के एक निजी अस्पताल में प्रैक्टिस भी करती है, जहां आरोपी युवक से उसकी मुलाकात हुई। पीड़िता का आरोप है कि युवक ने उसे अपने कमरे पर बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बना ली। इसके बाद से वीडियो का डर दिखाकर वह लगातार उसे ब्लैकमेल कर रहा था और उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बना रहा था। पीड़िता ने बताया कि वह काफी समय तक इस भय और धमकी में चुप रही, लेकिन उसके साथियों ने उसे पुलिस में शिकायत करने का सुझाव दिया।

डीएम ने राजनीतिक दलों के साथ की बैठक, वेयर हाउस का किया निरीक्षण

गाजियाबाद। गाजियाबाद विस के उपचुनाव के लिए 13 नवंबर को मतदान होगी। मतदान से पूर्व मतदाता सूची का प्रकाशन करने के लिए डीएम इन्द्रविक्रम सिंह ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों संग बैठक की।

डीएम ने राजनीतिक दलों से इस सम्बंध में चर्चा की। बैठक के उपरांत डीएम ने प्रतिनिधियों के साथ जिला मुख्यालय परिसर में बने वेयर हाउस का मासिक निरीक्षण भी किया। सीसीटीवी कैमरे, ईवीएम का रखरखाव आदि का निरीक्षण किया। इस दौरान एसडीएम सदर अरूण दीक्षित, एसीएम चन्द्रेश कुमार सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि थे।

लूट का माल बरामद कराने के बहाने बदमाश ने की पुलिस पर फायरिंग

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद के थाना इंदिरापुरम क्षेत्र में बदमाश और पुलिस के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में बदमाश के गोली लगी है। पुलिस के मुताबिक, त्योहार के मध्य नजर पुलिस चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान इंदिरापुरम क्षेत्र में 5/6 की पुलिया पर एक बदमाश को बाइक समेत गिरफ्तार किया गया।

एसीपी इंदिरापुरम स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि त्यौहार के मध्य नजर थाना इंदिरापुरम पुलिस चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान मोबाइल और चेन लूटने वाले बदमाश को पुलिस ने 5/6 की पुलिया से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार करने के बाद बदमाश ने बताया कि उसने लूट गए चेन और मोबाइल कनावनी में छुपा के रखे हैं। पुलिस टीम जब उसे वहां लेकर गई तो वहां पहले से रखे लोडेड तमंचे से बदमाश ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। पुलिस की जवाबी फायरिंग में बदमाश के पैर में गोली लगी गई। पुलिस के मुताबिक, बदमाश का नाम शान है। जो खोड़ा का रहने वाला है। शान के पास से बरामद बाइक दिल्ली से चोरी है। उसके कब्जे से लूटे गए मोबाइल और चेन से प्राप्त 15 हजार के साथ तमंचा और कारतूस भी बरामद हुआ है।

पुलिस मुठभेड़ में घायल बदमाश और कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम के सदस्य।

गैंगस्टर एक्ट में वांछित दो इनामी बदमाश गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

थाना सेक्टर-24 पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट मे वांछित दो इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनकी गिरफ्तारी पर 25-25 हजार रुपए का इनाम घोषित था।

पुलिस उपयुक्त (जोन प्रथम) राम बदन सिंह ने बताया कि थाना सेक्टर-24 पुलिस ने नोएडा स्टेडियम के पास से विनोद पुत्र दुषेराम तथा कपिल पुत्र गया प्रसाद को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि दोनों के खिलाफ थाना सेक्टर-24 में गैंगस्टर एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज था। दोनों फरार चल रहे थे। इनकी गिरफ्तारी पर 25-25 हजार रुपए का इनाम घोषित था। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान पुलिस को पता चला है कि आरोपी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित मोबाइल फोन के टावरों से कीमती उपकरण आरआरयू और अन्य सहायक उपकरण को चोरी करते हैं। ये लोग पूर्व में भी थाना सेक्टर-24 पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जा चुके हैं।

महिला समेत 2 लोगों ने की आत्महत्या

नोएडा। दनकौर कोतवाली क्षेत्र में अलग-अलग जगह पर एक महिला समेत दो लोगों ने आत्महत्या कर ली।

दनकौर कोतवाली क्षेत्र के मूंजखेड़ा गांव में एक महिला ने घरेलू विवाद में जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली। सूचना के आधार पर पुलिस भी अस्पताल पहुंच गई। उसका पति संजय के साथ रविवार सुबह विवाद के बाद जहरीला पदार्थ खा लिया था। तबीयत खराब होने पर परिजनों ने उसको ग्रेटर नोएडा के अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। बताया जाता है कि मृतक की करीब 10 वर्ष पहले शादी हुई थी। पुलिस का कहना है कि मृतक महिला के मायके वालों की तरफ से अभी तक कोई शिकायत नहीं आई है।

वहीं दनकौर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर रविवार सुबह को एक अज्ञात व्यक्ति ने एक्सप्रेस ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दे दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। जीआरपी पुलिस का कहना है कि मृतक के हाथ पर ओम गुदा हुआ है। अभी तक शव की पहचान नहीं हुई है।

फर्जी वारंट देख बैंककर्मी के छूटे पसीने, रजिस्टर्ड डाक से आया था कागज

नोएडा। बैंक में कार्यरत एक व्यक्ति के अपने खिलाफ जारी किए गए एनबीडब्ल्यू वारंट को देखकर होश उड़ गए। जांच करने पर पता चला कि किसी व्यक्ति ने न्यायालय के नाम से फर्जी गिरफ्तारी वारंट बनाकर उसके कार्यस्थल पर रजिस्टर्ड डाक से भेजा है।

पीड़ित के रिश्तेदार ने थाना सूरजपुर में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। नेथला गांव जनपद बुलंदशहर निवासी ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि, उनके बहनोई एक बैंक में कार्यरत है। उनके बैंक के सर्किल ऑफिस में 30 मई 2023 को एसीजेएम 2 गौतमबुद्धनगर के हस्ताक्षर व मोहर लगा हुआ एक गिरफ्तारी वारंट रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त हुआ।

यमुना एक्सप्रेसवे पर जारी है बाइकर्स गैंग का कहर

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जेवर क्षेत्र में स्थित यमुना एक्सप्रेसवे पर बाइकर्स गैंग का एक बार फिर कहर देखने को मिला है। काफी तेज गति में यमुना एक्सप्रेसवे पर रेसिंग बाइक सवार दौड़ते हुए नजर आए हैं। जिनका विडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। जिसको लेकर लोगों ने पुलिस से ऐसे लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग भी की है।

यमुना एक्सप्रेसवे के जेवर कट के पास बाइकर्स गैंग के सदस्य रविवार को एकत्रित हुए। उसके बाद तेज रफ्तार में बाइक पर सवार होकर ग्रेटर नोएडा के जीरो पॉइंट की तरफ आए। जिनकी वजह से यमुना एक्सप्रेसवे पर चलने वाले अन्य वाहन संचालकों को जान काफी खतरा रहा। तेज गति होने की वजह से अन्य बाइक सवार और वाहन संचालक अपने वाहनों को एक साइड में खड़े होकर उनके निकालने का इंतजार भी करते। बताया जाता है कि यह बाइकर्स दिल्ली से सुबह आगरा की तरफ गए थे। उसके बाद वापस आते दौरान यह कैमरे में कैद हुए है। जिसमें यमुना एक्सप्रेसवे पर जेवर से ग्रेटर नोएडा की तरफ आने वाली लेन में तेज रफ्तार में बाइकर्स गैंग के सदस्य बाइक दौड़ा रहे हैं। यह पहली बार नहीं है जब बाइकर्स गैंग के लोग दिल्ली से ग्रेटर नोएडा आकर बाइक दौड़ा रहे हो। इससे पहले भी कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं। जून 2021 में यमुना एक्सप्रेस वे पर बाइकर्स गैंग के लोग रेसिंग कर रहे थे। हादसे में रेसिंग बाइक हायाबुसा व बीएमडब्ल्यू बाइक के टकराने के बाद दोनों बाइक पर सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गए थे। आनन-फानन में दोनों को नजदीक के एक अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। जहां डॉक्टरों ने राहुल तेवतिया नाम के युवक को मृत घोषित कर दिया था।

पत्नी और बच्चों को फंसाने के लिए युवक ने रची साजिश, पुलिस भी रह गई हैरान

● विवाद के चलते खुद को मार ली थी गोली

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा के थाना रबूपुरा क्षेत्र के रामपुर बांगर गांव में एक व्यक्ति को गोली मारने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस की जांच में पता चला है कि उक्त व्यक्ति ने खुद को गोली मारकर पत्नी व बच्चों को फंसाने की साजिश रची थी। घायल व्यक्ति का अपनी पत्नी व बच्चों से विवाद चल रहा है।

थाना प्रभारी ने बताया कि गांव रामपुर बांगर निवासी ने रविवार को रिपोर्ट दर्ज कराई की गांव के मंदिर पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसके बेटे नेमपाल को जान से मारने की नीयत से गोली मार दी।

नेमपाल को गंभीर हालत में यथार्थ अस्पताल में भर्ती कराया गया उसके पेट में गोली लगी थी। थाना प्रभारी ने बताया कि जब इस मामले की गहनता से जांच की गई तो मामला कुछ और निकला। नेमपाल के इंजरी वाली जगह पर ब्लैकेनिंग पाई गई इसके अलावा उसके हाथों में गन पाउडर भी लगा हुआ था। पुलिस ने जब अपने स्तर पर जांच पड़ताल की तो पता चला कि नेमपाल का अपनी पत्नी व बच्चों से विवाद चल रहा है जिस कारण उसकी पत्नी व बच्चे उससे अलग रहते हैं। पत्नी व बच्चों को फंसाने के लिए उसने खुद को ही गोली मार ली थी। तलाशी में उसके कमरे से तमंचा व कारतूस भी बरामद हुआ है।

वेतन को लेकर उत्तराखंड स्कूल के बाहर हंगामा

नोएडा। नोएडा के सेक्टर-56 स्थित उत्तराखंड पब्लिक स्कूल के बाहर टीचर्स का हंगामा चल रहा है। आरोप है कि स्कूल मैनेजमेंट पिछले पांच साल से सैलरी का 20 प्रतिशत पैसा काट रहा है। ये पैसा प्राधिकरण के नाम पर वसूल रही थी। प्रबंधन का कहना था कि स्कूल को बचाना है तो ये पैसा देना होगा। टीचर ने प्राधिकरण को मेल पर ये जानकारी दी। प्राधिकरण के जानकारी मिलने पर टीम ने स्कूल प्रबंधन से बातचीत की तो पूरे मामले का खुलासा हुआ।

प्राधिकरण के पास न तो कोई रकम ट्रांसफर की गई और न ही प्राधिकरण की ऐसी कोई डिमांड है। जानकारी मिलते ही टीचर सोमवार को स्कूल पहुंचे और गेट पर जमकर हंगामा किया।

8 दिन बाद भी सुराग नहीं लापता व्यक्ति का

गाजियाबाद। कैला भट्टा निवासी सिराज 21 अक्टूबर कचहरी से लापता हो गया। लापता सिराज के भाई अलीमुद्दीन कविनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए तहरीर दी थी। कविनगर थाना पुलिस ने गुमशुदी दर्ज करके सिराज की बरामदगी के प्रयास शुरू कर दिये थे। आठ दिन बाद भी सिराज का कोई पता नहीं है।

भारत में स्ट्रोक मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण : डॉ. चिराग

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

दुनिया के साथ ही भारत में भी स्ट्रोक एक बड़े स्वास्थ्य संकट का रूप लेता जा रहा है। भारत में भी स्ट्रोक मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण हैं यह कहना है ग्रेटर नोएडा स्थित फोर्टिस अस्पताल के न्यूरोलॉजी विभाग के डॉ. चिराग गुप्ता का। डॉ. चिराग के अनुसार अगर इतने समय के अंदर मरीज को सही इलाज मिल गया तो अस्सी फीसदी मामलों में बचाव संभव है।

डॉ. चिराग आगे कहते हैं कि स्ट्रोक का एक बड़ा कारण हमारी लाइफ स्टाइल भी है। हमारी खान-पान की आदतों में बदलाव, व्यायाम न करना, नींद पूरी ना होने के साथ ही बढ़ता प्रदूषण भी एक कारक के रूप में उभर रहा है। स्ट्रोक खून के बहाव के रुक जाने की वजह से होता है। युवा या वयस्क किसी को भी स्ट्रोक हो सकता है। उच्च रक्तचाप, अधिक कोलेस्ट्रॉल (हाइपरलिपिडेमिया), और टाइप-2 डायबिटीज जैसी समस्याओं से ग्रस्त लोगों में स्ट्रोक के खतरे की आशंका ज्यादा होती है। शराब पीने और धूम्रपान करने वालों में भी स्ट्रोक का ख़तरा अधिक होता है। स्ट्रोक के अन्य कारणों में आर्टरीज का भरा होना, दिल की ध?कनों का अनियमित होना और स्ट्रोक का पारिवारिक इतिहास भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

महिला सुरक्षा : नोएडा को मिले दो और पिंक बूथ

● मिशन शक्ति 5.0 के तहत हो रहा काम, पूरे शहर में 11 पिंक बूथ का हो रहा संचालन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में महिला सुरक्षा को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने भंगेल में नए पिंक बूथ और नवनिर्मित पुलिस चौकी का उद्घाटन किया। प्रदेश भर में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वालंबन के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति के विशेष अभियान 5.0 के तहत सोमवार को इस कड़ी दो और पिंक बूथ शुरू किया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल पर महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा व जागरूकता के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति-5.0 कार्यक्रम के अंतर्गत आज पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने महिलाओं एवं बालिकाओं को त्वरित पुलिस सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से थाना फेस-2 क्षेत्र के भंगेल में पुलिस पिंक बूथ (बच्चों द्वारा) एवं नव निर्मित पुलिस चौकी का स्वयं उद्घाटन किया। यह पिंक बूथ ऐसे स्थानों पर बनाये गये है जहां पर महिलाओं की आवाजाही अधिक होती है। उद्घाटन कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए पुलिस आयुक्त ने कहा कि इस पिंक बूथ के माध्यम से महिलाओं की सुरक्षा को और सुदृढ़ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यहां पर महिलाएं अपनी समस्या निसंकोच आकर बता सकती हैं। महिला पिंक बूथ की सहायता से महिलाओं की हर तरह की मदद की जाएगी। उन्होंने कहा कि पिंक बूथ के माध्यम से मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला पुलिसकर्मियों द्वारा प्रतिदिन सभी थाना क्षेत्रों में भ्रमणशील रहते हुए महिलाओं को आत्मसुरक्षा व साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूक किया जाता है।

स्वावलंबन के संबंध में शासन के विभिन्न कार्यक्रम जैसे मिशन शक्ति फेस-5.0, शुभ मंगल योजना, साइबर क्राइम एवं साइबर सुरक्षा की जानकारी प्रदान की जाती है।

भंगेल में पिंक बूथ का बच्चियों से उद् घाटन करवातीं पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह।

PUBLIC NOTICE

This is informed to all General Public that my client **SMT. KAMLA RANI W/O LATE SHRI GIRDHARI LAL R/O H.NO. 3/92, 1ST FLOOR, BACK SIDE PORTION, SUBHASH NAGAR, DELHI,** have disowned & debarred her son namely **SHANKIT SON OF LATE SHRI GIRDHARI LAL,** from all her movable and immovable properties due to his misconduct, disobedient and disrespectful behavior towards my client. My client have also severed all his relations from him. If any body deals with him, he/she will do so at his/her own risk, costs and consequences. My clients shall not be held responsible for his acts in any manner whatsoever.

BIR SINGH BANSAL (ADVOCATE), Ch. No. 5, Near Gate No.2, Tis Hazari Courts Delhi-110054, Mob. 9312593903.

PUBLIC NOTICE

To be known to all that I, **DINESH CHANDRA SIDANA S/O SHRI A.D. SIDANA** Allottee/ Purchaser/ Mutatee of **FLAT NO.24 PKT-D-10 DDA MIG 3RD FLOOR SEC-7 DDA MIG ROHINI DELHI-110085** has applied for the conversation of aforesaid property from leasehold to free hold in DDA, the original **DDA POSSESSION LETTER, ELECTRIC AND WATER NOC ETC.** has been lost. An Online FIR to this effect has been lodged on 28.10.2024 vide LR No. 2250887/2024 Any person(s) claiming any right, interest having any objection or found in possession of original documents may write/contact with above named person at above address within 15 days from the date of Publication of this notice and can personally contact Deputy Director **LAB (HOUSING)** or Director **LAB (HOUSING)**, D-Block, 3RD Floor, Vikas Sadan INA, New Delhi.

PUBLIC NOTICE

General public is hereby informed that my clients Sh. Deepak Kumar S/o Sh Om Parkash and his wife smt. Santosh Kumari, both R/o D-311 First Floor, Vijayee Veer Awas, Sector 18A, Dwarka, New Delhi-110078 have served all their relations with their son Sh. Yash Gandas due to their misconduct, hostile behavior and disobedience. Both of my above-named clients have also disowned and debarred his said son from all their movable and immovable properties. Anybody dealing with Sh. Yash Gandas will do so at his/her/their own risk and responsibilities and my clients will not be responsible for any act, deed or dealing done by Sh. Yash Gandas.

DHANKAR LAW ATTORNEYS, Ch: 845, Lawyers Chamber, Dwarka Court Complex, New Delhi-110075

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that My clients Sh. Lila Dhar Ojha S/o Sh. Shiv Dyal Ojha and his wife Saroj R/o H.No. A-9, Main Road Guru Nanak Nagar, Mustafabad, Delhi 110094 have disowned & have debarred their Son Sanju and his wife Madhuri Sharma from their moveable and immovable property due to their misbehavior and misconduct. My clients shall not be responsible for his any acts in future.

Hariom Sharma (Advocate) Ch.No. 409 Western Wing, Tis Hazari Court, Delhi-110054

PUBLIC NOTICE

Re: Residential Plot No. 107/377, total area measuring 50 sq.yds. i.e. 41.80 sq.mtr., Situated at Jawahar Park, Village Pasonda, Pargana Loni, Tehsil & Distt. Ghaziabad (UP). *(Hereinafter referred to as the "Said Property").*

Be it known to all that our clients, Mohd. Javed & Mrs. Alsaba (hereinafter called the "Purchaser") intend to purchase the said property from Mr. Shahbuddin (hereinafter called the "Seller"). In this connection, the seller has informed the purchaser that he is the sole and absolute owner of the said property vide Sale Deed registered as Document No. 11026, Book No. 1, Vol No. 16551, pages 25-50 on 27.12.2021 and executed by Mr. Amit Kumar in his favour. The seller has also informed that the said property is not mortgaged anywhere and there is no charge or dispute or any litigation pending regarding the said property. The seller has further informed the purchaser that the following original document namely GPA, registered as Doc No. 28846 dated 15.05.1998, ATS and Will executed by Mr. Madan Singh (Attorney of Mr. Rajpal Singh), in favour of Mrs. Anita in respect of the said property is not traceable and seem to have been lost. This document is hereinafter called the "said document" and forms a part of chain documents. An FIR regarding loss of the said document has been lodged by the seller with Delhi Police Crime Branch vide LR No.2248516 /2024 dated 27.10.2024.

If the aforesaid original said document is found or has been found by any person, the same may be returned and delivered to the undersigned at the address mentioned herein below. Further, if any person, body, institution is having any claim and/or objection in respect of the said property, he/she/they may raise his/her/ their objection/s, in writing, with documentary evidence, by Registered AD Post, to the undersigned at the address mentioned herein below within 07 days of publication of this notice. Otherwise, after expiry of 07 days from the date of publication of this notice, no objection shall be acceptable.

General Public may also take note that any deal or transaction done by anybody on the basis of the said document shall be illegal and not binding on our clients. The person doing so shall be liable to be prosecuted under the law.

**SHIVKANT ARORA, ADVOCATE
FOR M/S INTELLECTIVE LAW OFFICES
A-74, LOWER GROUND FLOOR,
DEFENCE COLONY, NEW DELHI-110024**

PUBLIC NOTICE

Be it known to all that My client Mr. **NAVAL SINGH** S/o. Sh. Dharm Singh, R/o. Ward No.25, Cheema Bhawan, Mori Char Bagh, Bharatpur, Rajasthan-321001, currently present at: A-1/13, Third Floor, Sector-17, Rohini Delhi-110089 has severed all his relations with his son Sh. Avtar Singh S/o. Sh. Naval Singh. Because of his behaviour towards my client and My client has also debarred him from all his moveable and immovable properties for all purposes in future. Anybody dealing with Sh. Avtar Singh S/o. Sh. Naval Singh, shall be doing so at his/her own risk and responsibilities and also my client shall not be responsible for any act of the aforesaid person.

GAURAV SHARMA (Advocate), Delhi High Court B-18, BGS, Block Tis Hazari Court, Delhi-54.

सार्वजनिक सूचना

एतद्द्वारा सूचित करना है कि ग्रुप हाउसिंग AWHO फ्लैट नं0 459, टाइप VI, सेकेण्ड फ्लोर, अरूण विहार, सैक्टर-28, नौएडा, जिसके मूल आबंटी लेफ्टिनेंट कर्नल श्याम रतन पुत्र स्व० श्री राम रतन निवासी सी-82, नीति बाग, नई दिल्ली ने उक्त फ्लैट मुख्यारनामा के आधार पर निम्न प्रकार बेचा था-

1. श्री रविन्द्र संगर पुत्र श्री राम कुमार पता आर-65 सी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95 के पक्ष में दिनांक 09-03-1994 को मुख्यारनामा निष्पादित किया गया जो कि रजिस्ट्रार कार्यालय, नौएडा, बही नं० IV, बुक नं० सब 1650/1659 पृष्ठ सं० 58/597 से 602 दस्तावेज नं0 189, दिनांक 09.03.1994 में निष्पादित किया गया है जो पंजीकृत है और विक्रय संविदा (एग्रीमेंट टू सैल) किसी भी व्यक्ति के पक्ष में निष्पादित नहीं किया गया । इस सूचना के माध्यम से सभी व्यक्ति को सूचित किया जाता है कि

चूंकि कम सं० 1 पर इंगित विक्रय संविदा विष्पादित / पंजीकृत नहीं है अतः इस नोटिस के माध्यम से सभी व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि उक्त फ्लैट का अन्तरण आवेदन मुख्यारनामा के आधार पर श्री पार्थ संगर पुत्र श्री रविन्द्र संगर पता 459 सेक्टर-28, नौएडा के पक्ष में प्रस्तुत किया जा रहा है। अतः इस संबन्ध में किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की आपत्ति है तो कृप्या अपनी आपत्ति समस्त साक्ष्य सहित नौएडा प्राधिकरण के ओ०एस० डी० (जीएचपी) विभाग में इस प्रकाशन की तिथि से 30 दिन के अन्दर दाखिल कर सकता है । **श्री रविन्द्र संगर**

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचना दी जाती है कि श्रीमती सुधा कौशिक पत्नी श्री पवन कुमार कौशिक, जो मोहल्ला जतिवाड़ा, मेरठ, (उत्तर प्रदेश) में स्थित मकान संख्या 244, 284 और 197, नगर निगम संख्या 207, क्षेत्रफल 68.35 वर्ग गज को श्रीमती रितु पत्नी श्री दीपक शर्मा से खरीद रही हैं, जो श्री मुकेश शर्मा, श्रीमती मधु शर्मा और श्रीमती गीता शर्मा द्वारा निष्पादित उप पंजीयन कार्यालय मेरठ में दिनांक 04.12.2023 (दस्तावेज संख्या 13168) को पंजीकृत बिक्री विलेख के आधार पर मालिक थीं। शुभम हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड से वित्तीय सहायता के बदले इसे गिरवी रखने का इरादा है। श्री शंकर लाल पुत्र श्री दीवान सिंह के पक्ष में दिनांक 30.07.1984 (दस्तावेज संख्या 10377) का मूल बिक्री विलेख विक्रेता श्रीमती रितु पत्नी श्री दीपक शर्मा के पास उपलब्ध नहीं है। बैंक/एनबीएफसी की आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए, हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को उक्त संपत्ति के स्वामित्व और/या गिरवी रखने के संबंध में कोई आपत्ति है, तो उनसे अनुरोध है कि वे नीचे दिए गए पते पर 07 दिनों के भीतर लिखित रूप में हस्ताक्षरकर्ता को सूचित करें .

NCR LAW ASSOCIATES (Advocate), A-98, Sector-9, New Vijay Nagar, Ghaziabad, (U.P.)-201009, Mob. Nos. 9999721152/ 9999826427.

PUBLIC NOTICE

Be it known to all that My client Akiluddin S/o Shri Nanhe Khan and his wife Smt. Husan Bano both R/o H.No. A-6/4 Gali No. 1, Block-A, Kabir Nagar delhi-110094, have severed all relations from their sons (1) Hasan Mohd. And his wife Smt. Soni and (2) Sahil and his wife Smt Aasma and have also debarred them from all movable/immovable properties, due to their misconduct, and arrogant behavior. My clients or their other family members shall not be responsible for any of their act or conduct in future. Anybody dealing with them shall be doing so, at his own risk and consequences.

MUHAMMAD ARIF (Advocate) Ch. No. F-502, Karkarduma Courts Shahdara, Delhi-110032

यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड
चौथी मंजिल, टॉवर 3, इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क, एलबीएस रोड, कुर्ला, मुंबई 400070

कब्जा सूचना
परिशिष्ट IV (नियम 8(1) देखें) (अचल संपत्ति के लिए)

जबकि अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन एंव प्रतिभूति हित प्रवर्तन ऐक्ट 2002 के तहत यूग्रो कैपिटल लि. जिसका पंजीकृत पताः 4वीं मंजिल, टावर 3, इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क, एलबीएस रोड, कुर्ला, मुंबई 400070 और पूनावाला फिनकॉर्प लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय 601, 6वीं मंजिल, जीरो वन आईटी पार्क, सर्वे नंबर 79/1, घोरपडी, मुंधवा रोड, पिंगल वस्ती, पुणे– 411036 का प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित दिनांकों को डिमांड नोटिस में उल्लिखित राशि को ब्याज सहित, उक्त नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिनों के भीतर वापस करने के लिए कहा गया था।

उधारकर्ताओं उक्त राशि का भुगतान करने में असफल हो गये हैं इसलिये एतद्द्वारा उधारकर्ता तथा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि अद्योहस्ताक्षरी ने इसमें नीचे वर्णित सम्पत्ति का कब्जा, उक्त अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (4), उक्त नियमों के नियम 8 के साथ पठित के अधीन उन्हें प्रदत्त शक्तियो के इस्तेमाल के अन्तगर्त निम्नलिखित माह और वर्ष को कब्जा ले लिया है।

कर्जदारों को विशेष रूप से और सर्वसाधारण को सामान्य रूप से चेतावनी दी जाती है कि वे निम्न सम्पत्तियों के साथ लेन-देन न करें तथा सम्पत्ति के साथ कोई भी लेन-देन यूग्रो कैपिटल लि. के प्रभार वास्ते बकाया राशि और भविष्य का ब्याज इत्यादि सहित के अधीन होगा।

कर्जदारों का ध्यान एक्ट की धारा 13 की उप धारा (8), के प्रावधानों के अंतर्गत सुरक्षित परिसंपत्तियों के मुक्त करने हेतु उपलब्ध समय सीमा की ओर आकर्षित किया जाता है।

कर्जदार का विवरण	मांग सूचना	बंधक सम्पत्ति	कब्जा की तिथि
1. कन्वर्सिस इंडिया 2. श्रीमती ममता मोंगिया 3. श्री सुरेश चंद मोंगिया 4. श्री. करण मोंगिया ऋण खाता संख्याः **HCFDELSEC0000103 4108**	मांग सूचना दिनांक 05.08.2024 हेतु राशि रु. 1,19,64,109/– दिनांक 05.08.2024 तक	बंधक सम्पत्ति का वह समस्त भाग एवं अंश जोकि 1/2 भाग (पीछे की तरफ) सम्पूर्ण तीसरी मंजिल के ऊपर छत/टैरेस का 1/4वाँ अविभाजित हिस्सा (मंदिर की ओर मुख), क्षेत्रफल 599 वर्ग फीट और दुकान सं. निजी संख्या-7, क्षेत्रफल 200 वर्ग फीट (गीता भवन मंदिर के सामने) भूतल पर संपति सं. 1/1, 1598 वर्ग फीट, मालवीय नगर नई दिल्ली में स्थित	26-10-2024

दिनांक : 29.10.2024
स्थान : दिल्ली एनसीआर

प्राधिकृत अधिकारी
यूग्रो कैपिटल लिमिटेड

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 29 अक्टूबर, 2024

प्रदूषण से जंग : 10 हजार सिविल डिफेंस के स्वयंसेवक होंगे तैनात

सीएम आतिशी ने कहा कि हफ्ते भर में शुरू होगा पंजीकरण

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी में प्रदूषण से निबटने के संबंध में प्रेसवार्ता में जानकारी देते पर्यावरण मंत्री गोपाल राय और मुख्यमंत्री आतिशी।

दीपावली पर दिल्ली सरकार ने नौकरी से हटाए गए 10 हजार बस मार्शलों को फिर से नौकरी का तोहफा दिया है। मुख्यमंत्री आतिशी और पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने विभिन्न विभागों के साथ बैठक कर बस मार्शलों की नौकरी से हटाए गए सिविल डिफेंस वॉलिंटियर्स को तैनात करने की पूरी कार्ययोजना तैयार की। आतिशी ने कहा कि बस मार्शलों को प्रदूषण की रोकथाम के लिए तैनात किया जाएगा। इसके लिए एक सप्ताह में पंजीकरण शुरू होगा।

आतिशी और पर्यावनरण मंत्री गोपाल राय ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि प्रदूषण के खिलाफ जंग में 10,000 सिविल डिफेंस वॉलंटियरों और बस मार्शलों को ग्राउंड जीरो पर तैनात किया जाएगा और सप्ताह भर में इनका पंजीकरण शुरू होगा। वाहनों को गलत तरीके से प्रदूषण सर्टिफिकेट न मिलें, इसके लिए सभी जांच केंद्रों पर सिविल डिफेंस और बस मार्शल तैनात किए जाएँगे। साथ ही ग्रैप की पाबंदियां बढ़ने के साथ सीमाओं पर जांच के एनफोर्समेंट टीमों के साथ बस मार्शलों की भी तैनाती होगी। प्रदूषण रोकथाम के लिए एमसीडी और डीपीसीसी एनफोर्समेंट टीमों की मदद के साथ-साथ जागरूकता अभियानों में भी इनकी तैनाती होगी।

आतिशी ने कहा कि, कुछ बस मार्शलों को परिवहन विभाग में तैनात किया जाएगा और दिल्ली भर में तकरीबन 1000 प्रदूषण जाँच केंद्र है, जहाँ वाहनों की प्रदूषण जाँच होती है। वहाँ इनकी ड्यूटी लगाई जाएगी कि किसी भी गाड़ी को गलत तरीके से प्रदूषण सर्टिफिकेट नहीं मिले।

उन्होंने कहा कि, जैसे ही ग्रैप 3,4 की पाबंदियाँ लगती है उसमें वाहनों के प्रकार पर भी पाबंदियाँ लगती है कि, किस प्रकार के वाहन दिल्ली आ सकते है या नहीं आ सकते है। ऐसे में बॉर्डरों पर भी चेकिंग के लिए परिवहन विभाग के एनफोर्समेंट टीमों के साथ इन बस मार्शलों को तैनात किया जाएगा। दिल्ली में 13 हॉटस्पॉट और 27 अन्य ऐसे स्थान जहां प्रदूषण का स्तर बढ़ा होता है और मॉनिटरिंग की जरूरत होती है। वहाँ एमसीडी के डिप्टी कमिश्नर के साथ बस मार्शलों को तैनात किया जाएगा। साथ ही एमसीडी की निरीक्षण टीम जो लगातार कंस्ट्रक्शन एंड डिमोलिशन वेस्ट, अवैध डंपिंग, ओपन वेस्ट बर्निंग और डीजी सेट्स के प्रयोग आदि का निरीक्षण कर रही है। उनके साथ भी बस मार्शलों और सिविल डिफेंस वालंटियरों को लगाया जाएगा। डीपीसीसी ने 33 टीमें बनाई गई है। जो लगातार निर्माण स्थलों पर धूल के रोकथाम का निरीक्षण कर रही है। इनके साथ भी बस मार्शलों और सिविल डिफेंस वालंटियरों को लगाया जाएगा। साथ ही ग्रीन वॉररूम में शिकायतों का समाधान हो रहा है या नहीं हो रहा है, इसकी जाँच में भी बस मार्शलों और सिविल डिफेंस वालंटियरों को लगाया जाएगा। साथ ही सरकार द्वारा चलाए जा रहे जागरूकता अभियानों जैसे रेड लाइट ऑन, गाड़ी ऑफ़ अभियान, लोगों को ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक परिवहन इस्तेमाल करने के लिए जागरूक करने आदि पर भी बस मार्शलों और सिविल डिफेंस वालंटियरों को तैनात किया जाएगा।

आप का दावा पंजाब में पराली जलाने के मामलों में आई कमी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी ने सोमवार को दावा किया कि पंजाब में उसकी सरकार बनने के बाद से पराली जलाने की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। पंजाब और हरियाणा में कटाई के बाद के मौसम में पराली जलाने को, खास तौर पर अक्टूबर और नवंबर में दिल्ली में वायु प्रदूषण के लिए एक प्रमुख कारण माना जाता है। दिल्ली और पंजाब में आप सरकारों को राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण के स्तर में लगातार वृद्धि के कारण आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है।

आप विधायक दिलीप पांडे ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, पंजाब में भगवंत मान सरकार के सार्थक प्रयासों के कारण, पंजाब में पराली जलाने के मामलों में उल्लेखनीय कमी आई है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) के आंकड़े का हवाला देते हुए पांडे ने दावा किया कि पंजाब में पराली जलाने के मामलों की संख्या अक्टूबर 2022 में लगभग 8,000 से घटकर 1,866 रह गई है। पांडे ने कहा, केंद्र सरकार के आईआरएआई के आंकड़ों के मुताबिक, अक्टूबर 2022 के इस सप्ताह तक पंजाब में पराली जलाने के लगभग 8,000 मामले थे और आज के ताजा आंकड़े के मुताबिक मामले घटकर।,866 रह गए हैं। उन्होंने कहा कि आंकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि पंजाब की आप सरकार ने इस मुद्दे के समाधान के लिए सकारात्मक रूप से काम किया है, जबकि भाजपा शासित हरियाणा और उत्तर प्रदेश सिर्फ दोषारोपण में लगे रहे हैं और समाधान में उनका योगदान शून्य है। पिछले कई दिनों से राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गई है।

खुलेआम पटाखों की बिक्री से पर्यावरण मंत्री नाराज

- गोपाल राय ने दिवाली से पहले एलजी को पत्र लिखकर प्रतिबंध को सख्ती से लागू करने का किया अनुरोध

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पार्यावरण मंत्री गोपाल राय खुलेआम पटाखों की बिक्री से नाराज हैं। उन्होंने उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को पत्र लिखकर पटाखों की अवैध बिक्री और वितरण में शामिल लोगों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। दिल्ली सरकार ने 14 अक्टूबर को एक निर्देश जारी कर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में एक जनवरी, 2025 तक सभी प्रकार के पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री और उन्हें फोड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया था।

उपराज्यपाल को लिखे अपने पत्र में राय ने जोर देकर कहा कि पटाखे वायु प्रदूषण को बढ़ाते हैं और बच्चों, बुजुर्गों और सांस की समस्याओं वाले व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य जोखिम पैदा करते हैं।

मंत्री ने कहा, खबरों के अनुसार, प्रतिबंध के बावजूद दिल्ली के विभिन्न बाजारों में पटाखे अब भी बिक रहे हैं तथा शहर में हरियाणा और उत्तर प्रदेश से पटाखे लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ए पटाखे राष्ट्रीय राजधानी को हरियाणा और उत्तर प्रदेश से जोड़ने वाली सीमाओं के माध्यम से दिल्ली में लाए जा रहे हैं और दिल्ली पुलिस एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों ने प्रतिबंध को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया है।

एनजीटी ने दिल्ली पुलिस और यातायात आयुक्त को भेजा नोटिस

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने वाहनों की आवाजाही से होने वाले वायु प्रदूषण को कम करने और पार्किंग के मुद्दों के समाधान के लिए किए गए उपायों के बारे में दिल्ली पुलिस प्रमुख और यातायात प्रबंधन के विशेष आयुक्त से जवाब मांगा है।

एनजीटी ने कहा कि प्रदूषण-रोधी उपाय क्रमिक प्रतिक्रिया कार्य योजना (जीपीएपी) के विभिन्न चरणों को लागू करने के लिए एक पारदर्शी प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए। हरित निकाय राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में बिगड़ती वायु गुणवत्ता के मुद्दे पर सुनवाई कर रहा था, जिसके लिए जीआरएपी के विभिन्न चरणों को लागू करना आवश्यक हो गया है। एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने 24 अक्टूबर के एक आदेश में कहा, अब, सर्दी शुरू हो गई है और हमने पाया है कि 23 अक्टूबर को दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 364 था जो बहुत खराब श्रेणी को दर्शाता है। एनसीआर में वायु गुणवत्ता में गिरावट को रोकने में अधिकारियों की ओर से चूक हुई है। न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति अरुण कुमार त्यागी और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल की सदस्यता वाली पीठ ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की 23 अक्टूबर की एक रिपोर्ट पर गौर किया। इस रिपोर्ट के मुताबिक, जीआरएपी का प्रथम चरण तब लागू किया गया जब राष्ट्रीय राजधानी का औसत एक्यूआई पर्याप्त रूप से लंबी अवधि तक 200 से अधिक था। एनजीटी ने कहा कि वाहन प्रदूषण वायु प्रदूषण के प्रमुख कारकों में से एक था और यातायात, पार्किंग मुद्दों को नियंत्रित करने, अनधिकृत और पुराने वाहनों पर प्रतिबंध लागू करने की जिम्मेदारी पुलिस की थी।

पीठ ने निर्देश दिया कि उल्लंघनों की जांच के लिए दिल्ली सरकार और एमसीडी द्वारा तैनात फील्ड स्टाफ और टीमों को मजबूत किया जाना चाहिए और सक्षम अधिकारियों द्वारा निगरानी की जानी चाहिए।

पंजाब सरकार पराली जलाने से रोकने में नाकाम : सचदेवा

- भाजपा सांसदों ने पंजाब के मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन, रोक लगाने का किया अनुरोध

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पंजाब मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपने जाते भाजपा नेता व सांसद।

राष्ट्रीय राजधानी एक बार फिर दिवाली से पहले ही गैस चैंबर बनने की कगार पर है। यहां के लोगों की सांसों पर इस वक्त जहरीली हवाओं का पहरा है। इसको लेकर सियासत भी गरमाई हुई है। सत्ता पक्ष और विपक्ष में इस मुद्दे पर आरोप-प्रत्यारोप तेज हो गया है। इस बीच पंजाब में पराली जलाने की घटनाओं के कारण दिल्ली की आबोहवा बहुत खराब हो गई है। इसको लेकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा की अगुवाई में भाजपा सांसदों का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान को एक ज्ञापन सौंपने दिल्ली स्थित कपूरथला हाऊस पहुंचे। भाजपा नेताओं का आरोप है कि मुख्यमंत्री भाजपा प्रतिनिधिमंडल से नहीं मिले। बाद उन्होंने ज्ञापन की प्रति पंजाब सरकार के रेजिडेंट कमीश्नर कार्यालय को सौंपी।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की पंजाब में पराली जलने की घटनाएं एवं क्षेत्रफल दोनों लगातार बढ़ रहे हैं और उसके कारण दिल्ली सहित उत्तर भारत में प्रदूषण बहुत तेजी से बढ़ रहा है। दिल्ली भाजपा गोपाल राय से मांग कर रही थी की पंजाब सरकार से इस पर बात करे पर वह बात नहीं कर रही थी। सोमवार को पता चला की पंजाब के मुख्य मंत्री भगवंत मान दिल्ली आये हैं तो पार्टी के वरिष्ठ नेता पंजाब में पराली जलाने से रोकने की मांग को लेकर उनसे मिलने उनके दिल्ली निवास पर पहुंचे लेकिन खेदपूर्ण है की उन्होंने मिलने से मना कर दिया।

नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता ने कहा की दिल्ली सरकार संवेदनहीन है, खेदपूर्ण है की सरकार प्रदूषण जैसे गम्भीर विषय पर भी चर्चा नहीं करती और आज पंजाब के मुख्य मंत्री ने भी मिलने से मना कर के दिखा दिया की आम आदमी पार्टी प्रदूषण को लेकर गम्भीर नहीं है।

सांसद मनोज तिवारी ने कहा की प्रदूषण पर दिल्ली सरकार विश्वासघात कर रही है और पंजाब सरकार की पराली जलना रोकने की निष्क्रियता का बचाव कर रही है जो निंदनीय है। सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा की वर्ष 2021 तक अरविंद केजरीवाल लगातार पंजाब की पराली को दिल्ली के प्रदूषण का दोषी बताते थे पर अब पंजाब की सत्ता पाने के बाद वह पंजाब का बचाव कर अन्य राज्यों पर दोषारोपण करते हैं। वहीं योगेन्द्र चांदोलिया, कमलजीत सहरावत, बाँसुरी स्वराज और प्रवीन खंडेलवाल ने कहा है की आम आदमी पार्टी के पंजाब में सत्ता में आने के बाद वहाँ पराली जलने की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। वर्ष 2021 में 15.64 हेक्टेयर में पराली जली जो वर्ष 2023 में बढ़ कर 19 लाख हेक्टेयर हो गईं।

कांग्रेस न्याय यात्रा निकाले या केजरीवाल पदयात्रा, जीतेगी भाजपा

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा है की दिल्ली में कांग्रेस खासकर दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव अपनी राजनीतिक साख हो चुके हैं। वह आज आम आदमी पार्टी के खिलाफ दिल्ली न्याय यात्रा निकालने की बात कर रहे हैं मात्र 6 माह पहले उन्हीं ने जोर शोर से कांग्रेस का आम आदमी पार्टी का गठबंधन करवाया था।

भाजपा प्रवक्ता ने कहा है की दिल्ली की जनता भलीभांति जान चुकी है की दिल्ली में कांग्रेस अब आम आदमी पार्टी की बी टीम बन चुकी है और कांग्रेस सिर्फ गठबंधन में दो तीन सीट अतिरिक्त लेने के लिए नूरा कुश्ती लड़ रही है। कपूर ने कहा है की अब चाहें कांग्रेस न्याय यात्रा निकाले या केजरीवाल पदयात्रा, दिल्ली वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा की सरकार और विकास की राह को चुनने का मन बना चुके हैं।

पीडब्ल्यूडी के इंजीनियरों पर लटकी 200 करोड़ के घोटाले की तलवार

- उपराज्यपाल ने 5 अभियंताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक शाखा को दी जांच की मंजूरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने लोक निर्माण विभाग के पांच अभियांताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत जांच की मंजूरी दे दी है। भ्रष्टाचार निरोधक शाखा इस मामले में आगे की कार्रवाई करेगी। इन इंजीनियरों पर दिल्ली सरकार के अस्पतालों में 200 करोड़ रुपये का घोटाला करने का आरोप है।

उपराज्यपाल कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि इस घोटाले में लोक निर्माण विभाग के इलेक्ट्रिक डिवीजन के दो सहायक अभियंता और तीन जूनियर इंजीनियर के खिलाफ जांच होगी। आरोप है कि इन लोगों ने दिल्ली सरकार के विभिन्न अस्पतालों में आपातकालीन कार्यों के नाम पर खुद को लाभ पहुंचाने वाली विभिन्न कंपनियों को टेंडर दिलाने में मदद की। इन अस्पतालों में लोक नायक अस्पताल, मौलाना आजाद डेंटल विज्ञान संस्थान, जीबी पंत अस्पताल और मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज शामिल हैं। अभी तक हुई जांच में पता चला है कि पीडब्ल्यूडी के उक्त पांच अधिकारियों ने फर्जी बिलों के भुगतान को मंजूरी दी।

अधिकारी के अनुसार, जांच की स्वीकृति 6 मई 2024 को दर्ज प्राथमिकी में उल्लेखित स्वास्थ्य क्षेत्र के पीडब्ल्यूडी से संबंधित अधिकारी सुभाष चंद्र दास (एई), सुभाष चंद (एई), अभिनव (जेई), रघुराज सोलंकी (जेई) और राजेश अग्रवाल (जेई) के खिलाफ दी गई है। अस्पतालों से संबंधित इस घोटाले से सरकारी खजाने को 200 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है।

यह मामला उपरोक्त सहायक इंजीनियरों और जूनियर इंजीनियरों के खिलाफ पीडब्ल्यूडी में दर्ज की गई शिकायतों से संबंधित है, जिसमें आरोप है कि विभिन्न अस्पतालों में आपातकालीन कार्यों के नाम पर लाभ पहुंचाने वाली विभिन्न कंपनियों को टेंडर दिलाने में मदद की। जांच में पता चला है कि पीडब्ल्यूडी के उपरोक्त अधिकारियों द्वारा फर्जी बिलों के भुगतान के लिए फर्मों ठेकेदारों को भुगतान स्वीकृत किए गए।

जामिया नगर में पुलिसकर्मी की आंख पर जड़ा मुक्का, गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी के जामिया नगर इलाके में वाहन जांच के दौरान हुई लड़ाई में एक बुलेट मोटर साइकिल चालक ने एक स्थानीय पुलिसकर्मी की आंख पर कथित तौर पर मुक्का जड़ दिया। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी।

सोशल मीडिया पर प्रसारित एक वीडियो के अनुसार, शनिवार रात स्थानीय थाना प्रभारी (एसएचओ) नरपाल सिंह ने दो कांस्टेबल के साथ मिलकर एक रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल को एग्जॉस्ट जांच के लिए रोका। अधिकारी ने बताया, रात करीब 8.45 बजे जब एसएचओ गश्ती दल के साथ जामिया नगर के बटला हाउस पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि एक रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल तेज आवाज करते कब्रिस्तान चौक से जाकिर नगर मार्केट की ओर जा रही थी। वीडियो में यह दिख रहा है कि एसएचओ उस व्यक्ति से एग्जॉस्ट जांच के लिए मोटर साइकिल का एक्सेलेरेटर तेज करने के लिए कह रहे हैं।

बहस बढ़ने पर व्यक्ति ने पिता को बुला लिया और दोनों ने दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के भीड़भाड़ वाले इलाके में पुलिसकर्मियों के साथ हाथापाई की। वे सीसीटीवी के साथ मोबाइल के फुटेज एकत्र कर रहे हैं, ताकि सारी जानकारी मिल सके।

दिल्ली न्याय यात्रा : जनता से संवाद करेगी कांग्रेस

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली न्याय यात्रा अभियान का लोगो जारी करते कांग्रेसी नेता।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के तर्ज पर प्रदेश कांग्रेस अगले महीने से दिल्ली न्याय यात्रा शुरु करेगी। इस यात्रा के दौरान पार्टी के नेता महीने भर सड़कों पर रहेंगे, लोगों के बीच रात बितायेंगे और उनकी समस्या सुनेंगे व समझेंगे। यह यात्रा आठ नवंबर को राजघाट से शुरू होगी और चार चरणों में विधानसभा चुनाव से पहले चार दिसंबर को समाप्त होगी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने इस यात्रा के बारे में कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में संवाददाता सम्मेलन में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया किया दिल्ली न्याय यात्रा के चार चरण होंगे। यात्रा के दौरान पार्टी के नेता लोगों से बातचीत करेंगे और जानेंगे कि पिछले 10 वर्षों से वे किन मुद्दों और समस्याओं से जूझ रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान आम आदमी पार्टी की नाकामियों का एक वीडियो भी यादव ने जारी किया। यात्रा का लोगो पूर्व सांसद जेपी अग्रवाल ने जारी किया और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सभाष चोपड़ा ने यात्रियों के लिए टी-शर्ट का प्रदर्शन किया।

यादव ने बताया कि दिल्ली की सभी 70 विधानसभाओं में 4 चरणों में दिल्ली जोड़ो यात्रा निकालेगी, जो एक महीने तक चलेगी। जिसके पहले चरण में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि राजघाट से 8 नवम्बर को शुरु किया जाएगा। पहले चरण में 16 विधानसभाओं में चॉदनी चौक से शुरुआत करके 13 नवम्बर चलेगी। दूसरे चरण में 18 विधानसभाओं में 15 नवम्बर से 20 नवम्बर तक चलेगी, करावल नगर से शुरू होकर जंगपुरा विधानसभा में खत्म होगी। तीसरे चरण में 16 विधानसभाओं में 22 नवम्बर से 27 नवम्बर तक चलेगी और बदरपुर विधानसभा से शुरू होकर द्वारका में खत्म होगी।

यात्रा आठ नवंबर को राजघाट से शुरू होकर विधानसभा चुनाव से पहले चार दिसंबर को समाप्त होगी : देवेंद्र

संक्षिप्त समाचार

एलजी के आदेश से मिली म्युटेशन की सुविधा : बिधूड़ी

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली से भाजपा सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना से मुलाकात करके दिल्ली वालों को दिए गए दिवाली के तोहफों पर उन्हें धन्यवाद दिया। साथ ही कहा इन सौगातों से जनता को काफी राहत मिली है। इसके अलावा बिधूड़ी ने दिल्ली विकास प्राधिकरण से जुड़े अनेक मुद्दों पर उनसे बात की। रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा कि उपराज्यपाल के आदेश पर अनधिकृत कॉलोनियों और गावों में बिजली के कनेक्शन के लिए डीडीए से एनओसी की शर्त हटाई गई है।

शीशमहल कॉलोनी की बदहाली पर भड़कीं मालीवाल

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के किराड़ी की शीश महल कॉलोनी की दुर्दशा देख आप की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल भड़क गई। यहां की टूटी सड़कें, सीवर की पानी सड़कों बहता, पीने के लिए साफ पानी का अभाव और क्षेत्र में साफ-सफाई जैसी बुनियादी सुविधाओं के अभाव में स्थानीय विधायक ऋजुराज को खरीखोटी सुनाई। साथ ही अपनी नाराजगी जताते हुए मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना को चेतावनी भी दे डाली कि यदि इस कॉलोनी की स्थिति में जल्द सुधार नहीं किया गया, तो वे टैंकर भरकर इस क

एमसीडी की बैठक में होगा मेयर का चुनाव : शैली

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के महापौर चुनाव अगले महीने सदन की बैठक के दौरान होंगे। महापौर शैली ओबेरॉय ने सोमवार को मौजूदा सत्र को स्थगित करते हुए यह घोषणा की। महापौर का चुनाव करीब छह महीने से लंबित है। ओबेरॉय के सदन में पहुंचने के तुरंत बाद, विपक्षी पार्टी के पार्षदों ने प्रदूषण और महापौर चुनाव में देरी जैसे मुद्दों पर नारे लगाए, जिससे हंगामा हुआ। पार्षदों ने महापौर का चुनाव कराने की मांग की, जो तीसरे कार्यकाल के लिए दलित उम्मीदवार के लिए आरक्षित है और अप्रैल से लंबित है। हंगामे के बीच ओबेरॉय ने कहा, आश्वस्त रहें कि अगली बैठक में चुनाव होंगे। अभी हमें चर्चा के एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हालांकि, जब विपक्षी पार्षदों ने आपत्तियां उठाना जारी रखा, तो ओबेरॉय ने कई प्रस्ताव पारित किए और सदन को अगली बैठक तक के लिए स्थगित कर दिया। महापौर के देरी से पहुंचने के कारण सदन की कार्यवाही निर्धारित समय 11:45 मिनट देरी से शुरू हुई, जिस पर कई पार्षदों ने विरोध जताया।

इस धनतेरस करें समझदारी से खरीदारी

- उपभोक्ता बीआईएस केयर ऐप पर हॉलमार्क विशिष्ट पहचान का कर सकते हैं सत्यापन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

धनतेरस की पूर्व संध्या पर खरीदारी करते लोग। फोटो : रंजन डिमरी

धनतेरस त्योहार को देखते हुए भारतीय मानक ब्यूरो ने उपभोक्ताओं से सोने और चांदी की खरीदारी के लिए अधिक समझदारी से खरीदारी करने का अनुरोध किया है। इसमें हॉलमार्क का स्थायी विश्वास मददगार होगा। परंपरागत तौर पर धनतेरस वह पावन मौका है जब लोग सोने में निवेश करते हैं। यह सौभाग्य, धन और भविष्य की सुरक्षा का प्रतीक है। बीआईएस धनतेरस के मौके पर खरीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, वह उपभोक्ताओं को हॉलमार्क वाले सोने और चांदी के आभूषणों के महत्व को बढ़ावा देकर समझदारी के साथ खरीदारी करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। सोने के आभूषणों में हॉलमार्किंग में 3 चिह्न शामिल हैं। अर्थात् बीआईएस मानक चिह्न, कैरेट और उत्कृष्टता में सोने की शुद्धता और 6-अंकीय अल्फान्यूमेरिक एचयूआईडी कोड। एचयूआईडी हॉलमार्किंग यूनिक आईडी एक अद्वितीय 6 अंकीय अल्फान्यूमेरिक कोड है जो सोने के प्रत्येक आभूषण पर चिह्नित होता है।

बीआईएस के महानिदेशक प्रमोद कुमार तिवारी ने कहा, वह बीआईएस एचयूआईडी आधारित हॉलमार्क के साथ धनतेरस के दौरान और उसके बाद उपभोक्ताओं के सोने के निवेश की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। बीआईएस हॉलमार्क और उपयोग में आसान बीआईएस केयर ऐप के साथ उपभोक्ताओं को उनकी आभूषण खरीद की प्रामाणिकता का आश्वासन दिया जा सकता है। उपभोक्ताओं को अब बीआईएस केयर ऐप पर सत्यापित एचयूआईडी आइकन का उपयोग करके हॉलमार्क वाले सोने के आभूषणों पर एचयूआईडी की प्रामाणिकता को सत्यापित करने का भी अधिकार दिया गया है।

दिल्ली दुर्घटना मुक्त दीपावली के लिए तैयार : फायर विभाग

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दीपावली की तैयारियों के बीच दिल्ली अग्निशमन सेवा ने सोमवार को कहा कि वह प्रकाश पर्व को दुर्घटना मुक्त बनाने के लिए विस्तृत योजनाएं बना रही है। विभाग ने दीपावली के मद्देनजर 31 अक्टूबर और। नवंबर को अपने अधिकारियों और कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं और शहर में 39 स्थानों पर अग्निशमन उपकरण तैनात किए जाएंगे। डीएफएस के प्रमुख अतुल गर्ग ने कहा, आपात स्थिति से निपटने के लिए करीब 3,200 अग्निशमन कर्मी तैनात होंगे।

अतुल गर्ग ने कहा कि 31 अक्टूबर और। नवंबर को अधिकारियों और कर्मचारियों की आकस्मिक छुट्टियां, अर्जित छुट्टियां और अन्य अवकाश रद्द कर दिए गए हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे पास आग से संबंधित किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए अधिकतम कार्यबल हो।

गर्ग ने कहा कि अग्निशमन सेवा नियंत्रण कक्ष आमतौर पर दीपावली पर अधिकतम कॉल का जवाब देता है और ग्निशमन कर्मियों को हर समय तैयार रहना होता है। अधिकारियों ने कहा कि डीएफएस 31 अक्टूबर और एक नवंबर को शाम पांच बजे से आधी रात तक 23 व्यस्त स्थानों पर पानी के टैंकरों की तैनाती करेगा।

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 29 अक्टूबर, 2024

बढ़ता प्रदूषण चिंता का विषय: राव नरबीर

नगर निगम ने शुरू कीं चार एंटी स्मॉग गन, मशीन का शुभारंभ करते हुए बोले पर्यावरण व वन मंत्री

● कहा- प्रदूषण कम करने के लिए गंभीरता से काम कर रही सरकार

एंटी स्मॉग गन को झंडी दिखाकर रवाना करते कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

राज्य उद्योग, पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि बढ़ता हुआ पर्यावरण प्रदूषण हम सभी के लिए चिंता का विषय है और सभी को प्रदूषण नियंत्रण के लिए अपना सहयोग देना चाहिए। कैबिनेट मंत्री सोमवार को सिविल लाइंस क्षेत्र में नगर निगम द्वारा शुरू की गई 4 एंटी स्मॉग गन का शुभारंभ कर रहे थे।

सिंह ने कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) का दूसरा चरण लागू कर दिया गया है तथा इसके तहत लगाए गए प्रतिबंधों की पालना सभी को करनी चाहिए, ताकि हमें स्वच्छ वातावरण मिल सके। उन्होंने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार गंभीरता से कार्य कर रही है। इसके तहत सड़कों की सफाई मैकेनाइज्ड करवाई जा रही है। इसके अलावा, धूल को उडने से रोकने के लिए सड़कों व पेड़ों पर पानी का छिड़काव लगातार जारी है। उन्होंने कहा कि ग्रैप नियमों की पालना सुनिश्चित करने के लिए टीमें अलग-अलग क्षेत्रों में निगरानी कर रही हैं। प्रतिबंधित गतिविधियां करने वालों पर कार्रवाई भी की जा रही है।

नगर निगम आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने कहा कि नगर निगम प्रदूषण को कम करने का भरसक प्रयास कर रहा है। इसी दिशा में निगम क्षेत्र में धूल को उडने से रोकने व प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सोमवार को 4 एंटी स्मॉग गन मशीन ट्रायल आधार पर शुरू की गई हैं। ये मशीन 320 डिग्री तोप रोटेशन के साथ 20 मीटर तक पानी छिड़काव कर सकती है।

मशीन पर 1000 लीटर क्षमता का स्टेनलेस स्टील टैंक लगा हुआ है। इस मशीन की विशेषता यह है कि यह छोटी गलियों व बाजारों में भी जा सकती है। एक मशीन की कीमत लगभग 18 लाख रुपए है। इस प्रकार चारों मशीनों पर लगभग 72 लाख रुपए का खर्च आने का अनुमान है। निगम द्वारा पहले से ही ट्रैक्टर माउंटिड एंटी स्मॉग गन क्षेत्र में चलाई जा रही हैं। इस मौके पर नगर निगम के एडिशनल म्युनिसिपल कमिश्नर वाईएस गुप्ता, संयुक्त आयुक्त सुमन भांखड़, आरओ पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड विजय चौधरी, कार्यकारी अभियंता मनोज कुमार, निवर्तमान निगम पार्षद कुलदीप यादव, ब्रहम यादव व धर्मबीर सिंह, भाजपा नेता राकेश यादव सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

बेरोजगारी भत्ता लेने के लिए शिक्षित बेरोजगार करें आवेदन

गुरुग्राम। रोजगार विभाग हरियाणा ने प्रत्येक वर्ष की भांति शिक्षित बेरोजगार प्रार्थियों से नवम्बर महीने में बेरोजगारी भत्ता प्राप्त करने के लिए आवेदन आमंत्रित किए है। आवेदक के पास गुरुग्राम जिले का रिहायशी प्रमाण-पत्र होना चाहिए। आवेदक की आयु 21 से 35 वर्ष के बीच होने के साथ ही एक नवम्बर 2024 को तीन वर्ष पुराना पंजीकरण होना आवश्यक है। आवेदक के परिवार की सभी स्त्रोतों से वार्षिक आय 03 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए व रिहायशी व कमर्शियल सम्पत्ति की कीमत 10 लाख से अधिक ना हो अथवा कृषि भूमि 2 हैक्टेयर से अधिक ना हो। सरकारी प्रवक्ता ने शिक्षा से संबंधित शर्तों की जानकारी देते हुए बताया प्रार्थी 12वीं पास या दसवीं के बाद दो वर्षीय कोर्स पास होना चाहिए। साथ ही वर्तमान में प्रार्थी विद्यार्थी, प्रशिक्षणर्थी अप्रैन्टिस ना हो। परिवार पहचान पत्र में आय सत्यापित हों।

भाजपा जिला कार्यालय में कार्यकर्ताओं की कार्यशाला में मौजूद कार्यकर्ता, इनसेट में पत्रकारों से बात करते भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़।

जिले में 4.50 लाख नए सदस्य बनाएगी भाजपा: धनखड़

● अपनी हार पर कांग्रेस ईवीएम जैसी निर्जीव चीज का बहाना लेती है जो जवाब ही नहीं दे सकती: ओमप्रकाश

● भाजपा का सदस्यता अभियान नगर निगम चुनाव को बनाएगा सरल

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ अपनी हार पर कांग्रेस ईवीएम जैसी निर्जीव चीज का बहाना लेती है जो जवाब नहीं दे सकती। भाजपा मजबूती के साथ चुनाव लड़ती है और जीत दर्ज करती है। भविष्य में भी होने वाले निकाय चुनावों में भाजपा की जीत जय है। यह बात उन्होंने सोमवार को गुरुग्राम में भाजपा के सदस्यता अभियान को लेकर पार्टी कार्यालय में कार्यशाला के बाद पत्रकार वार्ता में कही। जिलाध्यक्ष कमल यादव की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला में विधायक बिमला चौधरी, तेजपाल तंवर, मुकेश शर्मा व महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष उषा प्रियदर्शी भी उपस्थित रहीं।

कार्यशाला में ओमप्रकाश धनखड़ ने कहा कि जिले में 4 लाख 50 हजार नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा। सदस्यता अभियान को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसके बारे में राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ ने कार्यकर्ताओं को विस्तार से जानकारी दी। संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा ने बूथ और मंडल स्तर पर कार्यशाला करके नए सदस्य जोड़ने के बारे में बताया। ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि हरियाणा में भाजपा ने 50 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। हरियाणा में 20 हजार 629 बूथ हैं और हर बूथ पर 250 सदस्य बनाए जाने हैं। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम जिला में 4 लाख 50 हजार नए सदस्य बनाने का लक्ष्य कार्यकर्ताओं को दिया है। गुरुग्राम विधानसभा में 1 लाख 25 हजार, बादशाहपुर विधानसभा में भी 1 लाख 25 हजार व पटौदी तथा सोहना विधानसभा में 1-1 लाख नए सदस्य बनाए जाएंगे। कार्यकर्ताओं को उत्साहित करते हुए धनखड़ ने कहा कि यह सदस्यता अभियान नगर निगम चुनाव को भी सरल बना देगा और चुनाव में भाजपा का परचम लहराएगा।

संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं को भाजपा की जीत व तीसरी बार सरकार बनाने की बधाई दी। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही स्पष्ट बहुमत की सरकार बनी है। भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कार्यशाला में गुरुग्राम की चारों विधानसभाओं में जीत का श्रेय कार्यकर्ताओं को दिया। कमल यादव ने कहा कि जल्द ही नगर निगम चुनाव होने हैं, इसलिए कार्यकर्ता अधिक से अधिक मेहनत करें।

स्कूल ने रन फॉर यूनिटी करके सरदार पटेल को किया नमन

● 1500 बच्चों ने एक साथ दौड़कर बनाया रिकॉर्ड

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती की पूर्व अवसर पर सोमवार को रॉयल पब्लिक स्कूल सेक्टर-95 वजीरपुर द्वारा रन फॉर यूनिटी करके सरदार पटेल को नमन किया गया। इस रन में 1500 से अधिक बच्चों ने भाग लेकर एक कीर्तिमान स्थापित किया।

रॉयल ग्रुप ऑफ एजुकेशन द्वारा इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते रहे हैं। जिनका उद्देश्य सामाजिक एकता राष्ट्रीय सशक्तिकरण तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर रहता है। रन फॉर यूनिटी का अर्थ ही एकता के लिए दौड़ है। रॉयल ग्रुप ऑफ एजुकेशन के अध्यक्ष डॉ. विजय सिंह चौहान (नम्बरदार) ने इस दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार देश के लोगों पुरुष कहे जाने वाले पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने राष्ट्रीय एकता के लिए काम किया, उसी प्रकार हमें राष्ट्रीय एकता के लिए इसी तरह के प्रयास करते रहना चाहिए। छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत की जानी चाहिए। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 31 अक्टूबर को होती है।

अस्पतालों में जले हुए मरीजों के इलाज का पुख्ता प्रबंध: यादव

● दीपावली पर्व पर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

दिवाली पर्व पर किसी प्रकार की अप्रिय घटना से निपटने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने तैयारियां पूरी कर ली हैं। हर एक सरकारी अस्पताल में आग से झुलसे मरीजों के लिए एक अलग वार्ड, मेडिकल स्टाफ तथा दवाईयों की व्यवस्था की गई है। विभाग ने आम नागरिकों के लिए इन घटनाओं से बचाव की गाइडलाइन भी जारी की है।

सीएमओ डा. वीरेंद्र यादव ने बताया कि सेक्टर दस स्थित नागरिक अस्पताल में आग से झुलसे मरीजों के लिए पांच बेड का स्पेशल वार्ड तैयार कर लिया गया है। यहां शिफ्ट में दो डॉक्टर ड्यूटी पर तैनात रहेंगे। दीपावली पर अचानक इस प्रकार की कोई घटना होती है तो मरीज को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिला के बाकी सरकारी अस्पतालों में भी आग लगने की घटना से प्रभावित हुए मरीज को उचित चिकित्सा देने की व्यवस्था विभाग ने की है। इसी प्रकार पैरामेडिकल स्टाफ एवं दवाईयों का प्रबंध अस्पतालों में किया गया है। उन्होंने कहा कि लोगों को स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी बता रहे हैं कि पटाखे बजाते समय अपनी व आसपास खड़े परिवार के सदस्यों की सुरक्षा का ध्यान रखें। पटाखा जलाते समय चेहरे को उसके पास ना लेकर जाएं। केवल ग्रीन पटाखों का ही इस्तेमाल करें।

अधिक धुआं, शोर व तेज आवाज वाले पटाखे ना लेकर आएं। इससे श्वांस और कान के रोगियों को परेशानी होती है। श्वांस के मरीज घर से बाहर निकलते समय चेहरे पर एन-95 मास्क पहन कर रखें।

प्रदूषण नियंत्रण व सफाई व्यवस्था में सहयोग करें आम नागरिक: निशांत यादव

गुरुग्राम। दीपावली के त्यौहार के अवसर पर आम नागरिक अपनी स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान रखते हुए कम से कम पटाखों का प्रयोग करें। प्रदूषण नियंत्रण में जिला वासियों को प्रशासन का सहयोग करना चाहिए। उपायुक्त निशांत कुमार यादव ने आज कहा कि शहर के बाजारों में दीपावली त्यौहार की रौनक अब दिखाई देने लगी है। अधिक तादाद में लोग खरीदारी के लिए मॉल, शॉपिंग कॉम्पलेक्स तथा सामान्य बाजारों में पहुंच रहे हैं। हालांकि पुलिस विभाग ने यातायात नियंत्रण की समुचित व्यवस्था की हुई है। फायर बिग्रेड की गाड़ियों को भी अलर्ट पर रखा गया है। आम नागरिकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे बाजार से मिठाई खरीदते समय उसकी गुणवत्ता को जरूर परख लें। इसी प्रकार यातायात व्यवस्था में पुलिस का सहयोग करते हुए संभव हो तो फोर व्हीलर की बजाय टू व्हीलर या पब्लिक ट्रांसपोर्ट का प्रयोग करें। उपायुक्त ने कहा कि दीपावली के अवसर पर बच्चों को ग्रीन पटाखे लाकर दें। इनके बजाने का समय भी प्रशासन ने दीपावली की रात को दस बजे तक का निर्धारित किया हुआ है। जिसकी पालना की जानी चाहिए। शहर को साफ-सुथरा रखने के लिए निर्धारित स्थान पर ही कूड़े का निपटान किया जाए। नगर निगम ने अपनी पूरी टीम सफाई व्यवस्था के काम में लगाई हुई हैं, उनका हम सबको सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुकानदार भी सड़कों पर अतिक्रमण ना करें।

संक्षिप्त समाचार

नायब के दोबारा मुख्यमन्त्री बनने पर वकीलों ने लड्डू बांटे

फरीदाबाद। कोर्ट परिसर में सोमवार को मुख्यमन्त्री नायब सिंह सैनी के बनने पर प्रेम चन्द्सैनी, लोकेश सैनी व समाज से जुड़े सैकड़ों वकीलों ने एक-दूसरे को लड्डू खिलाकर बधाई दी। इस मौक़े पर बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा के पूर्व मनोनीत सदस्य शिवदत्त वशिष्ठ एडवोकेट ने कहा कि भाजपा 36 बिरादरी की पार्टी है। इस मौके बार एसोसिएशन के महासचिव कुंवर दलपत सिंह ने कहा कि सैनी समाज का मुख्यमन्त्री बनने पर समाज के साथ-साथ अन्य समाजों के लिए आज एक खुशी का दिन है। इस मौके पर आर एस नागर, प्रदीप शांडिल्य, प्रदीप सैनी, नितेश सैनी, गिर्राज सैनी, कुलदीप सैनी, चिरंजी सैनी, ओमप्रकाश सैनी, धरमचंद सैनी, मुकेश सैनी, लक्ष्मण सैनी, धनीराम राजक ,वरिष्ठ अधिवक्ता ,भीमसेन पुजारी,भारत पुजारी, शरद गौतम, होरीलाल शर्मा, प्रदीप अवस्थी, महेन्द्र, सतीश चौहान, दलवीर सिंह अत्री, कुलदीप जौशी, विजय यादव, प्रदीप सिद्ध, सागर नागर, कपिल तिवारी, अफाक खान, सौख सैनी, चिरंजी सैनी, कर्मचन्द सैनी, गजराज सैनी, संजीव अत्री, मुकेश शर्मा, संजय दीक्षित, हरी राम, अमीर चौधरी आदि वकील मौजूद थे।

भवनों में लगे हों अग्नि सुरक्षा के उपकरण: रविंद्र कुमार

गुरुग्राम। जिला में आग लगने की घटनाओं को रोकने और उन पर नियंत्रण पाने के लिए सिविल डिफेंस संगठन अग्निशमन विभाग के साथ मिलकर जागरूकता अभियान चला रहा है। इसके लिए अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में सिविल डिफेंस के वालंटियरों की टीमें गठित की जाएंगी। सिविल डिफेंस संगठन के उप नियंत्रक व गुरुग्राम एसडीएम रविंद्र कुमार ने कहा कि गुरुग्राम शहर प्रदेश का आईटी हब, औद्योगिक एवं व्यवसायिक केंद्र के रूप में जाना जाता है। पिछले कुछ समय से आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होना साइबर सिटी के लिए चिंता का विषय है। इन घटनाओं पर अंकुश पाने के लिए सिविल डिफेंस ने फैक्ट्रियों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में अग्निशामक यंत्र स्थापित करने, गैस के रिसाव को रोकने के लिए लोगों में जागरुकता लाने तथा शार्ट सर्किट जैसे हादसों के प्रति आम जन को सचेत करने के लिए जनजागरुकता की मुहिम शुरू की है। शैक्षणिक संस्थाओं व हाउसिंग सोसायटीज में जाकर सिविल डिफेंस के वालंटियर व पदाधिकारी सेमीनार का आयोजन कर रहे हैं। एसडीएम ने कहा कि आग से सुरक्षा के लिए रिहायशी क्षेत्र व औद्योगिक इलाकों में दमकल विभाग के सहयोग से मॉक ड्रिल आयोजित की जाएंगी। हर एक बिल्डिंग का नियमित रूप से फायर सेफ्टी ऑडिट होना चाहिए। संगठन के सीनियर चीफ वार्डन नरेश शर्मा व चीफ वार्डन मोहित शर्मा स्वयंसेवकों के साथ मिलकर जनसुरक्षा और आपदा प्रबंधन के जागरूकता अभियान को चला रहे हैं।

नगर निगम ने 48 मिनट में किया समस्या का समाधान

गुरुग्राम। गुरुग्राम के सूरत नगर निवासी गुरदीप कौर के चेहरे पर उस समय खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब उनकी प्रॉपर्टी टैक्स आईडी से संबंधित शिकायत का समाधान मात्र 48 मिनट में ही हो गया। अपनी शिकायत का इतनी तीव्र गति से समाधान होने से उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त किया। सोमवार को गुरदीप कौर अपने प्रॉपर्टी टैक्स आईडी से संबंधित शिकायत लेकर नगर निगम गुरुग्राम द्वारा आयोजित समाधान शिविर में पहुंची थी। यहां पर संयुक्त आयुक्त प्रदीप कुमार ने उनकी शिकायत को ध्यानपूर्वक सुना। मौके पर ही मौजूद जोनल टैक्सेशन अधिकारी पंकज कुमार को निर्देश दिए कि शिकायत का समाधान तुरंत ही किया जाए। जेडटीओ ने अपनी टीम के साथ प्रॉपर्टी आईडी संबंधी सभी प्रक्रियाएं पूरी करके मात्र 48 मिनट में शिकायतकर्ता की प्रॉपर्टी आईडी तैयार करके उन्हें सौंपी। शिकायतकर्ता ने बताया कि सूरत नगर फेज-2 में उनका 100 वर्ग गज का मकान है, जिसकी प्रॉपर्टी आईडी बनी हुई थी। अप्रैल में उन्होंने अपने मकान का 50 वर्ग गज हिस्सा दूसरे को बेच दिया।

व्यापार मंडल व नेहरू युवा केन्द्र ने चलाया सफाई अभियान

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

'दिवाली विद माय भारत वाली' कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को ब्यापार मंडल व नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सहयोग से एक कार्यक्रम का आयोजन मार्किट नंबर 1, स्थित सिद्धपीठ श्री हनुमान मंदिर से शुरू किया गया।

इस अवसर पर ब्यापार मंडल के प्रधान राजेश भाटिया ने सभी को दीपावली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व सभी लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि लाए, ऐसी वह कामना करते है। उन्होंने कहा कि नेहरू युवा केंद्र ने जो मुहिम शुरू की है, वह काबिलेतारीफ है क्योंकि दीपावली का पर्व आते ही हम जिस प्रकार से अपने घरों में सफाई करते है, ठीक उसी प्रकार हमें अपने आसपास भी साफ सफाई करनी चाहिए, कूड़े का उठान करवाना चाहिए क्योंकि दीपावली का सही अर्थ ही साफ-सफाई होता है क्योंकि जहां-साफ-सफाई होती है, वहां परमात्मा का वास होता है इसलिए वह नेहरू युवा केंद्र संगठन की इस पहल का स्वागत करते है और इसमें उन्हें भरपूर सहयोग करने का आश्वासन भी देते है। प्रधान राजेश पाटिल ने अंत में कहा कि आज व्यापार मंडल तिकोना पार्क से सफाई कार्यक्रम प्रारंभ करके तिकोना पार्क क्षेत्र की सफाई का कार्य किया जाएगा।

कार्यक्रम में नेहरू युवा केन्द्र से जिला युवा अधिकारी प्रियंका मलिक ने कार्यक्रम सहयोगी संस्थान ब्यापार मंडल फरीदाबाद के प्रधान राजेश भाटिया व उनकी पूरी टीम का धन्यवाद किया इसी के साथ साथ उन्होंने नगर निगम के कर्मचारियों का भी इस सफाई अभियान कार्यक्रम में महत्वपूर्ण सहयोग देने हेतु धन्यवाद किया।

खेल मंत्री से ग्रामीणों ने गांव में स्टेडियम बनवाने की मांग की

पलवल। गांव थंतरी के ग्रामीणों ने गांव के सरपंच प्रतिनिधि धीरज सिंह के साथ खेल मंत्री गौरव गौतम से मुलाकात की और गांव में युवाओं के लिए स्टेडियम की मांग की. गांव के युवाओं में खेलों के प्रति बढ़ते रुझान को लेकर स्टेडियम की मांग की गई सोमवार को गांव थंतरी के सरपंच प्रतिनिधि ग्रामीणों के साथ खेल मंत्री गौरव गौतम से उनके निवास पर पर मिले उन्होंने खेल मंत्री से गांव में स्टेडियम बनवाने की मांग रखी ग्रामीणों ने कहा कि उनके गांव के युवाओं में खेलों के प्रति रुझान बढ़ रहा है इसलिए उन्हें गांव में एक स्टेडियम की आवश्यकता है। फिलहाल गांव के युवा सड़कों पर खेलों का अभ्यास करते हैं जहां उन्हें जान का खतरा बना रहता है। कई बार सड़क पर अभ्यास करते समय हादसा भी हो जाता है इसलिए युवाओं को एक स्टेडियम की आवश्यकता है।

जिले का विकास ही हमारी प्राथमिकता: नागर

● खाद्य मंत्री ने डीलरों को दी चेतावनी, कहा- राशन में गड़बड़ की तो लाइसेंस किए जाएंगे रद्द

● तिलपत में जोहड़ के पुनर्निर्माण तथा सौंदर्यीकरण का हवन कर किया शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले एवं मुद्रण एवं स्टेशनरी विभाग के स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री राजेश नागर ने कहा कि जनता ने उन्हें जो प्यार और आशीर्वाद दिया है वह सदैव ही मुझ पर बना रहे। गत रात्रि हरियाणा सरकार में स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री राजेश नागर का एच के पब्लिक स्कूल, हरकेश कॉलोनी और तिलपत धाम में पहुंचने पर गांववासियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

इस अवसर पर राज्यमंत्री राजेश नागर ने गांव के बुजुर्गों के साथ मिलकर तिलपत में 98 लाख की लागत से होने वाले जोहड़ के पुनर्निर्माण और सौंदर्यीकरण के लिए हवन कर कार्य का शुभारंभ किया।

नागर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में विधानसभा चुनाव में भाजपा की लगातार तीसरी बार एतिहासिक जीत के बाद नायब सिंह सैनी एक बार पुन: प्रदेश के मुख्यमंत्री बने हैं और प्रदेश की 2.85 करोड़ जनता के विकास और कल्याण के लिए काम कर रहे हैं।

नागर ने कड़े शब्दों में डिपो होल्डर को कहा कि ज्यादातर शिकायत डिपो होल्डरों की मिलती है। कभी काम राशन देने तो कभी राशन न देने की और लोगों को राशन के लिए बार बार चक्कर भी लगाने पड़ते है। उन्होंने कहा की अगर कोई डिपो होल्डर ऐसा करता है तो उसकी तुरंत शिकायत करें ऐसी डिपो होल्डर का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा।

पटेल ने किया अखण्ड भारत का निर्माण: मंडाविया

● सरदार वल्लभ भाई की 149वीं जयंती पर राष्ट्रीय अधिवेशन में बोले केंद्रीय मंत्री मनसुख

● गुर्जर समाज का आजादी दिलाने में अहम योगदान: राजेश नागर

पीएनएस। मेरठ/फरीदाबाद

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा 1908 की ओर से चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी में सरदार बल्लभ भाई पटेल की 149वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय अधिवेशन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से आए समाज के प्रबुद्ध लोगों ने भाग लिया।

भारत सरकार के कैबिनेट मंत्री (खेल एवं युवा मामले) मनसुक मंडाविया व हरियाणा के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेश नागर ने बतौर मुख्य अतिथि समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अंगेजों द्वारा विभक्त भारत को अखण्ड बनाया। देश को आजाद करते समय अंग्रेजों ने इसे खण्ड-खण्ड करने का प्रयास किया। इस प्रयास को विफल करके सरदार पटेल ने अखण्ड भारत का निर्माण किया। समारोह में देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया गया। उप्र के राज्य मंत्री सोमेंद्र तौमर ने सरदार पटेल के पद चिन्हों पर चलने का आह्वान किया। यशवीर सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष गुर्जर महासभा ने समारोह में पहुंचे अतिथियों का स्वागत किया।

फरीदाबाद से समारोह में शिरकत करने पहुंचे हरियाणा के राज्य मंत्री नागर ने कहा कि मैं मेरठ की धरा को प्रणाम करते हुए समस्त समाज का आभारी हूं। गुर्जर समाज ने हमेशा देश के प्रहरी की भूमिका निभाई है। गुर्जर समाज शौर्य पराक्रम और देशभक्ति का पर्याय रहा है।

श्री नागर ने कहा देश ही नहीं मेरठ की इस धरा पर भी गुर्जर समाज का आजादी दिलाने में अहम योगदान रहा है। मेरठ के शहीद धन सिंह कोतवाल गुर्जर ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेज़ों से लड़ने का बिगुल बजाया था। उन्होंने समाज को संगठित रहने का आह्वान करते हुए कहा कि गुर्जर समाज का क्रान्ति में भी अहम योगदान रहा है। कोतवाल धन सिंह गुर्जर शहीद थे। पन्ना धाय जैसी वीरांगना पैदा हुई, जिसने अपने बेटे चन्दन का बलिदान देकर उदय सिंह के प्राण बचाए। नागर ने आयोजकों को सफल कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि अब समय है समाज को नई दिशा देने की। हरीश पाल पूर्व सांसद मेरठ, तेजपाल नागर विधायक दादरी, अतुल प्रधान विधायक सरदना, विरेंद्र सिंह पूर्व मंत्री, हरीचंद भाटी पूर्व मंत्री, सुरेंद्र नागर राष्ट्रीय सचिव, प्रदीप गुर्जर प्रदेश महासचिव, केवी मावी अध्यक्ष, गोपाल धुनी, राजेश तंवर पूर्व पार्षद, सुधीर नागर, अमन नागर, जयवीर खटाना, संतराम बडौली, सुरेंद्र विधुडी व मुनीश चंदीला समेत इलाके के प्रबुद्ध लोग मौजूद थे।

आवारा पशुओं को पकड़ने के लिए निगम चला रहा अभियान

● तीन दिन में करीब 150 पशु पकड़कर गौशाला में भेजे गए

सड़कों पर घूमने वाले पशुओं को पकड़ती नगर निगम की टीम।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नगर निगम द्वारा सड़कों पर खुले घूमने वाले पशुओं को पकड़ने के लिए बड़े स्तर पर अभियान चलाया हुआ है। इसके तहत पिछले 3 दिन में लगभग 150 पशु पकड़कर गौशालाओं में भिजवाए गए हैं। आगे भी यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

नगर निगम आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ के अनुसार हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा गत दिनों आयोजित बैठक में सड़कों पर खुले में घूमने वाले पशुओं को पकड़ने के निर्देश दिए गए थे। इन निर्देशों की पालना में निगम क्षेत्र में खुले घूमने वाले पशुओं को पकड़ने के लिए बड़े स्तर पर अभियान शुरू किया गया है।

अभियान के तहत निगम टीमों ने गोल्फ कोर्स रोड, एसपीआर, सेक्टर-45, 46, 39, न्यू पालम विहार, चकरपुर, नाथूपुर सहित अन्य क्षेत्रों पिछले तीन दिनों में लगभग 150 पशुओं को पकड़कर गौशालाओं में भिजवाया है।

निगमायुक्त ने कहा कि ऐसे लोगों पर सख्ती की जाएगी, जो बार-बार चेतावनी देने के बावजूद भी अपने पशुओं को सड़कों पर बेसहारा छोड़ देते हैं। इसके अलावा, पशु पकडने वाली टीमों के कार्य में बाधा उत्पन्न करने वालों के खिलाफ भी संबंधित थानो में मुकदमें दर्ज करवाए जाएंगे। उन्होंने सड़कों पर पशुओं को बेसहारा छोड़ने वालों को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि वे ऐसा ना करें अन्यथा उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि संबंधित व्यक्तियों पर प्रति पशु 5000 रुपए का जुर्माना भी लगाने का प्रावधान है।

रत्नावली सांस्कृतिक विरासत सहेजने का अनूठा प्रयासः सीएम

नायब सिंह सैनी, पूर्व मंत्री सुभाष सुधा, भाजपा नेता जयभगवान शर्मा व कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने किया शिल्प मेले का अवलोकन

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का रत्नावली महोत्सव प्रदेश के गीत संगीत, कला, संस्कृति को लेकर युवा पीढ़ी को जोड़ने का एक अद्भुत संगम है। इतना ही नहीं विश्वविद्यालय ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान, कौशल विकास, खेल, कला, संस्कृति सहित सभी क्षेत्रों में देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी सोमवार को विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित 4 दिवसीय राज्य स्तरीय रत्नावली महोत्सव में बोल रहे थे। इससे पहले मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पूर्व मंत्री सुभाष सुधा, भाजपा नेता जयभगवान शर्मा डीडी, कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा, कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने शिल्प मेले का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेशवासियों को दीपावली सहित सभी त्योहारों की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हरियाणा हमेशा शाश्वत ज्ञान परम्परा, सम्पन्नता और योद्धाओं की वीरता का प्रमुख केन्द्र रहा है। वैदिक काल से ही इस प्रदेश की सांस्कृतिक सम्पन्नता के साक्ष्य उपलब्ध हैं। इस वैदिक काल की संस्कृति और संस्कारों को रत्नावली महोत्सव सहेजने का काम कर रहा है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि विश्वविद्यालय, ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान, कौशल विकास, खेल, कला, संस्कृति सहित सभी क्षेत्रों में देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक है। देश में ऐसे कम ही विश्वविद्यालय हैं जो शिक्षा के साथ-साथ अपने क्षेत्र व देश की संस्कृति को सहेजने का काम कर रहे हैं। रत्नावली महोत्सव हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का अनूठा प्रयास है। पिछले 37 वर्षों से इस विश्वविद्यालय में रत्नावली महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश के गीत-संगीत, कला-संस्कृति को लेकर युवा पीढ़ी को जोड़ने का यह अद्भुत प्रयास है। हरियाणा की सांस्कृतिक विकास यात्रा में इस उत्सव की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। इस महोत्सव में हर वर्ष नए-नए प्रयास कर युवाओं को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि हरियाणवी लोक संस्कृति को पुनर्जीवित करने व युवा विद्यार्थियों में अपनी महान विरासत पर गर्व का भाव जगाने में रत्नावली महोत्सव अपनी सार्थक भूमिका निभा रहा है। साहित्य-संगीत व कला का यह अद्भुत संगम है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने मुख्यमंत्री व अन्य मेहमानों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि 1985 में 8 विधाओं और 300 कलाकारों से रत्नावली महोत्सव का आगाज हुआ था। आज इस महोत्सव के मंच पर 34 विधाओं में 3000 से ज्यादा छात्र-छात्राएं अपनी प्रतिभा का हुनर दिखा रहे हैं। यह विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है। यह विश्वविद्यालय प्रदेश का पहला सरकारी विश्वविद्यालय है जिसका ए-प्लस-प्लस ग्रेड है। यह विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, खेलों में विश्वविद्यालय में तीसरे स्थान पर, सांस्कृतिक गतिविधियों में 1100 विश्वविद्यालयों में तीसरे स्थान पर और 500 राजकीय विश्वविद्यालयों में पहले स्थान पर है। कुलसचिव प्रो. संजीव शर्मा ने मेहमानों का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम के मंच का संचालन युवा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग के निदेशक प्रो. विवेक चावला ने किया।

चार दिवसीय राज्य स्तरीय सांस्कृतिक समारोह का समापन

- कुलपति बोले, हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को देश विदेश में पहुंचाने में सफल रहा रत्नावली महोत्सव
- आरकेएसडी पीजी कॉलेज, कैथल ने जीती ओवर ऑल ट्राफी, केयू कैम्पस रहा रनर अप

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि इस बार का रत्नावली महोत्सव पूरी तरह से सफल रहा है। हरियाणा की युवा पीढ़ी रत्नावली के माध्यम से हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का काम कर रही है। ऐसी पीढ़ी पर प्रदेश के हर व्यक्ति को नाज है। इस महोत्सव में इस बार बड़ी संख्या में युवाओं ने प्रतिभागिता व सहभागिता की है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि सभी के सामूहिक प्रयास से हरियाणवी संस्कृति का प्रतीक रत्नावली महोत्सव सफल हो पाया है। उन्होंने कहा कि नैक ए-प्लस-प्लस ग्रेड विश्वविद्यालय बनने के बाद वह दिन दूर नहीं जब विश्वविद्यालय इंस्टिट्यूट ऑफ एमिनेंस बनकर विश्व के विश्वविद्यालयों में अपना अहम् स्थान बनाएगा। वे सोमवार को श्रीमद् भगवद् गीता सदन में 25 से 28 अक्टूबर तक चार दिनों तक चलने वाले चार दिवसीय राज्य स्तरीय हरियाणा दिवस समारोह के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि रत्नावली के मंच से विद्यार्थियों के अंदर छिपी प्रतिभा को पहचाने का, अच्छा इंसान बनने का तथा टीम वर्क के साथ काम करने का अवसर मिला। रत्नावली के माध्यम से हम विद्यार्थी उद्यमी व एन्टरप्रेन्योर कैसे बने, उसका भी विकास करने में सफल हुए हैं। विवि में आयोजित होने वाले मंचीय कार्यक्रम विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ आयोजित होने चाहिए। यह मंच विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने का मंच हैं।

पंजाब विवि प्रकरण: हरियाणा-पंजाब करेंगे बैठक

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

- वर्षों से अटकी है हरियाणा के कॉलेजों की मान्यता व अनुदान

चंडीगढ़ स्थित पंजाब विश्वविद्यालय से हरियाणा के कॉलेजों को मान्यता दिलाने तथा विवि की सीनेट में हरियाणा का हिस्सा बहाल करने का मुद्दा एक बार फिर से गरमा गया है।

विश्वविद्यालय को हरियाणा से अनुदान जारी करवाने तथा हरियाणा के कॉलेजों की संबद्धता पर चर्चा के लिए पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया फिर से पंजाब व हरियाणा के मुख्यमंत्रियों तथा मुख्य सचिवों के साथ बैठक करेंगे। इस मीटिंग के लिए जल्द ही तारीख तय कर दी जाएगी। उत्तरी क्षेत्रीय परिषद (एनजेडसी) की स्थायी समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि राज्यपाल कटारिया इन दोनों मुद्दों को हल करने के लिए दोनों मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

पंजाब विश्वविद्यालय के लिए अनुदान का मामला केंद्र और पंजाब सरकार से जुड़ा हुआ है। चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 में केंद्र सरकार ने पीयू को मिलने वाले वार्षिक अनुदान को 294 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 346 करोड़ रुपए कर दिया है, जिसमें 6 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का प्रावधान है। इसके अलावा, पंजाब सरकार भी पीयू के लिए वित्तीय सहायता के लिए विचार कर रही है।

हरियाणा सरकार ने वित्तीय सहायता के बदले पंचकूला, अंबाला और यमुनानगर जिलों के कॉलेजों को पीयू से संबद्धता देने का अनुरोध किया है। यह मुद्दा अंतर्राज्यीय गतिरोध का कारण बन गया है, जिसमें पंजाब और हरियाणा के बीच आपसी सहमति नहीं बन पाई है। पिछली बार हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने विश्वविद्यालय के कुल व्यय का 40 प्रतिशत तक योगदान देने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इसे अस्वीकार कर दिया था। पंजाब विधानसभा ने भी 30 जून 2023 को एक प्रस्ताव पारित कर पीयू की मौजूदा स्थिति को बदलने के किसी भी प्रयास का विरोध किया था।

जिंदल ने लंबित कार्यों को शीघ्र पूरा करने के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

सांसद नवीन जिंदल ने सोमवार को लघु सचिवालय स्थित कान्फ्रेंस हाल में ई दिशा बैठक ली। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से विकास कार्यों की समीक्षा ली। इस दौरान उनके साथ विधायक अशोक अरोड़ा, विधायक मनदीप चट्ठा, उपायुक्त राजेश जोगपाल, पुलिस अधीक्षक वरुण सिंगला, जिला परिषद की चेयरपर्सन कवलजीत कौर उपस्थित रहे। सांसद ने कहा कि अधिकारी लंबित विकास कार्यों को तेज गति प्रदान करें। अधूरे कामों को जल्द से जल्द पूरा किया जाए।

सांसद ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब इसी जिला से चुने गए हैं। इसलिए यहां विकास कार्यों में अधिक लाभ मिलने की उम्मीद है। इसका फायदा उठाने में अधिकारी उनका सहयोग करें। अब वे नियमित रूप से अधिकारियों की बैठक लेंगे। उन्हें केवल आंकड़े नहीं, बल्कि रिजल्ट भी चाहिए। अधिकारी समस्या के साथ-साथ उसका समाधान लेकर भी उनके सामने आएं। उन्होंने कहा कि स्वच्छता में सभी का सहयोग जरूरी है। अकेले सरकार इतने बड़े लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकती। सांसद ने अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि विकास कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही सहन नहीं की जाएगी।

प्रदेश में खेल सुविधाओं की होगी मैपिंग

- खेल राज्य मंत्री ने ली अधिकारियों की बैठक
- डीएसओ करेंगे खेल स्टेडियमों का निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम ने प्रदेश के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वह खेलों की आउटपुट रिपोर्ट तैयार करें। जिला खेल अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र के स्टेडियम का दौरा करके खेल सुविधाओं को बढ़ाने के लिए मैपिंग कराने के निर्देश जारी किए हैं।

खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम ने खेल विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान जिलेवार चल रही खेल नर्सरियों और खेल प्रोजेक्टों की समीक्षा की। गौरव गौतम ने जिला खेल अधिकारियों को कड़ी हिदायत दी कि अपने जिले में सभी खेल स्टेडियम, नर्सरियों व अन्य खेलकूद गतिविधियों के आयोजन स्थलों का निरीक्षण करें। इन स्थानों पर जो खिलाड़ी कोचिंग ले रहे हैं, उनको मिलने वाली सुविधाओं का विशेष ध्यान रखें। खेल मंत्री ने निर्देश दिए हैं कि आउट पुट रिपोर्ट में खिलाड़ियों से लेकर खेल सुविधाओं से संबंधित सुझाव शामिल किए जाएंगे। रजिडेंशल अकादमी में खिलाड़ियों के रहने की सुविधा, सफाई और खाने की व्यवस्थाओं की जांच करें और इन अकादमियों का माहौल कैसा है और खिलाड़ियों को किन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

दिवाली पर बिजली कर्मियों को 2000 का गिफ्ट बोनस

- वित्त विभाग ने दीपावली से पहले वेतन जारी करने के दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

दीवाली पर बिजली कर्मियों को दो हजार रुपये का गिफ्ट बोनस मिलेगा। दक्षिणी हरियाणा बिजली वितरण निगम (डीएचबीवीएन) की ओर से सभी सभी एसई और एक्सईएन को पत्र लिखकर निर्देश जारी किए हैं। डीएचबीवीएन की ओर से सभी ग्रुप-सी व डी के नियमित, अनुबंधित और एचकेआरएन के जरिये लगे कर्मियों को दो हजार रुपये का टोकन उपहार दिया जाएगा।

ठेकेदार के माध्यम से डीसी रेट पर लगे अंशकालिक कर्मियों को भी टोकन उपहार दिया जाएगा। पहली नवंबर से पहले और दीपावली त्योहार तक सभी कर्मियों के खाते में टोकन उपहार की राशि भेजने के निर्देश दिए गए हैं। टोकन उपहार का भुगतान ग्रुप हेड श्रेणी से किया जाएगा।

बिजली कर्मियों को पर्व से पहले मिलेगा वेतन

वित्त विभाग की ओर से बिजली निगमों को निर्देश जारी किए गए हैं कि अनुबंधित, एचकेआरएन और डीसी रेट पर कार्यरत कर्मियों का वेतन दिवाली से पहले 29 अक्टूबर तक जारी किया जाए और नियमित कर्मियों का वेतन 30 अक्टूबर तक भेजा जाए। अक्टूबर महीने के अंत में दिवाली और पहली नवंबर को हरियाणा दिवस, 2 नवंबर को शनिवार व तीन नवंबर को रविवार होने के चलते वित्त विभाग की ओर से यह फैसला लिया गया है। वहीं बिजली निगमों की ओर से यह भी निर्देश दिए गए हैं कि यदि किसी कर्मी की हाजिरी में कोई त्रुटि है तो उसे नवंबर माह में समायोजित किया जाएगा।

पराली जलाने के मामलों में आई गिरावट

- आज 13 जगह फानों में आग लगाने के मामले आए सामने, यमुनानगर में 3 और करनाल व कुरुक्षेत्र में 2-2 घटनाएं
- सरकार का दावा गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष 29 फीसदी आई कमी
- 418 किसानों की रेड एंट्री, 192 के खिलाफ दर्ज हुई एफआईआर

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद धान के अवशेष (फानों) में आग लगाने को रोकने के लिए प्रशासनिक अधिकारी अलर्ट हुए। वहीं सरकार की सख्ती के बाद न केवल प्रशासनिक अधिकारी जागे, बल्कि किसानों ने भी प्रबंधन की ओर कदम बढ़ाया। अभी तक प्रदेशभर में 415 किसानों की रेड एट्री और 192 के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

कृषि विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक अभी तक प्रदेश में फाने जलाने 713 मामले सामने आए हैं, जोकि पिछले वर्ष 2023 के मुकाबले 29 फीसदी कम हैं, जबकि वर्ष 2023 में 27 अक्टूबर तक 1005 मामले सामने आए थे। हालांकि पिछले 15 दिन की अवधि में तकरीबन सा? चार सौ फाने जलाने के मामले सामने आए हैं। पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट में हरियाणा के मुख्य सचिव को लगी फटकार के बाद प्रशासनिक अमला अलर्ट हुआ। यही कारण है कि हरसेक और सेटेलाइट तस्वीरों की वेरीफिकेशन करने को लेकर ग्राम सचिव से लेकर पटवारी व सरपंच भी चुस्त दिखाए दिए। यही नहीं गांवों पुलिस की गश्त भी फानों में आग लगाने के अंकुश में काफी कारगर साबित हुई।

सरकार द्वारा पराली जलाने से रोकने के लिए प्रयासों और प्रोत्साहनों के बावजूद, कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है। अब तक कुल 334 चालान जारी किए गए हैं और 8.45 लाख रुपये का जुर्माना किसानों से वसूला गया है। इसके अतिरिक्त, अब तक ऐसे किसानों के खेतों के रिकॉर्ड में कुल 418 रेड एंट्री दर्ज की गई है तथा 192 किसानों के खिलाफ पुलिस में केस दर्ज किये गए है।

हरियाणा में उठाए जा रहे सार्थक कदमः हरियाणा में फसल अवशेष प्रबंधन के लिए राज्य सरकार द्वारा सार्थक कदम उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री नायब सैनी के निर्देशानुसार सरकार ने राज्य-विशिष्ट योजना लागू की है, जिसके तहत एक ओर जहां किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए वित्तीय सहायता दी जा रही है तो वहीं दूसरी ओर पंचायतों को जीरो बर्निंग लक्ष्य दिए जा रहे हैं, ताकि पराली जलाने की घटनाओं पर अंकुश लग सके। सरकार द्वारा ग्राम स्तर पर किसानों को पराली न जलाने के लिए जागरूक किया जा रहा है। सरकार के प्रयासों के परिणामस्वरूप 28 अक्टूबर तक 83,070 किसानों ने 7.11 लाख एकड़ धान क्षेत्र के प्रबंधन के लिए पंजीकरण कराया है। पंजीकरण की अंतिम तिथि 30 नवंबर है।

हरियाणा व राजस्थान नहीं करेंगे बसों के चालान

चंडीगढ़। हरियाणा व राजस्थान के बीच पिछले चार दिनों से चल रहा विवाद सोमवार को समाप्त हो गया। अब दोनों राज्यों की पुलिस एक-दूसरे राज्य की बसों के चालान नहीं करेगी। एक महिला कांस्टेबल से टिकट मांगने को लेकर शुरू हुए विवाद का सोमवार को पटाक्षेप हो गया। हरियाणा के परिवहन मंत्री ने इस बारे में हरियाणा व राजस्थान के अधिकारियों से बातचीत करके मामला शांत कराया। इस पूरे मामले में जांच के बाद संबंधित आरोपियों पर कार्रवाई की जाएगी। एक-दूसरे राज्य की बसों के विरूद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।

पिछले सप्ताह हरियाणा की एक महिला पुलिसकर्मी तीन दिन पहले राजस्थान रोडवेज की बस में सफर कर रही थी। बस कंडक्टर के किराया मांगने पर महिला ने किराया नहीं दिया। जिस पर कंडक्टर ने महिला पुलिसकर्मी को बस से नीचे उतारने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं उतरी। इस बहस का वीडियो काफी वायरल हुआ है। जिसके बाद हरियाणा व राजस्थान पुलिस एक दूसरे की बसों का चालान करने में जुटी गईं। रविवार की रात तक हरियाणा द्वारा राजस्थान की जहां 90 तथा राजस्थान द्वारा हरियाणा की 26 बसों के चालान कर दिए गए। कार्रवाई के डर से हरियाणा की बसें बीच रास्ते से ही वापस लौटना शुरू हो गई। सोमवार को अनिल विज ने पहले हरियाणा के अधिकारियों से बात की इसके बाद राजस्थान के अधिकारियों के साथ बातचीत की।

Public Notice

This is to inform the general public that **Mrs. Tamanna** is the owner ofPlot area measuring 244 sq. yds., out of Khasra no.894, new no.115, situated in old Lal Dora Abadi of village Alipur, Tehsil Alipur, Distt. North Delhi-110036through Sale Deed dated 22.02.2023as doc. No.557executed by Mr. Ashutosh Goyal and Mr. Prateek Goyal in favour of Mrs. Tamanna.

Mrs. Tamanna is in the process of mortgaging the said properties with **SMFG India Credit Co. Ltd. (Formerly Fullerton India Credit Co. Ltd.).** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-day period will not be considered binding with respect to the said properties or the interests of our client.

If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-days period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683,e-mail: accounts@lvnorth.in**

PUBLIC NOTICE

"It is to informed to the public at large that one Sh. Mahender Kumar Jain S/o Sh. Kishori Lal Jain (PAN AAHPJ8551C) (Aadhar 631122754627) R/o BK-5, West, Club Road, Shalimar Bagh, North West, Delhi who is owner of Eastern Side Portion measuring 100 sq. yds. of Property bearing Municipal No.F-15 area measuring 200 Sq. Yds, Situated at Shastri Nagar, Delhi-110052, hereinafter referred to as "said property" having acquired the same alongwith Rajeev Jain and Pawan Kumar Jain by virtue of Sale Deed dated 23.10.1991 (Doc. No. 6341) executed by Kali Ram which was later on rectified by 1 Ashok Kumar Jain 2 Seema Jain 3 Sudha Jain 4 Neelam Jain and 5 Usha Jain (LRs of late Kali Ram Jain who died on 21.02.2012) vide Rectification Deed dated 25.09.2012 (Doc. No.10086) and Gift Deed dated 11.10.2018 executed by Rajeev Jain and Pawan Kumar Jain w.r.t. their 2/3rd share bearing Doc. No. 11624.The said Property has been mortgaged by the owner with HDFC Bank Limited (our client). Further, It is hereby declared that title of the said Property, is absolutely valid, clear and marketable and there is no dispute / Litigation pending in any court of law, in respect of said Property. Whosoever, is having any objection to said mortgage OR any Person having any type of claim/right/title/interest over the said property may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 14 days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.

S.C. VARSHNEY (Sr. Advocate) R-14/178, Raj Nagar, Ghaziabad-201 002, Mob: 8882600727

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल इंडसइंड बैंक लिमिटेड, जिसकी एक शाखा न्यू टॉवर, 12वीं मंजिल, हयात रीजेंसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक-ए, जिला केंद्र भीकाजी कामा प्लेस, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110066 में है, वह श्री अंजीव सक्सेना को टावर नंबर ए में 11वीं मंजिल पर 1550 वर्ग फीट सुपर एरिया वाले आवासीय फ्लैट नंबर ए-1106 की सुरक्षा के खिलाफ ऋण सुविधा देने का इरादा रखता है, जो ग्रुप हाउसिंग कॉम्प्लेक्स में स्थित है जिसे **"केडीपी ग्रैंड सवाना"** के नाम से जाना जाता है, राज नगर एक्सटेंशन, एनएच-58, ग्राम नूर नगर, परगना लोनी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) की राजस्व संपदा में स्थित है, जिसे आगे **"उक्त संपत्ति"** के रूप में संदर्भित किया गया है। श्री रणबीर सिंह 07.05.2012 के सेल डीट के आधार पर उक्त संपत्ति के मालिक थे रणबीर सिंह की 09.01.2024 को बिना वसीयत के मृत्यु हो गई, और उनके पीछे केवल निम्नलिखित कानूनी उत्तराधिकारी रह गए अर्थात 1) श्रीमती सुखमिंदर कौर, 2) मिस मेहर माकन और 3) मिस जेसिका माकन, जो श्री रणबीर सिंह के निधन के परिणामस्वरूप हिंदू उत्तराधिकार कानून के अनुसार उक्त संपत्ति के संयुक्त मालिक होने का दावा करते हैं। अब 1) श्रीमती सुखमिंदर कौर, 2) मिस मेहर माकन और 3) मिस जेसिका माकन उक्त संपत्ति को श्री अंजीव सक्सेना और श्रीमती रूपकमल सक्सेना को बेचना चाहते हैं। यदि किसी भी व्यक्ति (व्यक्तियों) को उपरोक्त संपत्ति में किसी भी तरह से अधिकार, शीर्षक या हित / दावे के संबंध में कोई आपत्ति या दावे हैं, तो अपने दावे(दावों) / आपत्ति(ओं) के संबंध में सभी सहायक दस्तावेजों के साथ लिखित में अधोहस्ताक्षरी से तत्काल संपर्क करें। यदि इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 7 दिनों की अवधि के भीतर उनके ऐसा कोई दावा प्राप्त नहीं होता है, तो यह माना जाएगा कि उपरोक्त संपत्ति में किसी का भी कोई अधिकार, शीर्षक या हित नहीं है और भले ही किसी के पास कोई दावा / आपत्ति हो, उसने इसे छोड़ दिया है।

हिमांशु आहूजा (अधिवक्ता)
संपर्क नंबरः 9810310373, 011-41830049
ई-मेल पताः alolegals@gmail.com

Public Notice

(In case of chain titledeed)

NOTICE is hereby given that one **Smt. Goma Sharma** was owner of Front Side First Floor, "said floor", without roof right, area measuring 60 Sq Yds. (out of 100 Sq. Yds.) built on portion of Plot No. B-64, out of Khasra No. 150, situated in the area of Village Bindapur, Delhi State Delhi, Colony Known as B-Block, Nand Ram Park, Uttam Nagar, New Delhi.(hereinafter referred to "said property") vide Sale Deed dated 29.06.2021regd. as doc. no. 11188executed by Sh. Vaneet Narula & Sh. Ashok Kumar Goyal in favour of **Smt. Goma Sharma** in respect of said Property. Smt. Goma Sharma who has agreed to create mortgage in respect of said property in favour of my/our clients IDFC FIRST Bank Limited (Branch Address: PlotNo. 6B, Pusa Road, Rajendar Nagar, New Delhi - 110060)

If any person, body, individual, institution having any claim and /or objection in respect of or against or relating to or touching upon said property or part of the property by way of sale, exchange, lease, lien, mortgage, charge, encumbrance, gift, trust, easement, maintenance, inheritance, testamentary deposition or otherwise or having in their custody any title, documents pertaining the said property shall communicate the same to the undersigned at my address within 07 days from the publication of this notice with documentary evidence in support thereof, failing which all the claim, of such person shall be considered to have been waived and or abandoned. Any objections raised after the completion of the 07 days shall not be binding upon the said property or my Client.

Place: Noida Dated this 28thday of Oct.2024
Sd/- Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301 Landline(s): +910120-3101683
e-mail: accounts@lvnorth.in

संस्कृति व परंपराओं का संरक्षण कर रही सरकार: नायब सिंह

डेरा सिद्ध बाबा गरीब नाथ मठ सरस्वती तीर्थ के आठमान, बत्तीस धुनी एवं शंखाढाल भंडारा में बोले मुख्यमंत्री

- डबल इंजन सरकार नायब सैनी के नेतृत्व में हरियाणा में उन्नति के पथ पर निरंतर अग्रसरः सीएम योगी आदित्यनाथ

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश सरकार पिछले 10 वर्षों से लगातार हरियाणा की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण कर रही है। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है। सनातन धर्म का संरक्षण करते हुए देश को आगे ले जाने का काम किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बना है, जिससे हमारे पूर्वजों के सपने भी साकार हुए हैं।

मुख्यमंत्री सोमवार को कुरुक्षेत्र के पिहोवा में डेरा सिद्ध बाबा गरीब नाथ मठ सरस्वती तीर्थ द्वारा आयोजित आठमान, बत्तीस धुनी एवं शंखाढाल भंडारा के आयोजन पर संत सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर नायब सिंह सैनी ने कहा कि हाल ही में आम चुनाव सम्पन्न हुए हैं और लोकतंत्र के इस महापर्व में प्रदेशवासियों ने राष्ट्र को आगे ले जाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में संत-महापुरुष सम्मान एवं प्रचार प्रसार योजना के तहत जितने भी संत-महापुरुषों की जयंतियां हैं, उन्हें राज्य स्तर पर मनाकर संतों का मान-सम्मान बढ़ाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत बुजुर्गों को धार्मिक स्थलों की निशुल्क यात्रा भी करवाई जा रही है। भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र भूमि जहां पर उन्होंने गीता का संदेश दिया था, उसको विकसित करते हुए 48 कोस की परिधि में जितने भी धार्मिक स्थल आते हैं, उनका जीर्णोद्धार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार बीते दस वर्षों से लगातार संस्कृति का संरक्षण कर रही है। हमारी संस्कृति और संस्कारों का संरक्षण दुनिया के लोग करते है, हमारा देश सनातन देश रहा है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यहां पहुंचने पर प्रदेशवासियों की ओर से स्वागत करते हुए कहा कि योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश मे फैले हुए जंगल राज को खत्म करने का काम किया है। आज वहां पर हमारी बहनें सुरक्षित हैं तथा उत्तर प्रदेश की सरकार ने लोगों को सुरक्षा देने का काम किया है। उन्होंने इस मौके पर सभी को आगामी त्यौहार दीपावली व भैया दूज की भी बधाई दी।

इस मौके पर योगी आदित्यनाथ ने उपस्थित संतों व अन्य गणमान्य लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपनी विरासत का संरक्षण करते हुए 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए मिलकर कार्य करना है। डबल इंजन की सरकार मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा में उन्नति के पथ पर निरंतर अग्रसर हो रही है। उन्होंने प्रदेशवासियों द्वारा हरियाणा में भाजपा की तीसरी बार सरकार बनाने व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को दोबारा मुख्यमंत्री बनाने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि समाज में अच्छे लोग चुनकर आते हैं तो उसके परिणाम भी अच्छे आते हैं।

यूग्रो कैपिटल लिमिटेड
चौथी मंजिल, टॉवर 3, इक्विनॉक्स बिजनेस पार्क, एलबीएस रोड, कुर्ला, मुंबई 400070

अचल संपत्तियों की बिक्री के लिए बिक्री सूचना

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम 2002 के नियम 8 और 9 के परंतुक के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत अचल परिसंपत्ति(ओं) [प्रतिभूत परिसंपत्तियों] की बिक्री के लिए 15 दिनों की ई-नीलामी बिक्री सूचना।

एतद्द्वारा सामान्य रूप से जनता को और विशेष रूप से उधारकर्ता (ओं) और गारंटर (ओं) को नोटिस दिया जाता है कि नीचे वर्णित सुरक्षित संपत्ति (संपत्तियों) को यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड ("सिक्योर्ड क्रेडिटर") को गिरवी/चार्ज किया गया है, जिसका कब्जा सुरक्षित लेनदार के अधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया है, नीचे उल्लिखित तिथि और समय पर "जैसा है वैसा है" और "जैसा है वह कहां है" और "जो कुछ भी है" पर बेचा जाएगा, नीचे उल्लिखित बकाया राशि की वसूली के लिए और नीचे उल्लिखित उधारकर्ता (ओं) और गारंटर (ओं) से सुरक्षित लेनदार के कारण राशि की वसूली की तारीख तक उस पर आगे ब्याज और अन्य खर्चों के लिए। आरक्षित मूल्य, बयाना धन जमा (ईएमडी) और ईएमडी जमा की अंतिम तिथि भी नीचे उल्लिखित है:

उधारकर्ता(ओं)/गारंटर (ओं) का विवरण	मांग सूचना का विवरण	नीलामी का विवरण	
1. अक्षत एंटरप्राइजेज 2. विनोद यादव 3. प्रमोद यादव 4. सुनीता यादव 5. आदित्य प्लास्टिक 6. शांति यादव ऋण खाता संख्या : HCFDELSEC00001043233	सूचना की तारीख: 19-10-2023	आरक्षित मूल्य :	रु. 2,44,21,500/-
		ईएमडी :	रु. 24,42,150/-
	बकाया राशि: रु. 2,39,30,103/- 18-10-2023 को	ईएमडी जमा की अंतिम तिथि:	16-11-2024
		नीलामी की तारीख :	18-11-2024
		नीलामी का समय :	11 AM to 01 PM
		वृद्धिशील मूल्य:	रु. 1,00,000/-

सुरक्षित संपत्ति का विवरण : अचल संपत्ति का वह सभी टुकड़ा और पार्सल संपूर्ण फ्री-होल्ड संपत्ति नंबर 109 और 110, प्रत्येक, 25.90 वर्ग मीटर, ब्लॉक-एच, पॉकेट -1, सेक्टर -11 लेआउट में स्थित है, रोहिणी आवासीय योजना रोहिणी, दिल्ली की योजना।

बिक्री के विस्तृत नियमों और शर्तों के लिए, कृपया यू ग्रो कैपिटल लिमिटेड/सिक्योर्ड क्रेडिटर की वेबसाइट पर दिए गए लिंक को देखें। यानी www.ugrocapital.com या अधोहस्ताक्षरी से authorised.officer@ugrocapital.com पर संपर्क करें

दिनांक : 29-10-2024 , स्थान : दिल्ली
एसडी/- सोहम भट्टाचार्य, अधिकृत अधिकारी, यूग्रो कैपिटल लिमिटेड

पश्चिम एशिया

युद्ध का बढ़ा खतरा

पश्चिम एशिया में अनेक मोर्चों पर युद्ध का खतरा बढ़ गया है, हालांकि अमेरिका तनाव घटाने का प्रयास कर रहा है। हाल में ईरान पर इज़राइली हवाई हमलों और बाद में जवाबी कार्रवाइयों ने दोनों देशों के बीच लंबे समय से जारी टकराव को हवा दी है जिससे पश्चिम एशिया में युद्ध का विस्तार हो सकता है। ईरानी आक्रमण की प्रतिक्रिया में इज़राइल द्वारा ईरानी सैनिक ठिकानों पर हुए हवाई हमलों में चार ईरानी सैनिकों की मौत हुई है। ईरान के सहयोगी हिजबुल्ला ने फौरन उत्तरी इज़राइल के आवासीय क्षेत्रों में अनेक राकेट दागे जिससे टकराव बढ़ने की संभावना पैदा हो गई है। युद्ध के वर्तमान चरण में आरोप है कि इज़राइली लड़ाकू विमानों ने तेहरान के सैनिक और राडार ठिकानों पर हमले के लिए ईराकी वायुक्षेत्र का प्रयोग किया। इज़राइल इन कार्रवाइयों को ईरान और उसके क्षेत्रीय सहयोगियों के खतरे को 'निष्प्रभावी' बनाने के नाम पर सही ठहराता है जिनमें लेबेनान के हिजबुल्ला शामिल हैं। ईरान ने इन हमलों को अपनी संप्रभुता पर हमला बताते हुए निन्दा की तथा जवाब देने के अधिकार पर जोर दिया है। अमेरिका ने इज़राइल का समर्थन करते हुए इसकी 'लौह मजबूती' पर जोर दिया है। उसने आगे हमले करने के खिलाफ ईरान को कठोर चेतावनी भी दी है। इस बीच संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटरेस ने तत्काल युद्ध रोकने का आह्वान करते हुए हिंसा के अनियंत्रित ढंग से फैलने की आशंका पर चिन्ता जताई है।

इस टकराव का असर लेबेनान पर भी पड़ रहा है जहां से हिजबुल्ला ने उत्तरी इज़राइल पर लक्षित राकेट हमले किए हैं। इससे पश्चिम एशिया की परस्पर जुड़ी राजनीति के संकेत मिलते हैं। शक्तिशाली मिलिशिया हिजबुल्ला के तेहरान से निकट संबंध हैं और वह इस क्षेत्र में ईरान का सबसे मजबूत सहयोगी है। उसकी संलिप्तता से संकेत मिलता है कि यह टकराव संभवत: इज़राइल-ईरान के बीच द्विपक्षीय युद्ध से आगे बढ़ सकता है और इसमें अन्य राज्य व गैर-राज्य कारक भी शामिल हो सकते हैं। इस टकराव में अन्य देशों का शामिल होना खतरनाक होगा। लेबेनान पहले ही राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता की स्थिति से गुजर रहा है, अब वह युद्ध के मैदान में बदल कर पूरे 'लेवांत' को अस्थिर कर सकता है। इसी प्रकार इज़राइली कार्रवाइयों के लिए अपना हवाई क्षेत्र देने में ईराक की कथित संलिप्तता से देश में शिया चरमपंथी संगठन सक्रिय हो सकते हैं। इसके साथ ही ईराक, सीरिया और यमन में ईरान के सहयोगी संगठन भी समन्वित रूप से इज़राइल या क्षेत्र में अमेरिकी हितों के खिलाफ हमले कर सकते हैं। इससे टकराव सीमित करने के प्रयास और कठिन हो जाएंगे तथा अनेक मोर्चों पर असमान युद्ध छिड़ सकता है। इन स्थितियों में तत्काल ऐसे राजनयिक प्रयासों की आवश्यकता है जिनसे स्थिति को और बिगड़ने से रोका जा सके। इज़राइल को युद्ध से केवल अमेरिका विरत कर सकता है। वह युद्धविराम के लिए इज़राइल को तैयार कर सकता है। इसके साथ ही अमेरिका इज़राइल व क्षेत्रीय सहयोगियों पर अपने प्रभाव का प्रयोग कर उनको संयम बरतने को कह सकता है। इसके साथ ही वह ईरान को राजनयिक रूप से युद्ध भड़काने से रोक सकता है। वास्तव में, अमेरिका भी युद्ध के विस्तार के खिलाफ है। ऐसे में वाशिंगटन और तेहरान के बीच सीधा संपर्क युद्ध भड़काने वाली गलतफहमियां दूर कर सकता है। इसके अलावा भारत व रूस जैसी अंतरराष्ट्रीय शक्तियां या ओमान जैसी क्षेत्रीय शक्तियां परोक्ष वार्ता के माध्यम से युद्धविराम का प्रयास कर सकती हैं। यह युद्ध हर कीमत पर रोका जाना चाहिए।

बढ़ते गैस आयात की चुनौती

सरकार द्वारा घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयासों के बावजूद नीतिगत बाधाओं तथा मूल्य सीमा के कारण ऊर्जा क्षेत्र की प्रगति प्रभावित हो रही है।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय-एमपीएनजी के अंतर्गत पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल के अनुसार, वर्तमान वित्त वर्ष की पहली छमाही में सितंबर, 2024 तक प्राकृतिक गैस-एनजी का भारत में उपभोग लगभग 12 प्रतिशत बढ़ा और यह पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 36.850 बिलियन मीट्रिक स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर-बीपीएमएससीएम पहुंच गया। लेकिन प्राकृतिक गैस या आमतौर से द्रव रूप में आयातित एलएनजी में इसी कालखंड में 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 18.975 बीएमएससीएम तक पहुंच गया। उपभोग के प्रतिशत के रूप में यह अप्रैल-सितंबर, 2024 में 51.5 प्रतिशत हो गया, जबकि 2023 के इसी कालखंड में यह 46.8 प्रतिशत था। हालांकि, देश में अप्रैल-सितंबर, 2024 कालखंड में प्राकृतिक गैस के उत्पादन में 2 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई। राज्य स्वामित्व वाले तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम-ओएनजीसी ने इस कालखंड में 9.407 बीएमएससीएम का उत्पादन किया जो पिछले वित्त वर्ष के इसी कालखंड की तुलना में 4 प्रतिशत कम था।

ओएनजीसी का कुल घरेलू उत्पादन में योगदान लगभग 84 प्रतिशत है। लेकिन 8 प्रतिशत योगदान वाले आयल इंडिया लिमिटेड ने इस कालखंड में 4 प्रतिशत अधिक उत्पादन किया और वह 1.577 बीएमएससीएम पहुंच गया। 15 अगस्त, 2021 को राष्ट्र को 75वें स्वतंत्रता दिवस पर संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए गैस-आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का आह्वान किया था। तब उन्होंने उम्मीद जताई थी कि कुल ऊर्जा में प्राकृतिक गैस का हिस्सा वर्तमान 6 प्रतिशत से बढ़ कर 15 प्रतिशत हो जाएगा। लेकिन 6 प्रतिशत हिस्से के लिए भी भारत को अपनी प्राकृतिक गैस आवश्यकता का 50 प्रतिशत से अधिक आयात करना पड़ रहा है।

आज भी यह स्थिति नहीं बदली है। कुल ऊर्जा में प्राकृतिक गैस का हिस्सा 15 प्रतिशत करने के लिए इसके उपभोग में वृद्धि कर इसे 184.222 बीएमएससीएम करना होगा, जबकि वर्तमान समय में यह 73.689 बीएमएससीएम है। वर्तमान उपभोग में 35.739 बीएमएससीएम का घरेलू उत्पादन शामिल है। यदि घरेलू उत्पादन वर्तमान स्तर पर ठहरा रहा तो 15 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एलएनजी का आयात बढ़ा कर 148.483 बीएमएससीएम करना होगा। इसका अर्थ है कि भारत को 80 प्रतिशत से अधिक आयात करना होगा और आयात निर्भरता बढ़ेगी। इस गणित में यह अनुमान शामिल है कि कुल ऊर्जा उपभोग में कोई वृद्धि नहीं होगी, लेकिन यह तेज गति से बढ़ रहा है। देश में ऊर्जा की मांग में अगले पांच साल में 7 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की आशा है। इस परिदृश्य में प्राकृतिक गैस का 15 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आयात और बढ़ाना होगा। ऐसे में यह विचार करना उचित होगा कि उत्पादन बढ़ाने में क्या बाधा है।

भारत में प्राकृतिक संसाधनों की कोई कमी नहीं है। भारत में 26 'सेडीमेंट्री बेसिन' हैं जिनका विस्तार 3.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर है और इनमें हाइड्रोकार्बनों की खोज की जा सकती है। लेकिन इनमें से केवल 6 एसबी में वाणिज्यिक दोहन हो रहा है और वह भी क्षमता से बहुत कम है। हाइड्रोकार्बन दोहन में बहुत अधिक पूंजी लगती है और यह तकनीक-केन्द्रित बिजनेस है जिसमें मुनाफा होने में बहुत लंबा समय लगता है। इसके साथ ही गहरी, बहुत गहरी व उच्च दाब तथा उच्च तापमान पर दोहन क्षेत्रों में डिलिंग बहुत जोखिम भरी होती है। यह बात खासकर कृष्णा-गोदावरी-केजी बेसिन जैसे क्षेत्रों के बारे में लागू होती है। लेकिन इन क्षेत्रों में ही अधिकतम भंडार होने की आशा है। एक्सानमोबिल, चेवरान, टोटल, आदि बहुराष्ट्रीय कंपनियों-एमएनसी के पास ऐसी तकनीक और संसाधन हैं। इनको भारतीय हाइड्रोकार्बन क्षेत्रों में दीर्घकालीन बोली बोलने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार को उनको 'टिकाऊ' आधार पर आकर्षक मुनाफों का प्रस्ताव देना होगा। इसके लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि एनजी क्षेत्रों में खोज व विकास के लिए उनके सामने कोई नियामकीय बाधा न हो और वे 'मुनाफे' वाली कीमतों पर गैस बेचने के लिए 'स्वतंत्र' हों। मोदी सरकार ने अब तक नियामकीय बाधायें दूर करने में काफी प्रयास किए हैं। अभी हाल तक सुरक्षा कारणों से कुल 1.73 मिलियन वर्ग किलोमीटर आफशोर समुद्री क्षेत्रों में से 0.69 मिलियन वर्ग किलोमीटर में 'अनुमति नहीं' थी।

केन्द्र ने लगभग इस पूरे क्षेत्र को दोहन एवं उत्पादन गतिविधियों के लिए खोल दिया है। अब वह आबंटित क्षेत्रों के पूरे आर्थिक जीवन के लिए पट्टे के अधिकार दे रहा है। इसका विस्तार 30 साल तक हो सकता है और उपलब्ध भंडार के आधार पर इसका विस्तार भी किया जा सकता है, जबकि पुरानी व्यवस्था में यह समय तथा विस्तार का समय बहुत कम था। सरकार ने वन संरक्षण कानून में भी संशोधन कर हाइड्रोकार्बन खोज के लिए त्वरित पहुंच की व्यवस्था की है। इसके लिए 'हाइड्रोकार्बन एक्सप्लोरेशन एंड लाइसेंसिग पालिसी'-हेल्प जारी की गई है जिसे 'ओपेन एकरेज लाइसेंसिंग पालिसी'-ओएएलपी, 2017 भी कहा जाता है। इसके लिए फर्मों को अपनी पसंद का क्षेत्र चुनने का अवसर भी दिया गया है, जबकि पहले उनको सरकार द्वारा प्रस्तावित क्षेत्र स्वीकार करना होता था। इसके साथ ही ओएएलपी के अंतर्गत आपरेटर को समग्र लाइसेंस दिया जाता है जिसमें हाइड्रोकार्बन के सभी रूपों की खोज की अनुमति होती है, फिर चाहे वे प्राकृतिक गैस हों, 'शेल गैस' या कोल बेड मीथेन-सीबीएम आदि हों। लंबे समय से खोज एवं उत्पादन कंपनियां जटिल प्रक्रियाओं का शिकार थीं जिनमें अनेक अनुमतियों, नौकरशाही लाल फीताशाही, आदि का हर चरण पर हस्तक्षेप होता था। एनईएलपी के अंतर्गत क्षेत्र आबंटन प्राप्त करने वाली कंपनियों को 37 प्रक्रियाओं का पालन करना होता था।

'टीम मोदी' ने इस मामले में काफी उदारीकरण कर नौकरशाही अनुमतियों को समाप्त किया है तथा दस्तावेजों के स्वयं प्रमाणन एवं क्षेत्रों की पूर्व अनुमति स्वीकृति को लागू किया है। हालांकि, इन कदमों से सहायता मिली है, पर मार्केटिंग की स्वतंत्रता तथा अच्छी कीमतें पाने के आश्वासन के बिना ईएंडपी फर्में उत्साहित नहीं हैं। तथाकथित 'लीगेसी फील्डों' पर ओएनजीसी व ओआईएल का प्रभुत्व है और ये दो तिहाई घरेलू सप्लाई के जिम्मेदार हैं। केन्द्र सरकार का इस पर पूरा नियंत्रण है कि सप्लाई 'किसे' और 'किस कीमत' पर दी जाएगी। 1 अप्रैल, 2023 से किरीट पारिख कमेटी की संस्तुतियों के अनुसार यह कीमत प्रति मिलियन ब्रिटिश थर्मल यूनिट-बीटीयू के आधार पर निर्धारित की जाती है। इसका निर्धारण भारतीय कच्चे तेल बाजार के मासिक औसत के आधार पर होता है और हर महीने इसका नवीनीकरण होता है। इस प्रकार निर्धारित कीमत की सीमा प्रति एमबीटीयू 6.50 डालर है जिससे यह फार्मूला बेकार हो गया है। अब नौकरशाहों ने ओएनजीसी व ओआईएल द्वारा की गई सप्लाई पर 20 प्रतिशत प्रीमियम की घोषणा की है जो केवल 'न्यू वेल्स' या 'वेल इंटरवेंशन्स' पर लागू होगी। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या वे मूल्यों पर सीमारोपण कर अच्छी कीमतें देना चाहते हैं? इसके साथ ही 'न्यू वेल्स' या 'वेल इंटरवेंशन्स' का निर्धारण पूर्णत: उनके विवेकाधिकार पर निर्भर करेगा। इस प्रकार कृष्णा-गोदावरी व आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में काम करने वाली कंपनियां भी इनके दायरे में आ जाती हैं। ऐसे में तत्काल 'अनुमान योग्य' व 'आकर्षक' नीतिगत हस्तक्षेप की जरूरत है ताकि प्राकृतिक गैस की खोज और उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। किरीट पारिख समिति को ऐसी भावी समस्याओं का अनुमान था और उसने जटिल गैस क्षेत्रों को 1 जनवरी, 2026 तक 'वि-नियमित' करने तथा लीगेसी क्षेत्रों से 1 जनवरी, 2027 से मूल्य नियंत्रण हटाने का सुझाव दिया था। सरकार को इन संस्तुतियों को लागू करना चाहिए। इसके साथ ही उसे प्राकृतिक गैस के बड़े उपभोक्ताओं को सीधे सब्सिडी देने की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि सप्लाई श्रृंखला में प्राकृतिक गैस जैसी आधारभूत चीजों का मूल्य-नियंत्रण न करना पड़े।

दैवीय ऊर्जा की तलाश

इस दिवाली को शक्तिशाली शक्तियों से जुड़ने का समय बनाएं, उनकी उपस्थिति को अपनाकर अपनी आध्यात्मिक यात्रा को समृद्ध करें।

अश्विनी गुरुजी
(लेखक, आध्यात्मिक गुरु हैं)

ब्रह्मांड विभिन्न शक्तियों (दिव्य ऊर्जा) के प्रभाव में संचालित होता है। जैसे-जैसे कोई योगिक अभ्यास (साधना) में आगे बढ़ता है, इन ऊर्जाओं को सीधे अनुभव किया जा सकता है। 365 दिनों में से प्रत्येक दिन एक विशिष्ट शक्ति से जुड़ा होता है, यही कारण है कि योग में अनुशासन और नियमित दैनिक अभ्यास बनाए रखना महत्वपूर्ण है। एक भी दिन छूट जाने से उस दिन की शक्ति के साथ संबंध टूट सकता है, जिससे संभवत: पूरे वर्ष की साधना पीछे रह सकती है। ब्रह्मांड में, हर तत्व आपस में जुड़ा हुआ है, इसलिए जब एक पहलू की उपेक्षा की जाती है, तो यह सब कुछ प्रभावित करता है - हमारा शरीर, पृथ्वी और यहां तक कि अन्य ग्रह और तारे भी। प्रत्येक शक्ति एक दिन से जुड़ी होती है, लेकिन इन ऊर्जाओं तक पहुँचने के लिए अनुष्ठानों की आवश्यकता नहीं होती है। योगिक और तांत्रिक परंपराओं में, केवल साधना ही शक्ति से जुड़ने की कुंजी है। प्रत्येक शक्ति के रूप (स्वरूप) को समझना आवश्यक है। जबकि हर रूप का एक विशिष्ट नाम होता है, नाम केवल तभी प्रकट होते हैं जब शरीर विशेष साधनाओं के माध्यम से तैयार हो जाता है। बुनियादी स्तर पर, जब आप अपने गुरु के साथ ध्यान करते हैं, तो आप उनमें अलग-अलग रूप देख सकते हैं, जैसे कि सूर्य या चंद्रमा। क्या आपने कभी सोचा है कि ये रूप क्या दर्शाते हैं?

कई साधकों ने ध्यान के दौरान सूर्य को देखने की बात कही है। सूर्य को इतना महत्वपूर्ण क्या बनाता है? यदि आप मणिपुर चक्र (नाभि केंद्र) पर ध्यान केंद्रित करते हुए और राम मंत्र का जाप करते हुए सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्य को देखते हैं, तो आप अपने शरीर में एक चमक उभरती हुई देखेंगे। एक महीने के भीतर, आप स्पष्ट रूप से अलग दिखने लगेंगे। हालाँकि, सावधानी का एक शब्द- किसी भी योगिक अभ्यास को एक गुरु के मार्गदर्शन में किया जाना चाहिए जो इसे आपकी क्षमता के अनुसार अनुकूलित कर सके। इसी तरह, चंद्रमा एक आकर्षक ऊर्जा स्रोत है। यह केवल सूर्य के प्रकाश को दर्शाता है, फिर भी यह पूर्णिमा के दौरान ज्वार और यहाँ तक कि पृथ्वी की सतह को भी प्रभावित कर सकता है। क्या आपने कभी सोचा है कि चंद्रमा को क्या खास बनाता है? पूर्णिमा की रातों में, जानवर आक्रामक व्यवहार कर सकते हैं, और दुर्घटनाओं और संघर्षों की घटनाएँ बढ़ जाती हैं। ये केवल बुनियादी अवलोकन हैं जो इन खगोलीय रूपों के बारे में कुछ गहरी बात का संकेत देते हैं। उनके वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव की आवश्यकता होती है, जो सनातन क्रिया के उचित अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है। चंद्रमा शांत और शांतिपूर्ण लग सकता है, लेकिन यह वास्तव में सूर्य की तुलना में अधिक अस्थिर है। जब आप गुरु के मार्गदर्शन में चंद्रमा का निरीक्षण करते हैं, तो आप इसके रूप में निहित मंत्रों को समझ सकते हैं। कुछ शक्तियाँ सीधे दिखाई नहीं देती हैं और केवल अन्य शक्तियों के माध्यम से ही उन तक पहुँचा जा सकता है। ये अनुभव योग की नींव बनाते हैं। प्रत्यक्ष अनुभव के बिना, योग अधूरा रहता है। प्रकृति, अपने सभी अजूबों के साथ-विभिन्न रंगों के फूलों से लेकर ऊपर के आकाश तक-शक्तियों के छिपे हुए रूपों को समाहित करती है। यदि आप बिना पलक झपकाए, गुरु के मार्गदर्शन में इन तत्वों का निरीक्षण करते हैं, तो आप पा सकते हैं कि आपके शारीरिक और मानसिक असंतुलन दूर होने लगे हैं। हालाँकि, अनुशासन (नियम) आवश्यक है। अभ्यास निरंतर होना चाहिए, और यदि किसी के पास शक्ति की क्षमता नहीं है या उसका मार्गदर्शन करने वाला कोई गुरु नहीं है, तो व्यवधान उत्पन्न होंगे।

हमारे आस-पास की हर चीज़ में शक्ति का सार होता है, और ये ऊर्जाएँ आसानी से सुलभ हैं। जब कोई व्यक्ति स्थिर हो जाता है और किसी विशेष शक्ति पर ध्यान केंद्रित करता है, तो वह उसका अनुसरण करना शुरू कर देती है, उसके जीवन को सशक्त बनाती है। दिवाली से पहले के नौ दिन विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि इस अवधि के दौरान विशिष्ट शक्तियों का जमावड़ा होता है। हमारे पूर्वजों ने इन दिनों के दौरान शरीर को मजबूत बनाने और इन ऊर्जाओं को ग्रहण करने के लिए तैयार करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करने की सलाह दी थी। इस दौरान, अपने मन को अपने भीतर केंद्रित रखें, क्योंकि इन नौ दिनों के दौरान की गई साधना महीनों के अभ्यास के बराबर होती है। जैसे-जैसे दिवाली नजदीक आती है, खासकर अमावस्या (नए चंद्रमा की रात), जब हम दीये जलाते हैं, यह शक्ति साधना के लिए एक उपयुक्त समय होता है। यहां तक कि एक साधारण व्यक्ति जो एक अनुभवी साधक नहीं है, वह भी ध्यान में आंखें बंद करके बैठकर शक्ति के स्वरूप को देख सकता है। शुद्ध हृदय से, कोई भी व्यक्ति बिना किसी विस्तृत अनुष्ठान के इन दिव्य ऊर्जाओं का अनुभव कर सकता है। इस दिवाली को शक्तिशाली शक्तियों से जुड़ने का समय बनाएं, उनकी उपस्थिति को अपनाकर अपनी आध्यात्मिक यात्रा को समृद्ध करें।

आप की बात

मन की बात

देश भर में वर्तमान दौर में डिजिटल अरेस्ट की घटनाएं सुर्खियों मे है। सायबर अपराधी लोगों को डिजिटल अरेस्ट कर के लाखों रुपए ऐंठ रहे है। देश के इस ज्वलंत मुद्दे को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में उठाते हुए चिंता जताई। उन्होंने जनता से ऐसी घटनाओं से बचने के उपाय और करगर तरीके बताएं। मन की बात में यह प्रकरण उठाना प्रधानमंत्री मोदी की संवेदनशीलता का प्रमाण है। इससे लगता है कि वे जनता के सामने आने वाली समस्याओं से आहत होते हैं तथा उनका पता लगाने के साथ उनके समाधान भी खोजते हैं। इसके पहले शायद ही किसी राजनेता ने प्रधानमंत्री पद पर पहुंचने के बाद ऐसी संवेदनशीलता का प्रमाण दिया हो। मोदी द्वारा यह मुद्दा उठाने से देश की जनता को विश्वास हो गया है कि जल्द ही साइबर अपराधियों के खिलाफ सभी स्तरों पर कठोर कदम उठाए जाएंगे। विडंबना है कि विपक्ष के शायद ही किसी नेता ने इस ज्वलंत विषय पर ध्यान दिया हो। इस तथ्य पर भी गौर किया जाना चाहिए कि साइबर अपराधियों समेत जब इंटरनेट का दुरुपयोग करने वालों के खिलाफ केन्द्र सरकार कोई कठोर कानून बनाती है तो विपक्षी इसे लेकर चीख-पुकार मचाने लगाते हैं। इंटरनेट का दुरुपयोग करने वालों के खिलाफ कठोरतम कानून बनाना बहुत जरूरी हो गया है।

- योगेश जोशी, बड़वाह

संघ का समर्थन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि एक रहेंगे तो नेक रहेंगे, बटेंगे तो कटेंगे।उनके इस वक्तव्य का समर्थन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी किया है। संघ की अखिल भारतीय बैठक में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने भी कहा है कि अगर हम एक नही हुए तो कटेंगे ही। उन्होंने कहा कि अगर भारत का हिन्दू समाज जाति, भाषा, प्रान्त, अगड़ा, पिछड़ा में बटेगा तो निश्चित ही कटेगा। संघ का समर्थन केवल योगी आदित्यनाथ के बयान के कारण न होकर अतीत की परिस्थितियों से मिले सबक के आधार पर भी है। हिंदुओं को विभिन्न जातियों, भाषाओं, क्षेत्रों व संस्कृतियों के आधार पर बांटकर उनको गुलाम बनाने का प्रयास प्राचीनकाल से ही चल रहा है। मुगलों के बाद अंग्रेजों ने भी यही रणनीति अपनाई थी। आजादी के समय हुआ देश का बंटवारा भी बड़ी सीमा तक हिंदुओं में बिखराव के कारण हुआ था। विडंबना है कि आजादी के बाद जारी तुष्टीकरण व जातिवाद की नीतियों ने हिंदुओं में विभाजन बनाए रखा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश के साथ ही हिंदुओं को एकजुट करने के प्रयास तेज किए हैं। उम्मीद है कि इन प्रयासों को भविष्य में और बल मिलेगा।

- ललित शंकर, गाजियाबाद

मिलावट की मार

दीपावली के पहले मिलावटी चीजों पर सरकार ने हर साल की तरह हमला बोला है। कहीं काजू नकली मिल रहे हैं तो कहीं मिठाइयों में कीड़े, कहीं खाने के तेलों में पाम आयल की मात्रा सीमा से अधिक मिल रही है तो कहीं नकली दूध के चर्चे हो रहे हैं। इन सब नकली चीजों से बीमारियां बढ़ने और स्वास्थ्य खराब होने की पूरी संभावना है। हालांकि, दीपावली जैसे त्योहार के पहले खाद्य विभाग तथा विभिन्न स्तरों पर अन्य सरकारी विभागों की कार्रवाई स्वागत योग्य है, लेकिन विडंबना है कि इसके बाद नकली चीजों पर छापेमारी की खबरें विरले ही सामने आती हैं। त्योहारों में मिठाइयों व अन्य खाद्य सामग्रियों की खपत बढ़ जाती है, लेकिन बाकी साल भर भी यह एक स्तर पर बनी रहती है। इसलिए जमीनी स्तर पर खाद्य विभाग को पूरे साल सक्रिय रहना चाहिए। इसके साथ ही पुलिस और खुफिया विभाग को संगठित पैमाने पर बड़े मिलावटखोरों के खिलाफ कार्रवाई में सहयोग देना चाहिए। देश में जिस प्रकार भांति-भांति के माफियाओं के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाती है, उसी प्रकार मिलावट-माफिया व नकली सामान-माफिया के खिलाफ भी लगातार कार्रवाई होनी चाहिए। इससे जनता का स्वास्थ्य बेहतर होगा।

-शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

प्रदूषित यमुना

दिल्ली में यमुना दूषित होती जा रही है जिस पर सभी समाचार पत्रों एवं टीवी में चर्चा भी जारी है। सभी जानते हैं कि दिल्ली की जनता को इससे पानी की सप्लाई की जाती है। लेकिन स्वयं यमुना का पानी ही साफ नहीं है। कई स्थानों पर झाग के रूप में यमुना नदी की गंदगी ऊपर आ चुकी हैं। यह दिल्ली के वातावरण को भी खराब करता है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पहली बार सरकार बनने पर ही कहा था कि हम यमुना को पूरी तरह साफ कर देंगे और उसमें डुबकी लगाएंगे, लेकिन आज तक ऐसा नहीं हो पाया है। अभी हाल ही में दिल्ली बीजेपी के नेता वीरेंद्र सचदेवा ने यमुना के पानी में विरोध स्वरूप डुबकी क्या लगाई, वे गंभीर रूप से बीमार हो गए और उनको अस्पताल जाना पड़ा। यह घटना बताती है कि दिल्ली की यमुना का प्रदूषण इतने बुरे स्तर पर पहुंच गया है। दिल्ली देश की राजधानी है, अत: यहां यमुना के साथ हवा का प्रदूषण देश को सारी दुनिया के सामने नीचा दिखाता है। ऐसे में बयानबाजी छोड़ कर यमुना को स्वच्छ बनाने की जरूरत है।

-वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

सज्जन का संरक्षण और दुर्जन शक्ति को रसातल में पहुंचाना ही परम कर्तव्यः योगी

हरियाणा दौरे पर पहुंचे मुख्यमंत्री आदित्यनाथ, कुरुक्षेत्र में शंखाढाल भंडारा में हुए शामिल

● कहा, पहले के सभी कुंभों से विराट और भव्य होगा 2025 का प्रयागराज महाकुंभ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ हरियाणा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार को कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के पेहोवा स्थित डेरा सिद्ध बाबा गरीबनाथ मठ में आयोजित आठमान, बत्तीस धुनी व शंखाढाल भण्डारा कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उन्होंने यहां देशभर से पधारे संतों और भक्तजनों को संबोधित किया। उन्होंने सभी को प्रयागराज महाकुंभ में आमंत्रित करते हुए कहा कि सनातन धर्म का ये सबसे बड़ा आयोजन पिछले सभी कुंभों से ज्यादा विराट और भव्य होगा। योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम में पधारे हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को विधानसभा चुनाव में जीत की बधाई भी दी। योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश की जनता का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हरियाणावासियों ने प्रदेश में डबल इंजन की सरकार को फिर से चुनकर भगवान श्रीकृष्ण के उद्घोष परित्राणाय साधुनाम, विनाशाय च दुष्कृताम को सिद्ध करके दिखा दिया है। हरियाणा वालों ने दिखा दिया है कि जनता का जनार्दन रूप कैसा होता है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सज्जन शक्ति का संरक्षण और दुर्जन शक्ति को रसातल में पहुंचाना ही परम कर्तव्य है। उन्होंने धर्म के दो हेतुओं अभ्युदय और निश्रेयस की चर्चा करते हुए कहा कि अभ्युदय का पालन किये बिना निश्रेयस की प्राप्ति संभव नहीं है।

उन्होंने कहा कि धार्मिक क्षेत्र में अच्छे संत चाहिए होंगे। विकास के लिए सही लोग चुनने होंगे। अच्छे लोगों को चुनेंगे तो परिणाम भी अच्छा आएगा। हरियाणा के लोगों ने अच्छा फैसला किया है। ये भगवान श्रीकृष्ण के कर्मयोग की धरा है। जिन लोगों ने बुरा किया उनका परिणाम भी बुरा ही होगा। दूसरा हेतु है निश्रेयस का। एक योगी या सदृहस्थ अपने अभ्युदय को विस्मृत करके कभी निश्रेयस की प्राप्ति नहीं कर सकता। जब सांसारिक उत्कर्ष के लिए निष्काम भाव से काम करेंगे तो परिणाम हमें इसी रूप में देखने को मिलेगा। ये इस लोक में विकास के साथ लोकमंगल की कामनाओं की सिद्धि का आधार तो तय करेगा ही, इसके बाद वह हमारी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। यही धर्म की दो कामनाएं हैं। इन्हीं कामनाओं को लेकर प्राचीन काल से संतों का समागम होते रहे हैं। समय समय पर इस धरा धाम को उपकृत करने वाले दैवीय महापुरुषों के माध्यम से जो विशिष्ट घटनाएं घटित हुईं वही हमारे पर्व और त्यौहार बन गये।

उन्होंने अपना संस्मरण सुनाते हुए जूनागढ़ में गुरुगोरखनाथ आश्रम के पूज्य गुरू श्रीत्रिलोकनाथ बाबू जी के भजन का उल्लेख करते हुए कहा कि 'संत हैं सुहागी, रहते सदा मगन, जाते हैं जिस लोक में करते सदा चमन'। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पेहोवा के इस स्थल से अवतारी योगी सत्यनाथ जी की परंपरा को पूरे देश में विस्तार मिला। मगर पिछली चार पीढ़ियों से यहां की स्थिति ठीक नहीं थी। मगर ये प्रसन्नता का विषय है कि महंत शेरनाथ जी ने न केवल पेहोवा, बल्कि मुजफ्फरनगर और शामली के उजड़े हुए पवित्र स्थानों में 'चमन' लाकर और सिद्धों की भावनाओं को मूर्तरूप देकर भक्तों के मन में नया विश्वास जागृत किया है। चार पीढ़ी से पतन की ओर जा रही ये पावन धरा एक योगी के आने के बाद उत्थान की ओर अग्रसर हुई है। यह नाथ संप्रदाय के एक सुप्रसिद्ध सिद्ध योगी गरीबनाथ जी की पावनधरा है।

योगी आदित्यनाथ ने काशी विश्वनाथ धाम का उल्लेख करते हुए बताया कि पहले वहं 10 श्रद्धालु भी एक साथ इकट्ठा नहीं हो सकते थे, मगर आज 50 हजार श्रद्धालु एक साथ जुट सकते हैं। इसी प्रकार अयोध्या में 500 साल बाद अपने भव्य मंदिर में भगवान श्रीराम विराजमान हो चुके हैं। ऐसे ही 2025 का महाकुंभ भी पहले के सभी कुंभ से विराट और भव्य होगा। दुनिया के इस सबसे बड़े समागम में सनातन धर्म के पूज्य संतों की उपस्थिति होगी। सभी लोकों से जुड़े हुए देवी-देवता, पितृगण और पवित्र आत्माएं भी आएंगी। पूज्य संतों का सानिध्य हम सबको प्राप्त हो इसके लिए भाजपा की डबल इंजन की सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर एक पवित्र स्थल जो हमारे सनातन धर्म, सिद्धों-संतों और अवतारी पुरुषों से जुड़ा हुआ है, उनके संरक्षण के लिए डबल इंजन की सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। विरासत का संरक्षण करके ही हम उज्ज्वल भविष्य की कामना को सार्थक कर पाएंगे। योगी आदित्यनाथ ने दीपावली पर्व की हरियाणावासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विरासत और विकास के अद्भुत संगम से ही 2047 में देश विकसित भारत और दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बनेगा।

इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, वरिष्ठ योगेश्वर श्रीमहंत शेरनाथ महाराज, नाथ संप्रदाय के उपाध्यक्ष और राजस्थान विधानसभा के विधायक श्रीमहंत बालकनाथ , समुद्रनाथ, योगी कृष्णनाथ, चैताईनाथ, लहरनाथ, राजनाथ, पूरननाथ महाराज, हरिनाथ , शेरनाथ, केशवनाथ, सुंदराईनाथ, पंचमनाथ, रूपनाथ, रविन्द्र पुरी, संपूर्णानंद, तरंगनाथ, रुद्रपुरी, भल्लेगिरी, कमलनाथ, महेशगिरी, उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री सुरेश राणा, पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल, कणिराम, सुप्रसिद्ध भजन गायक कन्हैया मित्तल सहित षड्दर्शन संप्रदाय से जुडे1 संतजन और बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

दोषी अफसरों को बचाने वाले जांच अधिकारियों पर होगी सख्त कार्रवाई

● मुख्यमंत्री ने सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग में जांच में खेल करने वाले अधिकारियों को लेकर जतायी नाराजगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार 'जीरो टॉलरेंस नीति' के तहत लगातार भ्रष्टाचार पर शिकंजा कस रही है। साथ ही, कार्यों में लापरवाही करने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी सख्त एक्शन ले रही है। इसी के तहत योगी सरकार ने सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के जांच अधिकाारियों को जांच के दायरे में आने वाले अधिकारी और कर्मचारी की रिपोर्ट को स्पष्ट करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने अधिकारियों को जांच रिपोर्ट में 'आंशिक रूप से आरोप प्रमाणित' शब्द का उल्लेख न करने के निर्देश दिये हैं। सीएम ने जांच रिपोर्ट में 'आरोप सही' या 'निराधार पाया गया' जैसे स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करने के निर्देश दिए ताकि दोषी अधिकारी और कर्मचारी के खिलाफ कार्रवाई की जा सके। सीएम ने ऐसा न करने वाले नामित जांच अधिकारी के खिलाफ सख्त एक्शन लेने के निर्देश दिये है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में सिंचाई एवं जल विभाग की समीक्षा की। इस दौरान अधिकारियों ने विभागीय लापरवाह अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ होने वाली विभागीय और अनुशासनिक कार्रवाई को नामित जांच अधिकारी द्वारा संस्थित किये जाने वाली रिपोर्ट के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जांच रिपोर्ट में नामित अधिकारी द्वारा 'आंशिक रूप से आरोप प्रमाणित' शब्द का प्रयोग किये जाने की बात बतायी। उन्होंने सीएम योगी आदित्यनाथ को बताया कि जांच रिपोर्ट में स्पष्ट आरोप न होने की वजह से कार्रवाई करने में अक्सर परेशानी आती है। सीएम ने इस जांच रिपोर्ट के नामित अधिकारियों को जांच रिपोर्ट में 'आंशिक रूप से आरोप प्रमाणित' शब्द का प्रयोग न करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि नामित जांच अधिकारी इस शब्द का प्रयोग कर कहीं न कहीं दोषी को बचाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं, विभागीय नियमावली में भी ऐसे किसी शब्द का उल्लेख नहीं है। सीएम ने कहा कि आगे से किसी भी जांच अधिकारी ने अपनी रिपोर्ट में इस शब्द का प्रयोग किया तो उसके खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा।

सीएम ने बैठक में अधिकारियों को जांच रिपोर्ट में 'आरोप सिद्ध पाया गया' या 'निराधार पाया गया' का स्पष्ट उल्लेख करने का निर्देश दिया ताकि लापरवाह अधिकारी और कर्मचारी के खिलाफ एक्शन लिया जा सके। सीएम योगी की नाराजगी पर विभाग में हड़कंप मच गया है।

सीएम योगी ने हरियाणा में नाथ पंथ के स्थलों पर प्रकट की अपनी आस्था व सम्मान

● बाबा मुकुटनाथ सिद्ध मंदिर पहुंचे योगी आदित्यनाथ, विधि-विधान से किया दर्शन-पूजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ हरियाणा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को हरियाणा के कैथल स्थित बाबा मुकुटनाथ सिद्ध मंदिर में पूजा-अर्चना कर नाथ पंथ की इस पावन स्थली को नमन किया। महंत बालकनाथ और मंदिर के अन्य संतजनों के साथ विधिवत पूजा करते हुए योगी आदित्यनाथ ने पूज्य संतजनों की समाधियों के समक्ष अपनी आस्था प्रकट की।

स्वयं गोरखनाथ मंदिर के महंत और नाथ संप्रदाय के एक प्रमुख साधक के रूप में, योगी आदित्यनाथ ने हरियाणा में नाथ पंथ के स्थलों पर अपना सम्मान और आस्था प्रकट की। सोमवार को एक दिवसीय हरियाणा दौरे पर आए यूपी के मुख्यमंत्री विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल हुए। इससे पहले उन्होंने कुरुक्षेत्र के पेहोवा स्थित डेरा सिद्ध बाबा गरीबनाथ मठ में आठमान, बत्तीस धुनी व शंखाढाल भंडारा कार्यक्रम में भाग लिया, जहां उन्होंने देशभर से आए नाथ पंथ और षड्दर्शन सम्प्रदाय के साधु-संतों से मुलाकात की। कुरुक्षेत्र में ही यूपी के मुख्यमंत्री ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से भी भेंट की।

यूपी की जेलों में बंदियों की बनाई वस्तुओं का उपयोग कर मनाया जाएगा दीपोत्सव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की विभिन्न जेलों में इस वर्ष दिवाली का उत्सव खास रहेगा, जहां बंदियों द्वारा निर्मित पारंपरिक और हस्तशिल्प वस्तुओं का उपयोग कर दीपोत्सव मनाया जाएगा।

जिला जेल उन्नाव, आगरा, मथुरा और बाराबंकी में बंदियों ने गाय के गोबर से निर्मित दियों का निर्माण किया है, जिससे पर्यावरण अनुकूल दीयों का उपयोग सुनिश्चित होगा। गाजियाबाद में मिट्टी व बिजली के दीये, कैंडल और झालर कारागार उपयोग व उपहार हेतु बनाये जा रहे हैं। वहीं अलीगढ़ जेल में महिल बंदियों द्वारा मिट्टी के दीयों पर नक़्क़ाशी की गई है।

गोरखपुर में टेराकोटा दिये बनाये जा रहे हैं। इन जेलों में इन दीयों को जेल परिसर में दीप जलाने के लिए एवं कारागार गेट के पास स्टॉल लगवाकर मुलाकातियों व आमजन को बिक्री हेतु उपलब्ध कराये जायेंगे।

जिला कारागार अयोध्या में बंदियों द्वारा निर्मित लगभग 10,000 दीपक आसपास स्थित मंदिरों में भेंट किये जायेंगे। हरदोई जिला जेल में बंदियों द्वारा लगभग 11,000 कुल्हड़ और गुल्लक तैयार किए जा रहे हैं, जो इस उत्सव को और भी खास बनाएंगे। इसी प्रकार, जिला जेल रायबरेली में मिट्टी से बने दीये, गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियाँ और गमले जैसे मिट्टी कला के उत्पाद तैयार किए गए हैं। यह उत्पाद 'एक जेल, एक उत्पाद' योजना के अंतर्गत बनाए जा रहे हैं, जो जेल के विक्रय के?द्र पर प्रदर्शिनी के माध्यम से विक्रय की जायेंगी। फतेहगढ़ जेल में मोमबत्तियों और डिजाइनर दीयों का निर्माण किया गया है, जो जेल स्तर से बंदी उत्पाद केन्द्र से विक्रय किये जायेंगे। मथुरा जेल में बंदियों द्वारा मोमबत?ती व गाय के गोबर के दीपक बनाये जा रहे हैं। जिला जेल कानपुर नगर में देवी-देवताओं के आसन और पूजा की चुनरी का निर्माण जॉबवर्क पर किया जा रहा है, जो दीपावली की पूजा के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, देवरिया जिला जेल में कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रशिक्षण प्राप्त बंदियों द्वारा इलेक्ट्रिक झालरों का निर्माण किया गया है, जिनसे जेल परिसर को सजाया जाएगा। कन्नौज में अबतक 960 इलेक्ट्रिक झालरें बनायी जा चुकी हैं जो बाजार में खूब पसंद की जा रही हैं, मोमबत्ती आरै दीयों को स्थानीय बाजार में बिक्री हेतु तैयार किया जा रहे हैं।

भाजपा व बसपा के कई नेता सपा में शामिल

लखनऊ। समाजवादी पार्टी की नीतियों, कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व के प्रति आस्था जताते हुए आज गोरखपुर के भाजपा और बसपा के कई वरिष्ठ नेता समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। अखिलेश यादव ने नए साथियों के आने से पार्टी को मजबूती मिलने की उम्मीद जताई है जबकि समाजवादी पार्टी में शामिल सभी लोगों ने 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को प्रचंड जीत दिलाने और हाल के उपचुनाव में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों की जीत के लिए एकजुट होकर काम करने का संकल्प लिया। अखिलेश यादव के समक्ष भाजपा छोड़कर प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रधानाचार्य एमजी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज गोरखपुर समाजवादी पार्टी में शामिल हुए। गोरखपुर के ही आचार्य मुकेश कुमार श्रीवास्तव ने भी समाजवादी पार्टी की सदस्यता ली। मुकेश श्रीवास्तव उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से राहुल सांस्कृतायन पुरस्कार से सम्मानित हैं। सदर लोकसभा क्षेत्र गोरखपुर से बसपा प्रत्याशी रहे जावेद सिमनानी बसपा छोड़कर समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए हैं। पिछले 20 वर्षों से वे बसपा संगठन में महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के पूर्व महानगर अध्यक्ष एवं पूर्व विधानसभा प्रत्याशी ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र गोरखपुर जफर अमीन डक्कू, जिला उपाध्यक्ष देवेन्द्र भूषण निषाद एवं जनपद चंदौली के जिला उपाध्यक्ष परवेज अहमद भी मौजूद रहे।

पुलिस लोगों की सुरक्षा करने के बजाए कर रही हत्याः अखिलेश यादव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार में प्रदेश की पुलिस व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। पुलिस लोगों की सुरक्षा के बजाय हत्या कर रही है। भाजपा सरकार में कस्टोडियल मौतों के मामले में उत्तर प्रदेश हर साल नए रिकॉर्ड बना रहा है। भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं के इशारे पर पुलिस निर्दोष लोगों को प्रताड़ित कर रही है। इस सरकार में पुलिस का व्यवहार शोषण और अत्याचारी बन गया है। गरीब जनता बेबस है। प्रदेश में हर दिन पुलिस की खराब छवि सामने आती है। पुलिस कहीं लूट कर रही है, कहीं प्रताड़ित कर रही है तो कहीं हत्याएं कर रही है। राजधानी लखनऊ जैसी जगह में एक पखवारे में दो युवाओं की पुलिस पिटाई में मौत हो चुकी है। इस सरकार में पुलिस पूरी तरह निरंकुश हो चुकी है। भाजपा सरकार और पुलिस से जनता का भरोसा खत्म हो चुका है। जबसे प्रदेश में भाजपा सरकार आयी है तब से हर साल पुलिस हिरासत में मौते बढ़ती जा रही हैं। सपा अध्यक्ष ने कहा कि उत्तर प्रदेश में 2021 में पुलिस हिरासत में 451 लोगों की मौते हुई थी। वहीं 2022 में यह आंकड़ा बढ़कर 501 हो गया। पुलिस हिरासत में मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है। लखनऊ में दो सप्ताह पहले पुलिस पिटाई से विकास नगर में अमन गौतम की मौत हुई थी। शनिवार को लखनऊ पुलिस की पिटाई से चिनहट में मोहित पाण्डेय की मौत हो गयी। भाजपा सरकार और पुलिस पूरी तरह संवेदनहीनता पर उतारू है। इन्हें पीड़ितों के परिवारों का दुख दर्द और चीख पुकार नहीं सुनाई देती है। भाजपा सरकार सत्ता के अहंकार में विवेकहीन हो चुकी है। मुख्यमंत्री से लेकर नीचे ते शासन-प्रशासन बदले की भावना से काम कर रहा है। इस सरकार ने प्रदेश में लोकतंत्र और संविधान खत्म कर दिया है। तानाशाही और आतंक का राज स्थापित कर दिया है। पुलिस हिरासत में मौतों और फर्जी एनकाउंटरों से पूरे प्रदेश में उत्तर प्रदेश की छवि खराब हो रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी किसी भी तरीके से लोगों की जान लेने को मानवता के खिलाफ मानती है। भाजपा सरकार पुलिस से हत्याएं करा रही है। सुल्तानपुर मामले फर्जी एनकाउंटर कराकर पहले मंगेश यादव की हत्या हुई। जब सरकार पर आरोप लगे और किरकिरी हुई तो फर्जी एनकाउंटर में एक और हत्या करा दी गयी। भाजपा सरकार में अन्याय, अत्याचार चरम पर है। जनता आने वाले समय में इस अत्याचारी शासन का अंत कर देगी।

लाइव टेलीकास्ट के जरिए पूरी दुनिया देखेगी अयोध्या की भव्यता

दीपोत्सव 2024

● आठवें दीपोत्सव को भव्य बनाने में जुटा सूचना विभाग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

आठवें दीपोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। राम की पैड़ी पर दीप बिछाने का काम तकरीबन पूरा किया जा चुका है। अब अयोध्या सहित पूरी दुनिया को इंतजार है तो सिर्फ 30 अक्टूबर की शाम का। उस दिन सबके आराध्य भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या एक और कीर्तिमान रचने जा रही है। इस अद्भुत और अलौकिक पल के साक्षी पूरी दुनिया में बैठे लोग भी होंगे। मुख्यमंत्री योगी अदित्यनाथ के निर्देश पर सूचना विभाग द्वारा इस पूरे महा आयोजन के लाइव टेलीकास्ट की व्यवस्था की गई है। नगर के कोने-कोने में होने वाले दीपोत्सव की आभा दिखाने के लिए एलईडी वाल और एलईडी वैन लगवाई जा रही है। इसके अलावा मीडिया को कवरेज के लिए सेन्टर की स्थापना करा दी गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में इस बार दीपोत्सव को और भी भव्य बनाने की तैयारी चल रही है। शहर के मार्गों को फूलों की लड़ियों और आकर्षक लाइट से सजाया जा रहा है। दीपोत्सव के दिन राम की पैड़ी पर होने वाले सभी कार्यक्रमों को दूरदर्शन व सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर लाइव दिखाया जाएगा। नगर के सभी लोग इस भव्य आयोजन का, जो जहां रहे वहीं से आनन्द ले सके इसके लिए एलईडी स्क्रीन्स की व्यवस्था कराई गई है। जिला सूचना अधिकारी संतोष द्विवेदी ने बताया कि दीपोत्सव के आयोजन की भव्यता को अयोध्या सहित पूरी दुनिया देखे इसके लिए नगर में 20 जगहों पर एलईडी वाल और एलईडी वैन की व्यवस्था कराई जा रही है। इनमें अयोध्या कोतवाली, हनुमानगढ़ी, वाल्मीकि भवन, पोस्ट आफिस, तुलसी स्मारक भवन, कारसेवकपुरम, मीडिया सेन्टर, टेढ़ी बाजार चौराहा, रेलवे स्टेशन, विद्या कुंड, साकेत पेट्रोल पंप, दीनबन्धु नेत्रालय कार्यशाला, हनुमान गुफा के पास एलईडी वाल लग चुकी हैं।

न्याय की उम्मीद पर कुठाराघात हैं पुलिस हिरासत में मौत की घटनाएंः प्रमोद तिवारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राज्यसभा में कांग्रेस के उपनेता प्रमोद तिवारी ने यूपी की राजधानी लखनऊ में पुलिस हिरासत में व्यापारी की मौत की घटना को भाजपा राज में क्रूरता की पराकाष्ठा कहा है। उन्होंने कहा कि पुलिस हिरासत में एक युवा व्यापारी की हुई मौत सीधे तौर पर पुलिस प्रताड़ना के तहत हत्या है। मृतक व्यापारी मोहित पाण्डेय की पीएम रिपोर्ट में उसके सिर समेत चार जगह चोट के निशान पाए गए हैं। थाने में तैनात पुलिसकर्मियों ने व्यापारी के साथ अपराधियों की तरह भयावह बर्ताव कर निरंकुशता की हदें पार कर दी।

कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि यूपी में इधर हालिया वर्षो में हर साल आठ से दस निर्दोष लोगों की पुलिस हिरासत में मौत की चिंताजनक घटनाएं हुई हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष भी लखनऊ की इस घटना के साथ पुलिस हिरासत में मरने वालों की संख्या चार तक आ पहुंचना बेहद चिंताजनक है। उत्तर प्रदेश, पुलिस हिरासत में मौत के आंकड़ो में देश में सर्वाधिक घटनाओं का केंद्र बन गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में लगातार बढ़ते अपराध के बीच पुलिस हिरासत में मौत की इस प्रकार की घटनाएं आम आदमी में सुरक्षा तथा न्याय की उम्मीद पर गहरा कुठाराघात है।

अंतरराष्ट्रीय सीमा से घुसपैठ पर गृह मंत्रालय की जवाबदेही

वहीं राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने पश्चिम बंगाल में रोहंगिया घुसपैठ को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बयान पर तगड़ा पलटवार किया है। उन्होने गृह मंत्री से सवाल उठाया कि अगर अंतरराष्ट्रीय सीमा से घुसपैठ हो रही है तो भारत सरकार के गृह मंत्रालय की जबाबदेही है। उन्होंने कहा कि भाजपा को कुछ बोलने से पहले सोचना चाहिए कि घुसपैठ का मसला किन्ही दो प्रदेशों की सीमा पर नहीं अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़ा मुददा है। अंतरराष्ट्रीय ृसीमा से इस प्रकार की घुसपैठ के लिए सीधे तौर पर देश के गृह मंत्री ही जबाबदेह हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार मंहगाई, बेरोजगारी तथा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े चिंताजनक हालात पर जबाबदेह होने की जगह सिर्फ मजहबी कार्ड खेला करती है। उन्होंने कहा कि अभी तक प्रधानमंत्री चीन की सीमा पर भी घुसपैठ को दावे भरे अदांज में इंकार करते रहे।

राज्य महिला आयोग के कार्यों की अध्यक्ष डॉ. बबीता सिंह ने की समीक्षा

लखनऊ। राज्य महिला आयोग के मुख्यालय में सोमवार को आयोग की अध्यक्षा डॉ. बबीता सिंह चौहान की अध्यक्षता में आयोग के पदाधिकारियों की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। अध्यक्ष द्वारा मासिक बैठक में माह अक्टूबर 2024 में आयोग के पदाधिकारियों द्वारा प्रदेश के विभिन्न जनपदों में महिला जनसुनवाई/ निरीक्षण के कार्यों की समीक्षा की गयी, जिसमें आई कतिपय समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को पत्र प्रेषित कर कार्यवाही कराने के निर्देश दिये गये।

अयोध्या में जलेंगे सवा लाख गो दीप

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पशुधन मंत्री ने भेंट किए गो दीप

● प्रदेश के गो आश्रय स्थलों में होगा गो पूजन का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार द्वारा अयोध्या में अबतक के सबसे भव्य दीपोत्सव की तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर सभी विभाग अपनी अपनी ओर से दीपोत्सव की भव्यता को बढ़ाने में बढ़-चढ़कर शामिल हो रहे हैं। इसी क्रम में पशुधन विभाग ने अयोध्या में दीपोत्सव के अवसर पर डेढ़ लाख गो दीप जलाने का संकल्प लिया है। सोमवार शाम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलकर पशुधन मंत्री धरमपाल सिंह ने प्रतीकात्मक रूप से गो दीप और अन्य गो उत्पाद भेंट किए। यह आयोजन प्रदेश में गोवंश के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। बता दें कि अयोध्या में योगी सरकार की ओर से 35 लाख से अधिक दीपक जलाने का संकल्प लिया गया है। इसमें से अकेले 28 लाख दीये केवल सरयू नदी के 55 घाटों पर जलाए जाएंगे, जिसे विश्व कीर्तिमान के रूप में स्थापित किया जाएगा। इन दीपों में पशुधन विभाग की ओर से डेढ़ लाख गो दीप जलाने के संकल्प को मुख्यमत्री ने सराहा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस मौके पर गो संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और प्रदेश के सभी जिलों में गो आश्रय स्थलों पर गो पूजन के कार्यक्रम के आयोजन के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गोवर्धन पूजा के शुभ अवसर पर प्रदेश के गो आश्रय स्थलों में विधिवत गो पूजन आयोजित किया जाएगा। इसमें मंत्रीगण, सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी और गो प्रेमी शामिल होंगे और गो पूजन संपादित करेंगे। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य गोवंश के प्रति समाज में जागरूकता फैलाना और उनकी देखभाल को बढ़ावा देना है।

मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि प्रदेश के सभी गो आश्रय स्थलों में गोवंश के भरण-पोषण, हरे चारे की समुचित व्यवस्था और नियमित स्वास्थ्य परीक्षण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि गोवंश का संरक्षण और संवर्धन प्रदेश सरकार की प्राथमिकता है और इसके लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की टीम आज करेगी सरयू तट पर सजे दीपों की गिनती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशन में इस बार अयोध्या दीपोत्सव में डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 30 हजार वॉलेंटियर्स द्वारा एक-एक दीये प्रज्वलित कर दीपोत्सव में पिछला रिकार्ड तोड़ने की तैयारी है।

सोमवार देर शाम तक सरयू के 55 घाट पर दीये सजाने का काम 30 हजार वॉलेंटियर्स द्वारा किया जाता रहा। वहीं मंगलवार को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की 30 सदस्यीय टीम घाटों पर पहुंचकर दीयों की गिनती करेगी। मुख्यमंत्री के निर्देश पर विश्वविद्यायल और जिला प्रशासन सरयू घाट पर कुल 28 लाख दीपकों को सजा रहा है। वहीं पूरे अयोध्या की बात करें तो करीब 35 लाख से अधिक दीये जलाने की संभावना है। वहीं दूसरी ओर घाटों पर जिला प्रशासन द्वारा सुरक्षा व्यवस्था भी सख्त कर दी गई है। बिना आईकार्ड के वालंटियर व अन्य लोगों के प्रवेश को प्रतिबन्धित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन व जिला प्रशासन के सहयोग से 30 अक्टूबर को सायं होने वाले दीपोत्सव के लिए पूरी ताकत लगा दी है। जहां एक तरफ मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो गोयल ने दीपोत्सव को भव्य एवं अलौकिक बनाने के लिए भारी भरकम टीम उतार दी है, वहीं जिला प्रशासन की अगुवाई में स्वास्थ्य विभाग व विवि के प्राथमिक चिकित्सा स्वास्थ्य केन्द्र भी मुस्तैद हो गए हैं। कुलपति के निर्देश पर विश्वविद्यालय प्राथमिक चिकित्सा स्वास्थ्य केन्द्र चिकित्साधिकारी डॉ. दीपशिखा चौधरी अगुवाई में भी टीम का गठन कर दिया गया है।

पुलिस के आंख और कान बनेंगे युवा संदिग्ध गतिविधियों पर रखेंगे नजर

लखनऊ/ प्रयागराज। योगी सरकार महाकुंभ 2025 को भव्य और दिव्य बनाने के साथ ही इसे सभी के लिए सुरक्षित बनाने पर भी जोर दे रही है। इसके लिए विभिन्न कार्ययोजना बनाई गई हैं। महाकुंभ पुलिस की ओर से भी तमाम व्यवस्थाएं की जा रही हैं। इसी क्रम में महाकुंभ पुलिस द्वारा कम्युनिटी पुलिसिंग पर भी जोर दिया जा रहा है। खासतौर पर युवा वर्ग को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वह आसपास होने वाली गतिविधियों पर पैनी नजर रखें और अगर उन्हें कहीं कोई गड़बड़ दिखाई दे तो वह तत्काल पुलिस को सूचित करें। इसका मतलब ये है कि सुरक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ पुलिस की ही नहीं है, बल्कि प्रयागराज के युवा भी अब पुलिस के आंख और कान बनकर काम करेंगे। महाकुंभ के आयोजन को लेकर यूपी पुलिस की ओर से व्यापक तैयारियां की गई हैं। पूरे महाकुंभ को सात स्तरीय सुरक्षा चक्र में विभाजित किया गया है। इसके अलावा आईसीसीसी के माध्यम से एआई से लैस सीसीटीवी कैमरों द्वारा संदिग्धों की निगरानी किए जाने की व्यवस्था की गई है तो वहीं मेला क्षेत्र में 10 प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन भी चलाने की तैयारी है।

पूर्ण पारदर्शी तरीके से की जाए धान खरीदः डीएम

● पोर्टल पर पंजीकृत किसानों का सत्यापन कार्य कराने के एसडीएम को दिए निर्देश

● क्रय केंद्र में व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने की दी हिदायत

संवाददाता। फतेहपुर

जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के अन्तर्गत 01 नवंबर से प्रारम्भ होने वाली धान खरीद कार्यशाला का आयोजन कलेक्ट्रेट महात्मा गांधी सभागार में किया गया। उन्होंने समस्त क्रय एजेन्सियों के जिला प्रबन्धक व धान क्रय केन्द्र प्रभारियों को शासन की जारी धान क्रय नीति के अनुसार पूर्ण पारदर्शी तरीके से धान खरीद करने के निर्देश दिये। जिससे विचलन की स्थिति उत्पन्न न हो तथा अधिक से अधिक किसान शासन की अति महत्वाकांक्षी न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना से लाभान्वित हो सकें। समस्त उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि धान विक्रय के लिए किसानों द्वारा पोर्टल पर पंजीकरण किया गया है उसके सत्यापन का कार्य यथाशीघ्र पूरा करा लें। धान क्रय केन्द्र प्रभाारियों को निर्देशित किया कि किसानों से विनम्र व्यवहार करते हुए धान क्रय नीति मे निर्दिष्ट व्यवस्थानुसार मानक के अनुरुप धान खरीद किए जाने के निर्देश दिये। ताकि किसानों को कोई असुविधा न होने पाये। क्रय केन्द्र में बैनर, शुद्ध पेयजल, पर्याप्त बोरो की उपलब्धता, इलेक्ट्रॉनिक कांटा, डउस्टर, छलनी, नमी मापक यंत्र, छाया, तिरपाल आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। इलेक्ट्रॉनिक काँटों का सत्यापन शेष रह गया है उसका बाँट माप विभाग द्वारा करा लिया जाये और प्रमाण पत्र केन्द्र में अवश्य रखे। बैठक में जिला खाद्य विपणन अधिकारी ने अवगत कराया कि धान खरीद वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत जनपद मे क्रय एजेन्सी खाद्य विभाग की विपणन शाखा के 23 पीसीएफ के 18 यूपीएसएस के 03, पीसीयू के 05 व भारतीय खाद्य निगम के 03 सहित कुल 52 क्रय केन्द्र स्वीकृत हैं। धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपए प्रति कुन्तल है। धान विक्रय हेतु इच्छुक कृषक खाद्य विभाग के पोर्टल पर पंजीकरण कराकर 01 नवंबर से अपनी सुविधानुसार निकटतम क्रय केन्द्र पर धान विक्रय कर सकते हैं। साथ ही शासन द्वारा जारी धान क्रय नीति के अनुसार उपस्थित समस्त केन्द्र प्रभारियों को विस्तृत जानकारी दी गयी। इस अवसर पर जिला खरीद अधिकारी/ एडीएम (वित्त/राजस्व), समस्त उप जिलाधिकारी, जिला कृषि अधिकारी, सहायक आयुक्त एवं निबंधक सहकारिता, विधिक बांट-माप विज्ञान विभाग के अधिकारी, मण्डी सचिव, प्रबन्धक लीड बैंक, समस्त क्रय एजेन्सियों के जिला प्रबन्धक व धान क्रय केन्द्र प्रभारी आदि उपस्थित रहे।

डीएम ने छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति योजना के शुभारंभ

बांदा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से संस्कृत माध्यमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालय के समस्त छात्र.छात्राओं को छात्रवृत्ति योजना के शुभारंभ के सजीव प्रसारण को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी नगेंद्र प्रतापए अध्यक्ष नगर पालिका परिषद मालती बासु, मुख्य विकास अधिकारी से वेद प्रकाश मौर्य एवं अन्य जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियोंए कर्मचारियों और छात्रगणों की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में जिलाधिकारी द्वारा छात्रों को प्रतीकात्मक चेक वितरण किया गया। जनपद के संस्कृत विद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्ययनरत सभी छात्र.छात्राओं को छात्रवृत्ति धनराशि खाते में आरटीजीएस के माध्यम से वितरित किया गया सइस अवसर पर जिलाधिकारी ने भी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अपनी भाषाए अपनी संस्कृति को संरक्षित करने की बात कही।

एफएसडीए ने छापामार कार्यवाही कर जांच हेतु लिए नमूने

संवाददाता। फर्रुखाबाद

आगामी दीपावली गोवर्धन पूजा एवं भाईदूज के दृष्टिगत एफएसडीए द्वारा छापामार कार्यवाही कर जांच हेतु नमूने संग्रह किये। आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, उप्र लखनऊ के आदेश के अनुपान में आगामी पर्व दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं भाईदूज के अवसर पर मिलावटी खाद्य एवं पेय पदार्थों के विक्रय पर प्रभावी रोकथाम हेतु विशेषकर खाद्य पदार्थ, खोया, पनीर, दूध एवं दुग्ध पदार्थ से निर्मित मिठाईया, नमकीन, ड्राई फ्रूट, खाद्य तेल एवं वनस्पति, घी, रंगीन मीठे खिलौने, अन्य खाद्य पदार्थ आदि की गुणवत्ता सुनिश्चित कराये जाने के उद्देश्य से आज सहायक आयुक्त अजीत कुमार के निर्देशन एवं मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी अक्षय प्रधान के नेतृत्व एवं पर्यवेक्षण में खाद्य सुरक्षा अधिकारी शिवदास सिंह, विनोद कुमार, डा. शैलेन्द्र रावत एवं अरूण कुमार मिश्र द्वारा निम्न कार्यवाही की गयी।

तलैयालेन, फतेहगढ़, स्थित खाद्य प्रतिष्ठान मिष्ठान भण्डार से खाद्य पदार्थ मिल्क केक का एक नमूना संकलित किया गया। छोटीजेल चैराहा, फतेहगढ़, जनपद फर्रूखाबाद स्थित खाद्य प्रतिष्ठान मिष्ठान भण्डार से खाद्य पदार्थ पनीर का एक नमूना संकलित किया गया। कानपुर रोड कमालगंजए स्थित खाद्य प्रतिष्ठान मिष्ठान भण्डार से खाद्य पदार्थ मिल्क केक का एक नमूना संकलित किया गया। किराना बाजारए फर्रूखाबाद स्थित खाद्य प्रतिष्ठान मिष्ठान भण्डार से खाद्य पदार्थ सोनपापड़ी का एक नमूना संकलित किया गया। रेलवे रोड, कमालगंज स्थित खाद्य प्रतिष्ठान किराना स्टोर से खाद्य पदार्थ बेसन का एक नमूना संकलित किया गया। कुल पांच नमूने लिये गये।

सियार काटने के एक माह बाद महिला की मौत, पोस्टमार्टम कराया

मौदहा। हमीरपुर। विकासखंड क्षेत्र के सिसोलर गांव में खेत में काम कर रही महिला पर सियार ने हमला कर उसे बुरी तरह काट कर जख्मी किया था।घटना के बाद ही उसे मौदहा कस्बे के सरकारी अस्पताल में उपचार शुरू करने और रेबीज के इंजेक्शन लगाने के बाद आज घटना के एक माह बाद आज उसकी मौत हो गई। उसके पति मूलचंद का आरोप है कि न तो वन विभाग ने उसकी कोई चिंता की और ना स्वास्थ्य विभाग ने। उसका सवाल है कि आखिरकार जब समय पर इलाज के लिए भर्ती कराया गया और इंजेक्शन भी लगे तब मौत रैबीज से कैसी हो गई। सिसोलर गांव के सरमन पत्नी मूलचंद को बीती 27 सितंबर को जब वह खेत में तिल की फसल काट रही थी तब उस पर सियार ने हमला किया था।घायल महिला को तत्काल उसका पति कस्बे के सरकारी अस्पताल परिजनों के साथ लाया था। उसने बाकायदा उसका इलाज कराया और दीगयी निर्धारित तारीखों में रैबीज से बचाव के इंजेक्शन भी लगे। उसने बताया कि उसकी हालत खराब होने पर वह 24 अक्टूबर को कस्बे के सरकारी अस्पताल ले गया। जहां उसका इलाज करने के साथ ही उसे गंभीर अवस्था में हमीरपुर सदर अस्पताल इलाज के लिए रेफर कर दिया गया। इलाज हुआ और हालत बिगड़ने पर 27अक्तूबर को उसे परिजनों को सौंप दिया गया।उसे वह घर ले आए जिसकी आज दिन में मौत हो गई। इस संबंध में आज थाना सिसोलर में प्रार्थना पत्र देते हुए घटनाक्रम का विवरण के साथ तत्काल पोस्टमार्टम की माग की है । पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इस संबंध में वन विभाग के रेंजर से जानकारी चाही गई तो उन्होंने बताया कि जंगली जानवर काटने में दो तीन दिन में ही उस काअसर देखने को मिलता है।सियार के काटने की घटना के एक माह बाद मौत की जिम्मेदारी वन विभाग की नहीं है।

लापरवाही बरतने पर डीएम ने एमओआईसी राठ व सरीला के रोका वेतन, उपकरण क्रय किये जाने पर दिया जोर

हमीरपुर। जिला स्वास्थ्य समिति के शासी निकाय की समीक्षा बैठक बैठक में जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम बाल मृत्य रिपोर्टिंग एवं स्वास्थ्य संबंधी अन्य कार्यों में शिथिलता बरतने पर डीएम ने सरीला व राठ एमओआईसी का वेतन रोकने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में जिन आशाओं द्वारा स्वास्थ्य संबंधी कार्यों में लापरवाही बरती जा रही हैं उन्हें चिन्हित कर उन पर कड़ी कार्रवाई की जाए। कहा कि स्वास्थ्य संबंधी कार्यों में शिथिलता किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। नियमित रूप से वीएचएसएनडी सेशन कराया जाए । सभी केंद्रों पर जरूरी उपकरण यथा वजन मशीन आदि का क्रय कर लिया जाए।

बैठक में जिलाधिकारी ने जननी सुरक्षा योजना जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, प्रेगनेंट महिलाओं की

बैठक लेते जिलाधिकारी

पोर्टल पर फीडिंग चाइल्ड रजिस्ट्रेशन प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत पोर्टल पर बेनिफिशियरी अपलोड करने, फैमिली प्लानिंग आदि की समीक्षा करते हुए संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए। गर्भवती महिलाओं में एनीमिया न हो इसके लिए नियमित रूप से आयरन की दवाई दी जाए । जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा मरीजों को बेहतर चिकित्सा सुविधा दी जाए। कहा कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनस्वास्थ्य के कार्यों विभाग के स्वास्थ संबंधी विभिन्न योजनाओं में तेजी लाई जाए। गर्भवती महिलाओं एबच्चों के टीकाकरण आदि पर विशेष ध्यान दिया जाए, नियमित टीकाकरण से वंचित छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं को चिन्हित कर माइक्रोप्लान बनाकर दिसम्बर तक शत प्रतिशत टीकाकरण किया जाए। आशा, आंगनवाड़ी कार्यकत्री एएनएम एवं विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को नियमित रूप से समयबद्ध ढंग से भुगतान किया जाय इसमें अनावश्यक देरी नही की जानी चाहिए।

एक विवाहिता और विवाहित युवक के शव फंदे से लटकते हुए मिले

संडीला (हरदोई)। दो अलग.अलग घटनाओं में एक विवाहिता का शव घर में लटकता मिला जबकि कई दिन से लापता युवक का शव गांव के बाहर पेड़ से लटकता हुआ पाया गया। पहली घटना कोतवाली बेनीगंज के अंतर्गत ग्राम झरोइया की है। ग्राम निवासी साजल कुमार की पत्नी 22 वर्षीय कुसमा घर के कमरे में फंदे से लटकती हुई मिलीं। इस संबंध में मृतका के ससुरालीजन का कहना है कि कुसमा का पति प्रतापनगर चौराहे पर स्थित एक प्लाइवुड कंपनी में काम करने चला गया जबकि उसकी सास सुनीता किसी काम से घर से गयीं थीं। जब वह वापस लौटीं तब उसने घर का दरवाज़ा खुला हुआ देखा। उसने घर पहुंचकर देखा तो उसे कुसमा कमरे के हुक से लटकती हुई दिखी तो उसने शोर मचाया। आसपास के लोग दौड़कर आए और उसे हुक से नीचे उतारा तब तक कुसमा के हाथ पैरों में हरकत हो रही थी। उसे उठाकर एक प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

क्विक न्यूज़

ई.रिक्शा से घायल महिला की उपचार दौरान मौत

सुमेरपुर। तीन दिन पूर्व ई रिक्शा की टक्कर से घायल वृद्ध महिला ने उपचार दौरान दम तोड दिया मृतका की बेटी ने अज्ञात रिक्शा चालक के खिलाफतहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया है। जानकारी के मुताबिक 25 अक्तूबर को मुन्नी देवी पत्नी रामनाथ की पुत्री अनुसुईया कस्बे के बाजार सब्जी लेने जा रही थी तभी एक ई रिक्शा उसे जोरदार टक्कर मारकर भाग निकला था मृतका की पुत्री अनसूइया ने बताया कि मां को पहले उपचार के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सुमेरपुर ले गए तो वहां से उसे सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। हालत नाजुक होने पर हमीरपुर से कानपुर रेफर कर दिया गया। शनिवार को हालत में सुधार हुआ तो उसे घर ले आए रविवार को फिर हालत बिगड़ी तो हमीरपुर के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया फिर भी बात नहीं बनी तो उसे उपचार के लिए कानपुर ले जा रहे थे तभी रास्ते में उसकी मां ने दम तोड दिया बेटी की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात ई.रिक्शा चालक के खिलाफमुकदमा दर्ज किया है। इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया है। मृतका अपने पीछे पति सहित एक पुत्र और चार पुत्रियों को रोता बिलखता छोड़ गई है।

पुलिस टीमों पर फायरिंग और पथराव करने के मामले में मुकदमा

फतेहपुर। जहानाबाद थाना क्षेत्र के नोनारा कंजरन डेरा में पुलिस टीमों पर पथराव और फायरिंग के मामले में दो नामजद समेत 14 महिला व पुरुषों के खिलाफमुकदमा दर्ज किया गया है। दो पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। फायरिंग में घायल महिला को जिला अस्पताल से कानपुर हैलट रेफर किया गया है।कल्यानपुर थाना क्षेत्र में चौडगरा ओवरब्रिज पर 15 जुलाई को बाइक सवार फौजी विमल सिंह की पत्नी मोहिनी के गले से चेन लूट हुई थी। लूट के बाद पुलिस की जांच में जहानाबाद नोनारा कंजरनडेरा गांव का धर्मेंद्र और शिवा कंजड़ प्रकाश में आए थे। दोनों की धरपकड़ में इंटेलीजेंस विंग प्रभारी अरुण कुमार चतुर्वेदी, कल्यानपुर थानाध्यक्ष विनोद मिश्रा व जहानाबाद प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार सिंह समेत 23 पुलिसकर्मियों की संयुक्त टीम शनिवार रात नोनारा डेरा पहुंची थी। जहां आरोपी धर्मेंद्र ने पुलिस पर तमंचे से फायर किया। इंटेलीजेंस विंग प्रभारी ने एफआईआर में बताया कि धर्मेंद्र की गोली गांव में मायके आई मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ थाना के पीरतीपुर निवासी रवीना पत्नी कल्लू आदिवासी को लगी। महिला घायल हो गई। इसी दौरान गांव के संतुवा समेत 10 से 12 पुरुष, महिलाओं ने पुलिस पर पथराव किया। लाठी, डंडा, बांका, सरिया हमला किया। आरोपी धर्मेंद्र मौके से भाग निकला। उसका पीछा सिपाही पवन चौधरी व प्रमोद कुमार ने किया। उन पर भी फायरिंग कर भाग निकला। ग्रामीणों के हमले में सिपाही विवेक कुमार व रामसिंह पटेल घायल हो गए। मौके से संतुआ को पकड़ा गया।

ट्रैक्टर की चपेट में आकर साइकिल सवार अधेड़ की मौत

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के हसवा के समीप सोमवार की दोपहर ट्रैक्टर की चपेट में आ जाने से 55 वर्षीय साइकिल सवार की घटनास्थल पर दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के अनुसार असोथर थाना क्षेत्र के खैदीपुर गांव निवासी स्व0 भुलवा का पुत्र राम सिंह दोपहर साइकिल से हसवा बाजार करने आ रहा था। जैसे ही वह हसवा के समीप पहुंचा तभी पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने उसे रौंद दिया जिससे उसकी घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

युवक ने फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। असोथर थाना क्षेत्र के कन्हैया गांव निवासी गोवर्धन रैदास का पुत्र इंदल रैदास ने घर के अंदर पंखे के हुक से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया। वहीं मृतक के परिजनों के अनुसार वह कई दिनों से मानसिक तनाव में था। रात खाना खाकर वह अपने कमरे में सोने चला गया था। आज सुबह जब दरवाजा खोला तो वह फांसी के फंदे पर लटका था। आत्महत्या का कारण परिजनों ने कुछ भी नहीं बताया।

युवक ने फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। ललौली थाना क्षेत्र के ग्राम गंगईपार के समीप संदिग्ध परिस्थितियों में 40 वर्षीय युवक ने पेड़ पर फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। गाजीपुर थाना क्षेत्र के बड़ागांव निवासी रामबाबू के पुत्र जयराम ने गंगईपार में आम के पेड़ पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पोस्टमार्टम हाउस में मृतक के बड़े भाई श्रीराम ने बताया कि छह दिन पूर्व उसके भाई को बंदर ने काट लिया था, जिसके चलते उसने अपना मानसिक संतुलन खो दिया था और गांव से कुछ ही दूर गंगईपार जाकर उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

मतदाता सूची संशोधन को लेकर बीएलओ की बैठक संपन्न

संडीला (हरदोई)। एसडीएम ने बीएलओ के साथ बैठक कर मतदाता सूचियां उन्हें सौंपी। तहसील सभागार मे बीएलओ के साथ बैठक करके एसडीएम डॉ0 अरुणिमा श्रीवास्तव ने संडीला और बालामऊ विधानसभा के बीएलओ को मतदाता सूचियां सौंपी।

सड़क हादसे में अधेड़ की मौत

संवाददाता। फतेहपुर

कल्यानपुर थाना क्षेत्र के बिंदकी रोड ओवर ब्रिज में रविवार की देर शाम पैदल आ रहे 57 वर्षीय अधेड़ को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दिया जिसे गंभीर अवस्था में गोपालगंज पीएचसी लाया गया जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के पहुर गांव निवासी स्व0 सूरजबली सिंह का पुत्र लाखन सिंह रविवार की शाम लगभग साढ़े छह बजे पैदल किसी काम से जा रहा था। जब वह चौडगरा-बिंदकी रोड ओवर ब्रिज पर पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची सरकारी एंबुलेंस ने घायल को उपचार के लिए गोपालगंज पीएचसी पहुंचाया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

कर्ज से आजिज किसान ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

● दो अंधे पुत्र और पत्नी का सहारा था मृतक

संवाददाता। सुमेरपुर (हमीरपुर)

थाना सुमेरपुर क्षेत्र के ग्राम टेंढा में गरीबी और कर्ज से आजिज एक किसान ने पत्नी और दो अंधे पुत्रों का मोह त्याग कर घर के एक कमरे में फाँसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली किसान की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

किसान चुनूवाद (48) के पास मात्र 3 बीघा जमीन है। उसने बैंक से 1 लाख रूपया का कर्ज ले रक्खा था तथा उसके ऊपर साहूकारों का कर्ज भी था । कर्ज न अदा कर पाने से वह परेशान रहता था रोज रोज तकादे आने से उसे परेशानी उसकी बढ़ती ही जा रही थी फसल भी साथ नही दे रही थी जिससे वह कर्ज अदा कर सके। रविवार की रात्रि को उसने घर के एक कमरे का दरवाजा बंद करके गले में फांसी का फन्दा लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। सुबह जब दरवाजा नहीं खुला तो पत्नी परेशान हुई उसने दरवाजे के नीचे से देखा तो पति मृत अवस्था में फांसी पर झूल रहा था। खबर पाकर पड़ोसी भी मौके पर आ गये और दरवाजा तोड़कर मृत किसान को नीचे उतारा गया। घटना की सूचना सुमेरपुर पुलिस को दी गयीए खबर पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कराकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया । मृतक किसान अपने पीछे पत्नी सहित दो जन्मांध पुत्र घसीरा 23 वर्ष सत्यम 13 वर्ष को रोता बिलखता छोड़ गया है किसान की मौत से सभी का रो.रोकर बुरा हाल है। पुत्रों का कहना था कि पिता की मौत से अब वे लोग बेसहारा हो गए हैं।

बकरी चोर पकड़ा गया

बांदा। उप्र के बांदा में एक हाई प्रोफाइल चोर पकड़ा गया जो बकरियों को चोरी करके सेंट्रो कर में बैठा कर ले जाता था इस पर आम लोगों को शक भी नहीं होता था बांदाथाना बिसण्डा पुलिस द्वारा बकरियां चोरी करने वाले एक अभियुक्त को किया गया गरफ्तार । अभियुक्त के कब्जे से चोरी की 8 बकरियां व चोरी में प्रयुक्त 1 चारपहिया सेंट्रो कार बरामद किया है पुलिस अधीक्षक बाँदा अंकुर अग्रवाल ने बताया कि बांदा जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज 27 अक्टूबर को थाना बिसण्डा पुलिस द्वारा बकरियां चोरी करने वाले हाई प्रोफाइल 1 अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है । गौरतलब हो कि थाना बिसण्डा क्षेत्र के परसेटा अंश सिंहपुरमाफी के रहने वाले बबुआ पुत्र जामिद खां द्वारा दिनांक 26ध्27 की रात्रि को थाना बिसण्डा पर अपनी बकरियां चोरी होने के सम्बन्ध में प्रार्थना पत्र दिया था जिसके सम्बन्ध में थाना बिसण्डा पर अभियोग पंजीकृत करते हुए 1 अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।

सुविधा शुल्क से संतुष्ट हैं अस्थाई पटाखा कारोबारी

फतेहपुर। एमजी कालेज के ग्राउंड में लगने वाली पटाखा मंडी के संचालन के लिए बनाई गई कमेटी के खिलाफ चल रही भ्रामक खबरों का संज्ञान लेते हुए अस्थाई पटाखा कारोबारियों ने जिलाधिकारी को शपथ पत्र देते हुए कहा कि वह लिए जाने वाले सुविधा शुल्क से संतुष्ट हैं क्योंकि इसी सुविधा शुल्क से व्यवस्थाएं की जाती हैं। कुछ तथाकथित लोग भ्रामक खबरें प्रचारित करके कमेटी को बदनाम कर रहे हैं। अस्थाई पटाखा समिति के

● भ्रामक खबरों के जरिए कमेटी को बदनाम करने की बताया साजिश

● पटाखा कारोबारियों ने डीएम को सौंपा शपथ पत्र

संयोजक धर्मेन्द्र सिंह की अगुवई में अस्थाई पटाखा कारोबारी कलेक्ट्रेट पहुंचे और जिलाधिकारी को शपथ पत्र देते हुए बताया कि दीपावली के पर्व पर एमजी कालेज जीटी रोड पर प्रशासन द्वारा पटाखा बिक्री के लिए स्थान चिन्हित किया गया था, जो अनवरत गत वर्षों से उपरोक्त स्थान पर अस्थाई 03 से 04 दिन के लिए सभी व्यापारी अपनी दुकाने नियमानुसार लगाते आ रहे हैं। बहुत से अस्थाई पटाखा व्यापारी अशिक्षित होने के कारण अस्थाई लाइसेंस बनवाने में कठिनाई का सामना पड़ता था, इसलिए सभी व्यापारियों ने मिलकर बैठक किया और सहमति से कमेटी बना ली, जो वर्तमान में काम कर रही है जिससे सभी व्यापारियों की आम सहमति से निर्णय लिया गया। अब उनसे अवैध वसूली नही हो पाती है। जिसके चलते कुछ तथाकथित लोगों ने भ्रामक खबरें प्रचारित करके कमेटी को बदनाम करने का कुचक्र रचा है। सभी अस्थाई पटाखा कारोबारी समिति से पूरी तरह संतुष्ट हैं।

एक विवाहिता और विवाहित युवक के शव फंदे से लटकते हुए मिले

संडीला (हरदोई)। दो अलग.अलग घटनाओं में एक विवाहिता का शव घर में लटकता मिला जबकि कई दिन से लापता युवक का शव गांव के बाहर पेड़ से लटकता हुआ पाया गया। पहली घटना कोतवाली बेनीगंज के अंतर्गत ग्राम झरोइया की है। ग्राम निवासी साजल कुमार की पत्नी 22 वर्षीय कुसमा घर के कमरे में फंदे से लटकती हुई मिलीं। मृतका के ससुरालीजन का कहना है कि कुसमा का पति प्रतापनगर चौराहे पर स्थित एक प्लाइवुड कंपनी में काम करने चला गया जबकि उसकी सास सुनीता किसी काम से घर से गयीं थीं। जब वह वापस लौटीं तब उसने घर का दरवाज़ा खुला हुआ देखा। उसने घर पहुंचकर देखा तो उसे कुसमा कमरे के हुक से लटकती हुई दिखी तो उसने शोर मचाया। आसपास के लोग दौड़कर आए और उसे हुक से नीचे उतारा तब तक कुसमा के हाथ पैरों में हरकत हो रही थी। उसे उठाकर एक प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक कुसमा के विषय में जानकारी मिली है कि उसका विवाह 2 वर्ष पूर्व साजल कुमार के साथ हुआ था। इस संबंध में पुलिस का कहना है कि मृतका के परिजन की तहरीर के आधार पर ही कार्रवाई कर जाएगी। इसी प्रकार की एक दूसरी घटना ग्राम डही की है। ग्राम निवासी 25 वर्षीय राजपाल हरियाणा के फ़रीदाबाद में अपनी पत्नी गीता और 1 साल के पुत्र कृष्णा के साथ मजदूरी करता था और कुछ समय पूर्व ही गांव आया था। परिजन का कहना है कि पति पत्नी में किसी बात को लेकर विवाद हो गया और इसके बाद राजपाल घर से चला गया। उसके लापता हो जाने की सूचना उसके भाई श्रवण ने पुलिस को दे दी थी। सुबह कुछ लोगों ने राजपाल के शव को गांव के बाहर एक पेड़ से लटकता हुआ देखा तो इसकी सूचना उसके परिजन को दी।

जिलास्तरीय उद्योग बंधु समिति की बैठक का आयोजन

फर्रुखाबाद। जिलाधिकारी डॉ. वीके सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार परिसर में जिला स्तरीय उद्योग बंधु समिति की बैठक का आयोजन किया गया। उपायुक्त उद्योग ने बताया कि निवेश मित्र पोर्टल पर 02 केस आये है कल तक दोनों का निस्तारण हो जायेगा। ईज ऑफ डूइंग में जनपद को श्रेणी । व 18वा स्थान प्राप्त हुआ है। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना में कुल 350 आवेदन प्राप्त हुये है जिनमे से 81 स्वीकृति हुये है। ओडीओपी में 49 आवेदन प्राप्त हुये है। 17 स्वीकृति हुये है। व्यापारियो द्वारा समस्याओं को उठाया गया जिनका डीएम द्वारा निस्तारण का आदेश दिया गया। डीएम की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना की समीक्षा की गई। समीक्षा में डीएम ने बैंकों को सभी लंबित आवेदन का 10 नवंबर तक निस्तारण करने का निर्देश दिया। निरस्त किये गए 192 आवेदनों का सीडीओ की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा जाँच करने के निर्देश दिये।

शिक्षा विद्यार्थियों को सभ्यता का बोध कराती हैः प्रदीप चतुर्वेदी

गुरसहायगंज, कन्नौज। स्थानीय गोमती कॉलेज में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में पहुंचे कालपी विधायक प्रदीप चतुर्वेदी ने वृक्षारोपण कर नगर व क्षेत्र में शिक्षा की अलख जगानें बाली दादी गोमती देवी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि शिक्षा छात्र-छात्राओं एवं लोगों को सभ्यता का बोध कराती है। सोमवार को विद्यालय की स्थापना दिवस कार्यक्रम में विधायक प्रदीप चतुर्वेदी ने कहा कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना हम सभी का दायित्व है। अभिभावकों को भी अपने कीमती समय में से कुछ समय निकालकर बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

कांग्रेस प्रदेश सचिव विजय मिश्र एवं ब्राह्मण महासभा फर्रुखाबाद जिलाध्यक्ष मृत्युंजय शर्मा, कांग्रेस नगर अध्यक्ष संजीव दुबे मुन्ना ने कहा कि शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा हमारे जीवन में अनिवार्य है।

वृक्षारोपण करते विधायक प्रदीप चतुर्वेदी

सरकारों को भी शिक्षा की ओर ध्यान देना जरूरी है। इससे पहले कार्यक्रम के आयोजक विद्यालय के प्रबंधक विजय मिश्रा, विनय मिश्रा, महेश चंद्र त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि विधायक प्रदीप चतुर्वेदी का फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवल प्रताप सिंह यादव, कमलेश कुमार, अतुल मिश्रा, रामू त्रिपाठी, बीनू तिवारी, प्रदीप मिश्रा, अवधेश गुप्ता आदि के साथ विधायक ने वृक्षारोपण कर लोगों को स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया।

जिले के परिषदीय विद्यालय के बच्चों ने दिया पटाखा मुक्त दीपावली मनाने का संदेश

लखीमपुर खीरी। जिले में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल के निर्देशन में पटाखा मुक्त दिवाली मनाने की मुहिम शुरू हुई। डीएम की पहल पर बीएसए प्रवीण तिवारी के नेतृत्व में जिले के परिषदीय विद्यालयों के लाखों बच्चों ने सोमवार को प्रदूषण रहित दिवाली मनाने की शपथ ली। मंगलवार को सभी परिषदीय विद्यालयों में दीवाली पर निबंधए चित्रकला और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन होगा।

जिले के 3106 परिषदीय विद्यालयों (संविलियन, उच्च प्राथमिक एवं प्राथमिक) और 16 कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में नामांकित छात्र.छात्राओं ने अपने अध्यापकों की नेतृत्वए अगुवाई में जागरूकता रैली निकालकर इस बार पटाखा मुक्त दीपावली मनाने का संदेश दिया। गांव.गांव में प्रदूषण मुक्त दीपावली का संदेश देती तख्तियां लिए स परिषदीय विद्यालय के नौनिहालों ने लोगों से पटाखों के कारण होने वाले प्रदूषण की जागरूकता की और पटाखा मुक्त दीपावली मनाने का संदेश दिया। शिक्षकों ने बच्चों को दीपों के त्योहार दीपावली को पटाखामुक्त मनाने की शपथ भी दिलाई। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा बच्चों को पटाखे के धुएं से बुजुर्गों और बच्चों को सांस लेने में होने वाली समस्याओंए आंखों में जलनए ऑक्सीजन की कमीए पक्षियों के लिए हो रही मुश्किल आदि समस्याओं से अवगत करवाया। उन्हें प्रेरित किया गया कि वह दीया जला करए एक.दूसरे को मिठाई खिलाकर और पौधा लगाकर प्रदूषण मुक्त दिवाली मनाएं।

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले बेहतर समन्वय के लिए नीतीश ने राजग नेताओं के साथ की मंत्रणा

भाषा। पटना

बिहार में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राज्य में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सहयोगियों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सोमवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आवास पर बैठक हुई। जनता दल (यू) के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने सोशल मीडिया मंच "एक्स" पर बैठक की कुछ तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, "राजग की प्रचंड जीत की तैयारी। जनता दल (यूनाइटेड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी की अध्यक्षता में आज एक अणे मार्ग, पटना में आयोजित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की संयुक्त बैठक में बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की तैयारियों और प्रदेश से लेकर बूथ स्तर तक समन्वय पर विस्तृत चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि इस महत्वपूर्ण बैठक में राजग के सभी घटक दलों के वरिष्ठ नेता, केंद्रीय मंत्री, राज्यसभा एवं लोकसभा सदस्य, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक, विधान पार्षद तथा जिला अध्यक्ष शामिल हुए।

बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान झा ने बताया कि बैठक के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर अपनी बातें रखी और कहा कि 16- 17 सालों के दौरान सरकार ने जो काम किए हैं उनसे लोगों को अवगत कराया जाना चाहिए। उनके मुताबिक, बैठक में मुख्यमंत्री ने इस बार के बजट में बिहार में बाढ़ नियंत्रण, सड़क, पर्यटन और उद्योग के क्षेत्र के लिए विशेष मदद देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद किया।झा के अनुसार, बैठक में विपक्ष पर निशान साधते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यात्रा निकाल रहे लोगों के सत्ता में रहने के दौरान प्रदेश की क्या स्थिति थी, इससे नए मतदाताओं को अवगत कराया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, उन्हें (युवाओं को) बताइए कि हम लोगों ने प्रदेश का विकास कार्य कैसे शुरू किया था और कितना काम किया है और केंद्र से सहयोग से कितना काम हो रहा है। झा ने यह भी कहा कि इस बैठक के बाद अब जिला स्तर और विधानसभा स्तर पर भी राजग की बैठक होगी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान बताया कि राजग की इस बैठक में घटक दलों के कार्यकर्ताओं के बीच आपसी समन्वय और 2025 के विधानसभा चुनाव को लेकर चर्चा हुई। दिलीप जायसवाल ने कहा, मुख्यमंत्री ने 2025 में राजग को एक और जीत की ओर ले जाने का संकल्प लिया। उन्होंने विपक्षी महागठबंधन को बेनकाब करने का भी आह्वान किया है और कहा है कि वह महागठबंधन से ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रेम कुमार ने बैठक के बाद कहा कि बैठक का एक ही विषय था कि आगामी विधानसभा चुनाव में राजग नीतीश कुमार की अगुवाई में दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाए।बैठक के बाद जनता दल (यू) के प्रदेश प्रवक्ता और एमएलसी नीरज कुमार ने कहा, हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में हम लोगों ने बिहार में 30 सीटें जीती और अब हम लोगों का लक्ष्य है कि अगले साल होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में 225 सीट जीतें और विपक्षी महागठबंधन का राजनीतिक पोस्टमार्टम करेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में संपन्न राजग कि इस बैठक में भाजपा के वरिष्ठ नेता और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी, राष्ट्रीय लोक मोर्चा के प्रमुख एवं राज्यसभा सदस्य उपेंद्र कुशवाहा और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा से संतोष सुमन समेत अन्य नेता शामिल हुए।

तेलंगाना पिछड़ा वर्ग आयोग ने जाति आधारित सर्वेक्षण के तहत जन सुनवाई शुरू की

हैदराबाद। तेलंगाना पिछड़ा वर्ग आयोग ने राज्यभर में जाति आधारित सर्वेक्षण करने की प्रक्रिया के तहत इच्छुक पक्षकारों से अ यक्ष जी निरंजन ने बताया कि जाति सर्वेक्षण कराने के लिए जन प्रतिनिधियों, जाति आधारित संगठनों और अन्य हितधारकों से सुझाव और अन्य अभ्यावेदन प्राप्त करने के लिए जन सुनवाई का आयोजन किया गया था।आयोग ने 18 अक्टूबर को जन सुनवाई किए जाने की अधिसूचना जारी की थी। जन सुनवाई 10 अविभाजित जिलों के मुख्यालयों में आयोजित की जाएगी जिसमें राज्य के सभी 33 जिले शामिल होंगे।आयोग, हैदराबाद स्थित अपने कार्यालय में गैर सरकारी संगठनों, जातिकल्याण संघों के लिए 12 नवंबर को तथा आम जनता के लिए 13 नवंबर को जन सुनवाई करेगा। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी द्वारा आयोजित बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार, आंकड़ा एकत्रित करने की अंतिम तिथि नौ दिसंबर है तेलंगाना पिछड़ा वर्ग आयोग के आंकड़ों के आधार पर स्थानीय निकायों में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण के प्रतिशत की सिफारिश करेगा।

आंगनबाड़ी केंद्रों में बांट दिए एक्सपायरी डेट के कीड़े लगे दाल, अभिभावकों में आक्रोश

गाजीपुर। बच्चों के कुपोषण में कमी लाने व गर्भवती माताओं के स्वास्थ्य में सुधार के लिए जिले में आंगनबाड़ी केंद्र खोले गए हैं, लेकिन जिले में इन उद्देश्यों पर संबंधित विभाग गंभीर नजर नहीं आ रहा है। शहर क्षेत्र के आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों व गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया जा रहा है। इस क्षेत्र के कई आंगनबाड़ी केंद्रों में एक्सपायरी डेट के दाल सहित अन्य खाद्य पदार्थ के पैकेट बांटे गए। खराब क्वालिटी की सप्लाई को बीते शनिवार को बिना जांच के वार्ड नंबर छह के लाभार्थियों को बांट दिया गया। कुछ लोगों ने जब दाल पर एक्पायरी तिथि देखी तो महिला एवं बाल विकास विभाग से शिकायत की। साथ ही सभी को फोन करके सचेत कर दिया, ताकि वे इसका प्रयोग न करें। विभागद्वारा दिए गए एक्सपायरी डेट के दाल बच्चों के लिए किसी जहर से कम नहीं हैं। हैरानी की बात है कि विभाग के अधिकारियों को इसकी जानकारी तक नहीं हैए जिससे वे इसकी जिम्मेवारी लेने को तैयार नहीं हैं। उक्त घटना से लोगों में विभाग के खिलाफकाफी रोष है। उनका कहना है कि बच्चों व गर्भवती महिलाओं को आंगनबाड़ी केंद्रों में पौष्टिक आहार दिया जाता हैए लेकिन अगर एक्सपायरी डेट की खाद्य सामग्री बांट दी तो लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आंगनबाड़ी केंद्र में कीड़ा लगा पोषाहार आपूर्ति करने के मामले में जांच कब होगी। यह बताने वाला कोई नहीं है। आपूर्तिकर्ता ने आंगनबाड़ी सेविका को बांटने के लिए एक्सपायरी डेट की आंगनबाड़ी में खाद्य सामाग्री दी गयी थी। इन पोषाहार सामग्री में मिल्क पाउडरए दालए सोयाबीन पैकेट आदि शामिल थे।वहीं आंगनबाड़ी की सेविका ने एक्सपायरी डेट बिना पढ़े ही लाभार्थियों को पोषाहार बांट दिया। बांटे हुए एक्सपायरी पोषाहार की शिकायत अभिभावकों ने आंगनबाड़ी केंद्र में जाकर कीए जिसमें कीड़े लगे पोषाहार पाया गया था। अभिभावकों ने आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका पर जानबूझकर कीड़ा लगे एक्सपायरी पोषाहार बच्चों के बीच वितरण करने का आरोप लगाया है। पोषाहार में कीड़ा मिलने के बाद स्थानीय ग्रामीण समेत जनप्रतिनिधियों ने जमकर हंगामा किया। साथ ही आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका को चेतावनी देते हुए कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य के साथ इस तरह का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

दीपावली सम्मान समारोह में कवियों ने बांधा समां

प्रयागराज। दीपावली और धनतेरस के अवसर पर विद्यार्थी ग्रुप द्वारा स्थानीय केजीएफविला में आयोजित खेल मनोरंजन और लकी ड्रॉ के कार्यक्रम में हास्य कलाकार संजय भाई एवं कवि अभिजीत मिश्र एवं शिवम भगवती ने खूब समां बांधा। आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थी ग्रुप के सीएमडी अनुज विद्यार्थी ने कहा कि विद्यार्थी ग्रुप की महत्वाकांक्षी परियोजना श्री रामजानकी नगर श्रृंगवेरपुर तीर्थ क्षेत्र में आध्यात्मिक आवासीय और धार्मिक दृष्टिकोण से संचालित है। जिस तरह से सरकार द्वारा श्रृंगवेरपुर तीर्थ क्षेत्र को विकसित करने के लिए अनेक परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। उसी तरह विद्यार्थी ग्रुप भी श्रृंगवेरपुर तीर्थ क्षेत्र को विकसित करने में अपनी छोटी सी भूमिका निभा रहा है। विद्यार्थी ग्रुप की सीईओ अनुष्का विद्यार्थी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हमेशा की तरह विद्यार्थी ग्रुप देश और समाज के लिए अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। इसमें लोगों की भागीदारी समूह की सबसे बड़ी संपत्ति है। इस अवसर पर मशहूर हास्य कलाकार संजय भाई ने अपने प्रस्तुति में लोगों को खूब हंसाया और गुदगुदाया। कवि अभिजीत मिश्रा और शिवम भगवती भी प्रभावी रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि फाफामऊ विधानसभा क्षेत्र के विधायक गुरु प्रसाद मौर्य विशिष्ट अतिथि प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार से सम्मानित अनुष्का पाठक सहायक आयुक्त जीएसटी एस के पांडेय पार्षद मम्फोर्डगंज विजय विश्वास रावत निदेशक मनीषा पांडेय जनरल मैनेजर प्रियंका सिंह अधिवक्ता आदित्य मिश्र एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंतिमा पाण्डेय वाइस प्रेसिडेंट अक्षय पाण्डेय यश पाण्डेय आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में एंकरिंग अभिजीत मौर्य ने की।

प्रो. राजीव कुमार एसटी फिजियोलॉजिस्ट के अध्यक्ष चुने गए

वाराणसी। इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के एनेस्थिसियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजीव कुमार दुबे को इंडियन सोसाइटी ऑफ एनेस्थेसियोलॉजिस्ट के उत्तर प्रदेश चैप्टर का निर्वाचित अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उन्हें यह जिम्मेदारी 27 अक्टूबर 2024 को ओरछा ;मध्य प्रदेशद्ध में आयोजित एनेस्थिसियोलॉजी और क्रिटिकल केयर में नवाचार और प्रौद्योगिकी पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और इंडियन सोसाइटी ऑफ एनेस्थिसियोलॉजिस्ट के 15वें वार्षिक सेंट्रल ज़ोन सम्मेलन में सौंपी गई। वे 16 अक्टूबर 2026 तक इस पद पर बने रहेंगे।

जाली दस्तावेजों से आधार कार्ड बनवाने के आरोप में पाकिस्तानी महिला के खिलाफ मामला हुआ दर्ज

जयपुर। भारत मे रहने के लिए कथित रूप से जाली दस्तावेज के जरिए आधार और पैन कार्ड बनवाने के आरोप में एक पाकिस्तानी महिला के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार, महिला लगभग 40 साल से यहां रही है। पुलिस ने बताया आरोपी शाजिया रियाज 1985 में भारत आई और उसने एक भारतीय से शादी की तथा उसके चार बच्चे है। पुलिस के अधिकारियों के मुताबिक, खुफिया सूचनाओं के आधार पर कार्वाई करते हुए आरोपी महिला के दस्तावेजों की जांच की गई और जांच मे पाया गया कि उसने जाली दस्तावेजों के आधार पर भारतीय पहचान पत्र बनाए गए थे। जयसिंहपुरा खोर के थानाधिकारी राजेश मीणा ने कहा, "खुफिया सूचना के आधार पर कार्वाई करते हुए जांच की गई और पाया गया कि महिला ने जाली तरीके से आधार कार्ड, पैन कार्ड और अन्य दस्तावेज बनवाए थे। उसके खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और आगे की जांच जारी है।

शिअद के हरजिंदर धामी फिर एसजीपीसी के अध्यक्ष चुने गए

अमृतसर।शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के उम्मीदवार हरजिंदर सिंह धामी सोमवार को लगातार चौथी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) के अध्यक्ष चुने गए। धामी ने अपनी प्रतिद्वंद्वी एवं एसजीपीसी की पूर्व प्रमुख बीबी जागीर कौर को हराया। कौर, शिरोमणि अकाली दल सुधार लहर की तरफ से मैदान में थी जो शिअद का एक बागी गुट है।चुनाव में कुल 142 मत डाले गए जिनमें से शिरोमणि अकाली दल के उम्मीदवार धामी को 107 और कौर को 33 वोट मिले। दो वोट अमान्य घोषित कर दिए गए।

बंगाल सरकार ने गुटखा, पान मसाला उत्पादों पर प्रतिबंध बढ़ाया

कोलकाता। पश्चिम बंगाल सरकार ने तंबाकू या निकोटीन युक्त गुटखा और पान मसाला को सात नवंबर से एक वर्ष के लिए उत्पादों के निर्माण, भंडारण व बिक्री पर प्रतिबंध को सात नवंबर से एक वर्ष के लिए और बढ़ा दिया। राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने 24 अक्टूबर को यह आदेश जन स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का हवाला देते हुए जारी किया।

यूट्यूबर ने तमिलनाडु पुलिस पर आरोप लगाते हुए अदालत का रुख किया, एक करोड़ मुआवजे की मांग

नई दिल्ली। (भाषा) यूट्यूबर फेलिक्स जेराल्ड ने कथित तौर पर तमिलनाडु पुलिस द्वारा उनके मानवाधिकारों के हनन के विरुद्ध सोमवार को दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया। जेराल्ड ने आरोप लगाया है कि तमिलनाडु पुलिस ने उन्हें अवैध रूप से हिरासत में लिया है और उनमें मानवाधिकारों का उल्लंघन किया है। न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने जेराल्ड की याचिका के मद्देनजर उन्हें अपने आरोपों के समर्थन में अतिरिक्त दस्तावेज पेश करने के लिए मोहलत दे दी। जेराल्ड को कथित तौर पर अपने यूट्यूब चैनल पर एक अन्य यूट्यूबर सवुक्कु शंकर का "आपत्तिजनक" साक्षात्कार होस्ट करने के लिए गिरफ्तार किया गया था। साक्षात्कार में कथित तौर पर मद्रास उच्च न्यायालय और तमिलनाडु पुलिस की महिला पुलिस अधिकारियों के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की गई थी। उच्च न्यायालय ने मामले को 16 दिसंबर के लिए सूचीबद्ध किया है। पत्रकार जेराल्ड ने दावा किया कि उन्हें तमिलनाडु पुलिस अधिकारियों ने दो दिनों तक अवैध रूप से हिरासत में रखा और उनके ठिकाने के बारे में उनके परिवार के सदस्यों या दोस्तों को "बुरी मंशौ से नहीं बताया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि गिरफ्तारी के दौरान दंड प्रक्रिया संहिता के प्रावधानों का पालन नहीं किया गया, जो उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। अधिवक्ता सूर्य प्रकाश और अविनाश कुमार के जरिए दायर याचिका में तमिलनाडु सरकार और कई पुलिस अधिकारियों को याचिकाकर्ता को हुई पीड़ा, अपमान और मानहानि के लिए एक करोड़ रुपए का मुआवजा देने का निर्देश देने की मांग की गई है।

देश की संपत्ति को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित किया जा रहा है

नई दिल्ली।(भाषा) लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि उसके तहत केवल एकाधिकार को प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा है, बल्कि देश की संपत्ति को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित किया जा रहा है। उन्होंने कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा के साथ वीडियो संवाद की नई कड़ी में माधवी बुच और अदाणी समूह को लेकर बात की। राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, संस्थागत पतन ने अब मित्रवादी पूंजीवाद के एक और अधिक खतरनाक रूप अदाणी बचाओ को जन्म दे दिया है। वर्तमान शासन अब केवल एकाधिकार को प्रोत्साहित नहीं कर रहा है, यह सक्रिय रूप से देश की संपत्ति को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित कर रहा है। राहुल गांधी ने दावा किया कि माधवी बुच से जुड़ा घोटाला जो दिख रहा है, उससे कहीं अधिक व्यापक है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, ऐसा हो सकता है कि बुच, जिसे खुदरा निवेशकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई है, अदाणी समूह के हितों और उसके बढ़े हुए मूल्यांकन की रक्षा के लिए व्यवस्थित तरीके से हेरफेर कर रहा हो। उन्होंने कहा, जिन लोगों को आम भारतीय नागरिकों और उनके निवेश की सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई है, उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों से इनकार कर दिया है और व्यापक पैमाने पर भ्रष्टाचार और कदाचार में लिप्त हैं। कांग्रेस नेता ने कहा, कांग्रेस पार्टी ने लगातार इन मुद्दों को उठाया है, इन घोटालों की जांच की है और जनता के सामने सच्चाई उजागर की है।

विधिक सहायता शिविर का आयोजन

बाराबंकी। श्रीरामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज के लीगल एड सेल द्वारा, धावा गांव में विधिक जागरूकता रैली व नुक्कड़ नाटक का आयोजन हुआ, जिसमें विधि के छात्रों ने भाग लिया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों जैसे रेप , लिंग परीक्षण, बाल विवाह, एसिड अटैक छेड़खानी जैसे गंभीर अपराधों और उनके उपचार के बारे में गांव के लोगों ओर महिलाओं को जागरूक किया गया। इस आयोजन में गांव के प्रधान सहित महिलाओं ओर बच्चों ने बढ़-चढ़ के भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन प्रो. रोहित पी साबरान डायरेक्टर इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्ट्डीज के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। लीगल एड सेल के कॉर्डिनेटर असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. महेंद्र कुमार ने कहा कि बच्चे इसी तरह गांव में जाकर सबको जागरूक करते रहेंगे और किसी को कोई भी समस्या होती है तो श्री रामस्वरूप में मेमोरियल यूनिवर्सिटी लीगल एड सेल में आकर अपनी समस्या बताएं जिसका निवारण करने का प्रयास किया जाएगा। फैकल्टी कोऑर्डिनेटर, असिस्टेंट प्रोफेसर कौशलेंद्र प्रताप सिंह ने कहा की यह समस्या एक जगह की नहीं है। हर जगह की है, हर गांव की है ,हर शहर की है, हम इसी तरह बच्चों के साथ मिलकर लोगों को जागरूक करते रहेंगे और साथ ही निशुल्क विधिक सहायता प्रदान करते रहेंगे। धावा ग्राम प्रधान भैरो सिंह यादव ने इस काम की बहुत सहारना की और फिर से नुक्कड़ नाटक का आयोजन करने के लिए आमंत्रित किया। लीगल एड सेल प्रेसिडेंट बिन्नी त्रिपाली, वाइस प्रेसिडेंट अथर्वज चौहान,अजय सिंह, कशिश वृंदा प्रज्वल सिंह सहित सभी छात्रों ने इस कार्यक्रम में योगदान दिया और इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

दिव्यांग व्यक्तियों को तमिल भाषा की अनिवार्यता से छूट प्रदान करें: उच्च न्यायालय

चेन्नई।(भाषा) मद्रास उच्च न्यायालय ने कहा है कि दिव्यांग व्यक्तियों के सामने आने वाली बाधाएं न केवल शारीरिक पहुंच के मुद्दों से परे हैं, बल्कि समाज के कई पहलुओं में व्याप्त गहरी जड़ें जमाए हुए पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों और गलत धारणाओं तक फैली हुई हैं।

न्यायमूर्ति एन. आनंद वेंकटेश ने हाल ही में पारित एक आदेश में यह टिप्पणी की, जिसमें तमिलनाडु हाउसिंग बोर्ड के सहायक अभियंता बी. विद्यासागर की याचिका स्वीकार की गई, जिसमें उन्होंने अधिकारियों को यह निर्देश देने की मांग की थी कि वे (अधिकारी) 23 मई, 2022 के शासनादेश के आलोक में तमिल भाषा परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने के लिए उन पर जोर न दें और लंबित वेतन वृद्धि एवं पदोन्नति प्रदान करें। याचिकाकर्ता दिव्यांग हैं। न्यायाधीश ने कहा कि शिक्षा और रोजगार से लेकर स्वास्थ्य देखभाल और सार्वजनिक सेवाओं तक, दिव्यांग व्यक्तियों को अक्सर महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी पूर्ण भागीदारी और समावेशन में बाधा डालती हैं। उसी के मद्देनजर, एक संवैधानिक न्यायालय को सामाजिक, मनोवृत्ति, सांस्कृतिक, संस्थागत, संरचनात्मक, कानूनी और पर्यावरणीय बाधाओं की समझ विकसित करनी चाहिए, जिनका दिव्यांग व्यक्ति रोजाना सामना करते हैं। उन्होंने कहा कि संवैधानिक न्यायालय को अपने निर्णयों के माध्यम से इन बाधाओं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। शीर्ष अदालत के एक निर्णय का हवाला देते हुए न्यायाधीश ने कहा कि

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से यह स्पष्ट है कि विशिष्ट दिव्यांगता के शिकार व्यक्तियों को उचित सुविधा प्रदान करने में विफलता के कारण उनके खिलाफ स्पष्ट भेदभाव होगा और जिसे संवैधानिक न्यायालय द्वारा ठीक किया जाना चाहिए। न्यायाधीश ने कहा कि उपरोक्त आवश्यकता को पूरा करने के लिए, उच्चतम न्यायालय द्वारा विभिन्न निर्णय पारित किए गए हैं, जिनका पालन उच्च न्यायालयों द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए किया गया है कि दिव्यांगता से पीड़ित व्यक्ति को सामान्य रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए लागू की जाने वाली शर्तें थोपकर अनावश्यक कठिनाई में न डाला जाए। न्यायाधीश ने कहा कि इस मामले में, याचिकाकर्ता निश्चित रूप से 100 प्रतिशत सुनने और बोलने की अक्षमता से पीड़ित था। किसी तरह उसने अंग्रेजी भाषा में पढ़ाई पूरी की और अब तमिल भाषा की परीक्षा पर जोर दिया गया, जिसमें एक लिखित परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा भी शामिल है।उन्होंने कहा कि याचिकाकर्ता की दिव्यांगता को देखते हुए, यह समझ से परे है कि याचिकाकर्ता मौखिक परीक्षा में कैसे शामिल होगा। इसलिए, याचिकाकर्ता को तमिल भाषा की परीक्षा पास करने से छूट देकर उचित रूप से समायोजित किया जाना चाहिए। न्यायाधीश ने कहा कि याचिकाकर्ता ने लंबे संघर्ष के बाद आवास बोर्ड में नौकरी प्राप्त की है और पिछले 10 वर्षों से काम कर रहा है। अगर उसे अब बाहर का रास्ता दिखा दिया गया तो उसकी दिव्यांगता को देखते हुए उसे बिना किसी रोजगार के सड़कों पर छोड़ दिया जाएगा। इसलिए, यह एक ऐसा योग्य मामला है, जहां याचिकाकर्ता को ऐसी छूट दी जा सकती है। अदालत ने अपने फैसले में कहा, उपर्युक्त चर्चा के आलोक में, यह अदालत भारत के संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत अपने असाधारण अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करना चाहती है और तदनुसार, आवास बोर्ड को याचिकाकर्ता को तमिल भाषा की परीक्षा उत्तीर्ण करने और प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने से छूट देने का निर्देश दिया जाएगा। रिट याचिका में पारित इस आदेश का हवाला देते हुए तमिलनाडु आवास बोर्ड द्वारा इस संबंध में एक विशिष्ट आदेश पारित किया जाएगा।

पेज 1 का शेष

2025 में...

खासकर युवा आबादी के लाभ के लिए 'कौशल जनगणना' की सक्रिय रूप से वकालत कर रहे हैं। आरएसएस भी जाति जनगणना के पक्ष में है, बशर्ते कि यह किसी पार्टी द्वारा राजनीतिक लाभ के लिए न किया जा रहा हो। दक्षिण के कई राज्यों, खासकर तमिलनाडु ने सख्त जनसंख्या नीति का पालन किया है और इसलिए, सरकार यह देखने के लिए एक प्रस्ताव पर भी विचार कर रही है कि परिसीमन प्रक्रिया के माध्यम से उनके साथ कोई अनुचित व्यवहार न हो।

भारत-स्पेन..

उन्होंने कहा कि यह पारिस्थितिकी तंत्र भविष्य में मेड इन इंडिया नागरिक विमानों का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह देखते हुए कि विभिन्न भारतीय एयरलाइनों ने 1200 नए विमानों का ऑर्डर दिया है, मोदी ने कहा कि नव उद्घाटित कारखाना भारत और दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए नागरिक विमानों के डिजाइन से लेकर निर्माण तक में प्रमुख भूमिका निभाएगा। मोदी ने स्पेनिश-भारतीय जेसुइट पादरी और लेखक फादर कार्लोस वैलेस का भी उल्लेख किया, जो पांच दशकों तक भारत में रहे और उन्होंने गुजराती में गणित पर कई किताबें लिखीं। मोदी ने कहा कि फादर वैलेस ने अपने विचारों और लेखन से संस्कृति को समृद्ध किया था, उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने उनके योगदान के लिए उन्हें पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया था। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि सी295 कार्यक्रम के तहत 56 विमान वितरित किए जाने हैं, जिनमें से 16 स्पेन से सीधे एयरबस द्वारा वितरित किए जा रहे हैं और शेष 40 टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड द्वारा भारत में बनाए जाएंगे।

सेना के वाहन...

सेना ने इससे पहले 26 सितंबर, 2013 को सांबा सेना शिविर में घुसने के बाद फिदायीन (आत्मघाती दस्ते के सदस्य) के एक समूह को खदेड़ने के लिए टैंकों का इस्तेमाल किया था। 16 अक्टूबर को उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली सरकार के गठन के बाद सेना की एंबुलेंस पर लक्षित हमला इस तरह का तीसरा हमला था। सेना द्वारा त्वरित जवाबी कार्रवाई ने इस आश्चर्यजनक हमले में किसी भी तरह की जान को होने से बचा लिया। इसके बाद हुई मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार गिराया गया। सुबह 7 बजे के कुछ समय बाद शुरू हुई मुठभेड़ रिपोर्ट दर्ज किए जाने तक जारी थी। प्रारंभिक रिपोर्टों से पता चलता है कि विदेशी आतंकवादियों के समूह ने तड़के नियंत्रण रेखा के पार से घुसपैठ की और भोर में वे बटाल क्षेत्र से गुजर रहे छात्रों के एक समूह से मिले। जैसे ही आतंकवादी उनके पास पहुंचे और उनसे मोबाइल फोन मांगा, छात्रों ने शोर मचा दिया। स्थानीय ग्रामीणों के इकट्ठा होने से पहले ही आतंकवादी आसन क्षेत्र में एक स्थानीय धार्मिक स्थल की ओर भाग गए। जमीनी हालात का बारीकी से आकलन करने के बाद सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने आतंकवादियों को उनके सुरक्षित ठिकानों से खदेड़ने के लिए पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी। दिन में सुरक्षा बलों ने युद्ध में माहिर आतंकवादियों के साथ रुक-रुक कर गोलीबारी की। इलाके के निवासी दोनों तरफ से अत्यधिक गोलाबारी देखकर दंग रह गए। मीडिया टीमों को भी मुठभेड़ स्थल से सुरक्षित दूरी पर रखा गया। देर शाम ऑपरेशन रोक दिया गया जबकि कड़ी घेराबंदी बनाए रखने के लिए अतिरिक्त बलों को इलाके में भेजा गया। आतंकवाद विरोधी अभियानों की निगरानी के लिए जम्मू रेंज के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक आनंद जैन सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मौके पर डेरा डाले हुए हैं। आतंकवादी संगठनों के पाकिस्तान स्थित हैंडलर पहले भी भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ के लिए इसी रास्ते का इस्तेमाल करते रहे हैं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि अगस्त 2024 के पहले हफ्ते में भी घुसपैठ की ऐसी ही कोशिशें की गई थीं। 24 अक्टूबर को बारामुल्ला के गुलमर्ग के बोटा पथरी इलाके के पास घात लगाकर किए गए हमले में दो सैनिक और दो कुली मारे गए थे। 20 अक्टूबर को गंदेरबल जिले के सोनमर्ग इलाके में एक निर्माण स्थल पर आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में एक डॉक्टर और निर्माण कंपनी के छह अन्य कर्मचारियों सहित सात लोग मारे गए थे। 18 अक्टूबर को शोपियां जिले में आतंकवादियों ने बिहार के एक प्रवासी मजदूर अशोक चौहान की हत्या कर दी थी। स्थानीय लोगों ने जैनापोरा के वडुना इलाके में चौहान का गोलियों से छलनी शव बरामद किया था।

फैंटम...

'जब हमारे सैनिक फंसे हुए आतंकवादियों पर हमला कर रहे थे, तो फैंटम ने दुश्मन की गोलीबारी का सामना किया, जिससे उसे घातक चोटें आईं। उनके साहस, निष्ठा और समर्पण को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा।'

नए मंदिर...

लाओस समेत छह देशों के रामलीला कलाकार अगले तीन दिनों तक शाम 5 बजे से रात 9 बजे तक राम कथा पार्क और राम की पैड़ी पर प्रस्तुति देंगे, जिससे इस आयोजन में अंतरराष्ट्रीय रंग जुड़ जाएगा।इस दिवाली अयोध्या के संत और आध्यात्मिक नेता दिव्य आनंद से भरे हुए हैं, क्योंकि उनका मानना है कि यह उत्सव उस युग की याद दिलाता है जब भगवान राम धरती पर आए थे। भव्य मंदिर के निर्माण और रामलला की स्थापना को लेकर अयोध्या को फूलों और चमकदार रोशनी से सजाया गया है। महंत विवेक आचार्य ने कहा, इस बार भव्य मंदिर और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर अयोध्या में उल्लास है। मठ और मंदिर भी दीपों से जगमगाते हुए इस उत्सव में शामिल होंगे। अयोध्या में सजावट और माहौल पर विचार करते हुए जगद्गुरु स्वामी रामदिनेश आचार्य ने कहा, यह वास्तव में बलराम की दिवाली है। खूबसूरती से सजा शहर उस रात की यादें ताजा कर रहा है जब भगवान राम वापस लौटे थे, ऐसा लग रहा है जैसे वह दृश्य एक बार फिर जीवंत हो गया है। हर घर, गली और कोना राम के स्वागत के लिए सज गया है। रामलला का अभिषेक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने का प्रतीक है। निवासियों, संतों और नेताओं की भागीदारी के साथ, अयोध्या का दीपोत्सव एक ऐसा तमाशा होने का वादा करता है जो किसी और की तरह नहीं होगा – एक ऐसा उत्सव जो न केवल एक ऐतिहासिक क्षण का स्मरण कराता है बल्कि एक प्राचीन युग की भावना को भी पुनर्जीवित करता है, जिससे भगवान राम की दिव्य उपस्थिति एक बार फिर वास्तविक महसूस होती है।

नोएडा...

फायर डिपार्टमेंट से एनओसी लेनी होगी। इसे लागू किया। लेकिन इस बीच एक सोसाइटी के निवासियों ने आपत्ति उठाई कि लिफ्ट लगवाने में हमारी सहमति होनी ज़रुरी है। ये लोग बाकी तल पर रहने वाले है। ऐसे में 190वीं बोर्ड ने प्रथम के साथ ऊपर के सभी फ्लोर वालों की 50 प्रतिशत संख्या में अनापत्ति प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने को कहा गया। जिसमें ग्राउंड फ्लोर को इस अनापत्ति से दूर रखा गया। इसे लागू किया गया। लेकिन इस बार ग्राउंड फ्लोर निवासियों ने आपत्ति लगाई कि लिफ्ट से स्ट्रक्चर और कॉमन एरिया को कम किया जा रहा है। ऐसे में प्राधिकरण की 215वीं बोर्ड बैठक में नियम को संशोधित किया गया। और ग्राउंड समेत सभी तलों से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेने की बद ही लिफ्ट लगवाने के लिए आवेदन करने के क्लॉज को पास किया गया।

स्थानीय...

नंबर 57 पर जगतपुरी स्टोन मार्केट में वाहनों की भारी आवाजाही के कारण ट्रैफिक की समस्या पैदा होती है। उन्होंने कहा कि पुस्ता रोड में गांधी नगर क्लॉथ मार्केट के कारण भी ट्रैफिक जाम रहता है और बाजार जीटीबी अस्पताल रेड लाइट पॉइंट के उस रूट पर हैं। दक्षिणी रेंज में आगे, बी.पी. मार्ग (कोटला रेड लाइट से एंड्रयूज गंज सिग्नल) पर व्यावसायिक दुकानें (लकड़ी और हार्डवेयर की दुकानें) जो कैरिजवे के दोनों ओर स्थित हैं। उन्होंने कहा, लोग सामान खरीदने आते हैं और अपने वाहन सड़क किनारे पार्क करते हैं क्योंकि पार्किंग का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। अरबिंदो मार्ग (अधचीनी गांव) और इग्नू रोड (इग्नू कट से जेड-मोड़) में स्थानीय बाजारों की मौजूदगी ने भी शहर के दक्षिणी रेंज में ट्रैफिक जाम की स्थिति पैदा की। शहर के पश्चिमी रेंज में, नजफगढ़ रोड पर उत्तम नगर टर्मिनल से ओल्ड पालम रोड, मधु विहार में रोड नंबर 201 से सेक्टर 3/13 क्रॉसिंग पर राजापुरी और नजफगढ़ फिरनी रोड के इलाकों में स्थानीय बाजारों में भारी भीड़ देखी गई।

देश का आर्थिक प्रदर्शन संतोषजनक : रिपोर्ट

वित्त मंत्रालय ने जारी की

भाषा। नई दिल्ली

चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन संतोषजनक रहा है, लेकिन आगे मांग की स्थिति को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। वित्त मंत्रालय की एक रिपोर्ट में यह कहा गया है। इसमें कहा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य अच्छा है। इसका कारण रुपए समेत बाह्य मोर्चे पर स्थिरता, सकारात्मक कृषि परिदृश्य, त्योहारों में मांग में सुधार और सरकारी खर्च में वृद्धि की संभावना है। कुल मिलाकर उम्मीद है कि इससे निवेश गतिविधियों में तेजी आएगी। आर्थिक मामलों के विभाग द्वारा सोमवार को जारी मासिक आर्थिक समीक्षा के सितंबर संस्करण में हालांकि कहा गया है कि अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति पर नजर रखने की जरूरत है। उपभोक्ता धारणा में नरमी, सामान्य से अधिक बारिश के कारण सीमित ग्राहक संख्या और विभिन्न मौसमी अवधियों में लोगों के नई खरीदारी से बचने को देखते हुए ऐसा जान पड़ता है कि शहरी मांग में नरमी है। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर बढ़ते संघर्षों, आर्थिक स्तर पर बढ़ता बिखराव और कुछ विकसित अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय बाजारों में ऊंचे मूल्यांकन से वृद्धि के लिए, जोखिम उत्पन्न हुए हैं। इसमें कहा गया है कि भारत पर उनके प्रभाव से संपत्ति, घरेलू धारणाओं पर असर पड़ सकता है और टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च को लेकर योजनाओं में बदलाव आ सकता है। महंगाई दर में दो महीने की नरमी के बाद सितंबर में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति बढ़ी। इसका कारण अनियमित मानसून के चलते मुख्य रूप से कुछ सब्जियों की आपूर्ति पर असर पड़ना था। रिपोर्ट के अनुसार, कुछ सब्जियों की कीमतों में तेज वृद्धि को छोड़ दिया जाए तो महंगाई काफी हद तक काबू में नजर आ रही है। इसमें कहा गया है कि मध्यम अवधि में जलाशयों में जलस्तर का बेहतर होना, खरीफ फसलों की अच्छी बुवाई से कृषि उत्पादन बेहतर रहने की

संभावना बनी है। इसके साथ पर्याप्त खाद्यान्न भंडार कीमतों को काबू में रखने में मददगार होगा। वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देश में प्रत्यक्ष रूप से और पोर्टफोलियो निवेशकों के बीच भारत के प्रति धारणा सकारात्मक है। इन सकारात्मक भावनाओं को वास्तविक प्रत्यक्ष और पोर्टफोलियो निवेश में बदलने के लिए आर्थिक वृद्धि की गति को बनाए रखना आवश्यक है। हालांकि, विदेशी निवेशक भारतीय बाजार में लगातार बिकवाल बने हुए हैं। उन्होंने इस महीने शेयरों से 85,790 करोड़ रुपए (लगभग 10.2 अरब डॉलर) की भारी निकासी की है। इसका कारण चीन में प्रोत्साहन उपाय, आकर्षक शेयर मूल्यांकन और घरेलू शेयर बाजार में शेयरों का मूल्यांकन अधिक होना है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अक्टूबर में अबतक की सर्वाधिक निकासी की है। इससे पहले, मार्च, 2020 में एफपीआई ने 61,973 करोड़ रुपए शेयर बाजार से निकाले थे। रिपोर्ट में कहा गया है कि बाह्य क्षेत्र लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। बढ़ते पूंजी प्रवाह, स्थिर रुपए और संतोषजनक विदेशी मुद्रा भंडार से यह पता चलता है। इस साल सितंबर में विदेशी मुद्रा भंडार 700 अरब डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। इसके साथ भारत 700 अरब डॉलर से अधिक भंडार वाले शीर्ष चार देशों में से एक बन गया। रिपोर्ट में नौकरी बाजार के संबंध में कहा गया है कि विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों में वृद्धि जारी है। यह 2022-23 के लिए उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण से पता चलता है। इसमें कहा गया है, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के तहत शुद्ध रूप से नए लोगों के जुड़ने, क्रय प्रबंधकों के रोजगार उप-सूचकांक और नौकरीजॉब स्पीक इंडेक्स, संगठित क्षेत्र में रोजगार सृजन का संकेत देते हैं। हालांकि, कुछ रिपोर्ट में कृत्रिम मेधा के उपयोग से कर्मचारियों के नौकरी जाने की बात आई है। ऐसे में इस पर नजर रखने की जरूरत है। इसमें कहा गया है कि जोखिम वैश्विक स्तर पर जारी संघर्ष, आर्थिक स्तर पर बढ़ता बिखराव, प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की व्यापार नीतियों के बारे में अनिश्चितता और उसके परिणामस्वरूप वित्तीय बाजार में उतार-चढ़ाव को लेकर है।

मंदिरों, मठों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए नई योजना शुरू करेगा ओडिशा

भाषा। भुवनेश्वर

ओडिशा सरकार सांस्कृतिक महत्व वाले मंदिरों और मठों के संरक्षण, पुनर्विकास और प्रबंधन के लिए जल्द एक योजना शुरू करेगी। राज्य के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने सोमवार को यह जानकारी दी। हरिचंदन ने बताया कि द्रबालय योजना नाम की इस योजना का विस्तृत खाका तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा, इस योजना के तहत मंदिरों, मठों और सांस्कृतिक महत्व वाले संस्थानों के संरक्षण एवं प्रबंधन से जुड़े मुद्दों को संबोधित किया जाएगा। हमारी सरकार समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाले मंदिरों और मठों के संरक्षण, पुनर्विकास और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। हरिचंदन ने कहा कि प्रस्तावित योजना राज्यभर में धार्मिक संस्थानों की सुरक्षा सहित अन्य मुद्दों का भी समाधान करेगी। पूर्ववर्ती बीजू जनता दल (बीजद) सरकार की बुनियादी सुविधाओं का संवर्धन तथा आवास एवं वास्तुकला का विकास (अबधा) योजना का जिक्र करते हुए हरिचंदन ने कहा कि नई योजना कई मुद्दों को संबोधित करेगी।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने संदीप घोष की बैंक एफडी भुनाने संबंधी याचिका पर सीबीआई से रिपोर्ट मांगी

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के पूर्व प्राचार्य संदीप घोष की सावधि जमा (एफडी) भुनाने संबंधी याचिका पर सोमवार को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति सुभेंदु सामंत ने घोष को अपनी याचिका में सीबीआई को प्रतिवादी बनाने का निर्देश दिया, जिसमें भारतीय स्टेट बैंक को पूर्व प्राचार्य के परिवार की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उनकी सावधि जमा को भुनाने देने का निर्देश दिए जाने का आग्रह किया गया है। घोष को 2 सितंबर को सरकारी आरजी कर अस्पताल में कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच के सिलसिले में और बाद में ड्यूटी पर मौजूद महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या की घटना से जुड़े सबूतों के साथ छेड़छाड़ के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। घोष के वकील ने अदालत के समक्ष दावा किया कि उनके मुवक्किल की हिरासत के दौरान उनकी पत्नी ने परिवार की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उनकी सावधि जमा को भुनाने के लिए बैंक से संपर्क किया। उन्होंने दावा किया कि उक्त सावधि जमा के मूल दस्तावेज याचिकाकर्ता के कब्जे में हैं और सीबीआई ने इन्हें जब्त नहीं किया था। वहीं, बैंक के वकील ने कहा कि चूंकि घोष के खिलाफ सीबीआई जांच अभी जारी है, इसलिए सावधि जमा को भुनाना संभव नहीं है। यह उल्लेख करते हुए कि मामले में सीबीआई को पक्षकार नहीं बनाया गया है, न्यायमूर्ति सामंत ने याचिकाकर्ता को निर्देश दिया कि वह उच्च न्यायालय के पिछले आदेशों पर दोनों मामलों की जांच कर रही केंद्रीय एजेंसी को अपनी याचिका में प्रतिवादी बनाए। अदालत ने सीबीआई को 30 अक्टूबर को सुनवाई की अगली तारीख तक रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश देते हुए कहा कि घोष की याचिका के संबंध में आदेश पारित करने से पहले यह आवश्यक है।

कर्नाटक सरकार ने अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण देने को मंजूरी दी

बेंगलुरु। कर्नाटक मंत्रिमंडल ने अनुसूचित जातियों (एससी) के बीच आंतरिक आरक्षण प्रदान करने के लिए सोमवार को अपनी सहमति दे दी और इस संबंध में डेटा जुटाने के लिए एक आयोग गठित करने का फैसला किया। मंत्रिमंडल की बैठक के बाद कानून एवं संसदीय मामलों के मंत्री एच के पाटिल ने संवाददाताओं को बताया कि उच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया जाएगा। पाटिल ने कहा, कर्नाटक में अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण प्रदान करने के संबंध में विचार-विमर्श हुआ। अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण के संबंध में उच्चतम न्यायालय के हाल के फैसले के मद्देनजर, मंत्रिमंडल ने अनुसूचित जातियों के बीच आंतरिक आरक्षण प्रदान करने को अपनी मंजूरी दे दी। उन्होंने कहा, आंकड़े प्राप्त करने के बाद अगले कदम पर निर्णय लिया जाएगा। सरकार समिति से तीन महीने में रिपोर्ट सौंपने को कहेगी। पाटिल ने कहा कि मंत्रिमंडल ने आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट सौंपे जाने तक आगामी सभी भर्तियों को कम से कम तीन महीने के लिए स्थगित करने का भी निर्णय लिया है। उन्होंने कहा, आज से यदि किसी भर्ती की अधिसूचना जारी की जानी है तो वह प्रक्रिया नहीं होगी, यह आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट सौंपे जाने के बाद ही शुरू होगी। विधानसभा चुनावों से ठीक पहले, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत पूर्ववर्ती सरकार के मंत्रिमंडल ने आंतरिक आरक्षण पर निर्णय लिया था, जिसमें केंद्र सरकार को अनुसूचित जाति (लेफ्ट) के लिए छह प्रतिशत, अनुसूचित जाति (राइट) के लिए 5.5 प्रतिशत, स्पृश्य (बंजारा, भोवी, कोरचा, कुरुमा) के लिए 4.5 प्रतिशत और अन्य के लिए एक प्रतिशत आंतरिक कोटा की सिफारिश की गई थी।उच्चतम न्यायालय ने एक अगस्त को एक ऐतिहासिक फैसले में कहा कि राज्यों को अनुसूचित जातियों के भीतर उप-वर्गीकरण करने का संवैधानिक अधिकार है, ताकि सामाजिक और शैक्षणिक रूप से अधिक पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए आरक्षण दिया जा सके।

कांग्रेस की झारखंड इकाई के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष भाजपा में शामिल

रांची। कांग्रेस की झारखंड इकाई के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष मानस सिन्हा विधानसभा चुनाव से पहले सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। भाजपा की झारखंड इकाई के कार्यकारी अध्यक्ष रवींद्र राय और झारखंड में पार्टी के चुनाव सह-प्रभारी असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने पार्टी मुख्यालय में एक समारोह के दौरान उनका पार्टी में स्वागत किया।पार्टी में शामिल होने के बाद सिन्हा ने कहा, मैंने पिछले 27 साल से कांग्रेस पार्टी की सेवा की और अलग-अलग पदों पर काम किया। लेकिन पार्टी में समर्पित कार्यकर्ताओं के लिए कोई सम्मान नहीं रह गया है। इसलिए मैंने भाजपा में शामिल होने का फैसला किया। सिन्हा ने कहा कि उन्होंने कांग्रेस पार्टी में सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। असम के मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि कांग्रेस में उन कार्यकर्ताओं का कोई महत्व नहीं है, जिन्होंने पार्टी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि सिन्हा के अनुभव का उपयोग राज्य स्तर पर पार्टी को मजबूत करने और चुनाव जीतने के लिए किया जाएगा। शर्मा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी में चुनाव के लिए टिकट तीन मानदंडों के आधार पर दिए जाते हैं। पहला - पार्टी को धन की पेशकश, दूसरा - विधायक, सांसद या मंत्री के प्रतिष्ठित परिवारों से जुड़े होना और तीसरा - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ अपशब्द कहना। झारखंड के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) को हटाने की झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की मांग के सवाल पर शर्मा ने कहा कि यह शायद पहली बार है जब कोई सत्तारूढ़ पार्टी किसी अधिकारी को हटाने की मांग कर रही है।

नड्डा का भाजपा सांसदों, विधायकों व कार्यकर्ताओं से रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम में भाग लेने का आग्रह

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने सोमवार को आम जन के साथ ही पार्टी के सांसदों, विधायकों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा सभी जन प्रतिनिधियों से रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम में भाग लेने का आह्वान किया।उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं से मंगलवार के कार्यक्रम के दौरान सरदार वल्लभभाई पटेल के विचारों और योगदान को सोशल मीडिया पर हैशटैग सरदार150 के साथ साझा करके उनके आदर्शों को बढ़ावा देने का आग्रह भी किया।नड्डा ने एक

बयान में कहा, दीपावली की वजह से इस बार 29 अक्टूबर यानि मंगलवार को रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा। मेरा आग्रह है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में इसमें हिस्सा लीजिए। देश की एकता के मंत्र के साथ ही फिटनेस के मंत्र को भी हर तरफ फैलाइए। भाजपा प्रमुख ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि वे आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए हर प्रयास करें।नड्डा ने कहा, मैं भाजपा के सांसदों एवं विधायकों सहित सभी जनप्रतिनिधियों तथा पार्टी के सभी पदाधिकारियों से भी अनुरोध करता हूं कि वे भी रन फॉर यूनिटी सहित सभी कार्यक्रमों में भाग लें और सरदार पटेल को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें। उन्होंने कहा कि भारत की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने में सरदार पटेल की अद्वितीय भूमिका सभी के लिए सदैव प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहेगी।नड्डा ने कहा, इस वर्ष सरदार पटेल की जयंती का 150वां वर्ष शुरू हो रहा है। मेरा पार्टी के कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि वे भारत रत्न सरदार पटेल से जुड़े विचार और कार्य भी सोशल मीडिया पर हैशटैग सरदार150 के साथ साझा कर उनके विचारों एवं आदर्शों को प्रचारित एवं प्रसारित करें। उन्होंने कहा, भाजपा के हर कार्यकर्ता, पदाधिकारी और प्रतिनिधि को हर जगह फिटनेस के संदेश के साथ-साथ सरदार पटेल के राष्ट्रीय एकता के मंत्र को भी बढ़ावा देना चाहिए।

कर्नाटक में एमयूडीए धनशोधन मामले में ईडी ने फिर छापेमारी की

बेंगलुरु। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मैसुरु शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) से जुड़े धन शोधन मामले की जांच के सिलसिले में सोमवार को फिर छापे मारे। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। ईडी ने इसी मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। सूत्रों ने बताया कि बेंगलूरु और मैसुरु में सात-आठ परिसरों पर छापे मारे जा रहे है। इसमें बेंगलूरु स्थित एक बिल्डर और उससे जुड़े कुछ व्यक्तियों के परिसर शामिल है। संघीय एजेंसी ने इस मामले मे 18 अक्टूबर को पहले दौर की छापेमारी की थी और इस दौरान मैसूरु स्थित एमयूडीए कार्यालय तथा बेंगलुरु मे कुछ अन्य स्थानो पर छापे मारे गए थे। उसने पिछले सप्ताह बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालय मे एमयूडीए के कुछ कनिष्ठ अधिकारियो से भी पूछताछ की थी। संघीय एजेंसी ने लोकायुक्त द्वारा हाल मे दर्ज प्राथमिकी का संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री और अन्य के खिलाफ मामला दर्ज करने के लिए 30 सितंबर को प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) दाखिल की थी।

शक्ति ने पहली छमाही में किया शानदार प्रदर्शन

इंदौर। शक्ति पंप्स इंडिया लिमिटेड-एसपीआईएल ने 30 सितंबर 2024 को खत्म होने वाली तिमाही और छः माही के लिए वित्तीय परिणामों की घोषणा की।शक्ति पंप्स इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन दिनेश पाटीदार ने कंपनी के हालिया प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा हमें यह घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि हमारी कंपनी ने एक और तिमाही में शानदार प्रदर्शन किया हैए जिसमें राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि और लाभप्रदता में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई है। इसने वित्तीय वर्ष की पहली छः माही को भी महत्वपूर्ण बना दिया है। हमारी उपलब्धियाँ डोमेस्टिक और इंटरनेशनल दोनों क्षेत्रों में ऑर्डर के तेज़ एक्सक्यूशन का प्रत्यक्ष परिणाम हैं। प्रॉफ़िट मार्जिन में भी उल्लेखनीय विस्तार देखा गयाए जो मुख्य रूप से इकोनॉमीज ऑफ स्केल के साकार होने के कारण हुआ हैए जिसे तिमाही के दौरान बढ़ी हुई ऑपरेशनल ऐक्टिविटी द्वारा बेहतर बनाया गया था।हमारे आर्डर का प्रवाह मजबूत बना हुआ हैए सितंबर 2024 तिमाही के अंत तकए हमारी कंपनी की बकाया ऑर्डर बुक लगभग रु 1,800 करोड़ थी। पीएम.कुसुम योजना में अग्रणी स्थिति को देखते हुएए हमें विश्वास है कि हमें भविष्य में भी बड़ी मात्रा में ऑर्डर मिलते रहेंगेए जो हमारे निरंतर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।आखिर मेंए हमारे मजबूत ऑर्डर बुक और लगातार नए ऑर्डर पाने की सफलता को देखते हुए हमें विश्वास है कि हम इस वर्ष अपेक्षा से बेहतर परिणाम देंगे।

बीकानेर में दिवाली पर होता है उर्दू रामायण का वाचन

भाषा। जयपुर

बीकानेर में हर दिवाली पर एक अनूठी परंपरा के तहत हिंदू महाकाव्य रामायण के उर्दू संस्करण का वाचन होता है यानी श्रोताओं को उर्दू रामायण सुनाई जाती है। इस सालाना आयोजन में उर्दू शायर, रामायण के उर्दू संस्करण का वाचन करते हैं। उर्दू में यह रामायण लगभग 89 साल पहले लिखी गई थी और इसे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का स्वर्ण पदक भी मिला था। उर्दू शिक्षक और शायर डॉ. जिया-उल-हसन कादरी ने रविवार को एक समारोह में दो अन्य मुस्लिम शायरों के साथ उर्दू रामायण का पाठ किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य सद्भाव और भाईचारे का सकारात्मक संदेश देना है। पर्यटन लेखक संघ और महफिल-ए-अदब संयुक्त रूप से हर साल उर्दू रामायण वाचन कार्यक्रम कराते हैं। उन्होंने बताया कि रामायण का यह संक्षिप्त रूपांतरण मूल महाकाव्य के दृश्यों, भगवान राम के वनवास, रावण पर विजय और अयोध्या लौटने का जीवंत वर्णन करता है जो शहर के श्रोताओं को खूब भाता है। बीकानेर के मौलवी बादशाह हुसैन राणा लखनवी ने 1935 में तुलसीदास की जयंती पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता के लिए उर्दू भाषा में रामायण का काव्यात्मक संस्करण तैयार किया था। इसे प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला, जिसके बाद बीकानेर के तत्कालीन शासक महाराजा गंगा सिंह ने राणा लखनवी के संस्करण को सुनने के लिए एक समारोह आयोजित किया। इस कार्यक्रम में तेज बहादुर सप्रू ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की ओर से राणा लखनवी को स्वर्ण पदक प्रदान किया था। दिवाली से पहले बीकानेर में इसका वाचन करने वाले कादरी 2012 से चली आ रही परंपरा को आगे बढ़ाना चाहते हैं। कादरी ने कहा कि उर्दू रामायण का पाठ मुस्लिम कवि करते हैं और श्रोता हिंदू और मुस्लिम दो समुदाय से होते हैं। कादरी ने कहा कि पहले यह कार्यक्रम खुले में होता था लेकिन बाद में आयोजन स्थल बदल गया और अब इसे होटल में आयोजित किया जाता है ताकि व्यवस्थाएं अच्छी हो जाएं। उन्होंने बताया कि मौलवी बादशाह हुसैन राणा लखनवी ने 1913 से 1919 तक तत्कालीन शासक गंगा सिंह के लिए काम किया और इस दौरान उन्होंने मुगल शासकों द्वारा जारी किए गए आदेशों का फारसी से उर्दू में अनुवाद किया। 1920 में गंगा सिंह ने उन्हें डूंगर कॉलेज में शिक्षक नियुक्त किया।

वक्फ संबंधी संसदीय समिति की बैठक में भाजपा और विपक्षी सदस्यों के बीच तीखी नोकझोंक

भाषा। नई दिल्ली

वक्फ संशोधन विधेयक पर विचार कर रही संयुक्त संसदीय समिति की बैठक में सोमवार को सत्तापक्ष और विपक्षी दलों के सदस्यों के बीच तीखी नोंकझोक हुई। समिति के समक्ष विभिन्न राज्यों के पूर्व न्यायाधीश और वक्फ प्रशासक पेश हुए। तृणमूल कांग्रेस के सदस्य कल्याण बनर्जी के निलंबन के बाद समिति की यह पहली बैठक थी। पिछले सप्ताह समिति की बैठक के दौरान बनर्जी ने एक कांच की बोतल तोड़ दी थी और उसे समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल की ओर कथित तौर पर फेंक दिया था। इसके बाद उन्होंने समिति से एक दिन के लिए निलंबित कर दिया गया था। ऐसे में वह सोमवार की बैठक में उपस्थित नहीं थे। संसदीय समिति की बैठक में सोमवार को शुरुआत से ही गतिरोध बना रहा। आम आदमी पार्टी के सदस्य संजय सिंह ने दिल्ली वक्फ बोर्ड के प्रशासक अश्विनी कुमार की प्रस्तुति पर आपत्ति जताते हुए तर्क दिया था कि उनके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट को दिल्ली की मुख्यमंत्री द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया।इसके बाद संजय सिंह, कांग्रेस सदस्य नासिर हुसैन और मोहम्मद जावेद, एआईएमआईएम सदस्य असदुद्दीन ओवैसी, समाजवादी पार्टी के सदस्य मोहिबुल्ला, द्रमुक सदस्य एम एम अब्दुल्ला और तृणमूल कांग्रेस के मोहम्मद नदीम-उल हक बैठक से कुछ देर के लिए बहिर्गमन कर गए। सूत्रों ने बताया कि विपक्षी सदस्यों ने बहिर्गमन से पहले संसदीय समिति के उपस्थिति रोस्टर से अपने हस्ताक्षर भी हटा दिए। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने वक्फ संशोधन विधेयक पर संयुक्त समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल को एक पत्र लिखकर दिल्ली वक्फ बोर्ड की रिपोर्ट को अमान्य करने का आग्रह किया था। उनका कहना है कि यह दिल्ली सरकार की मंजूरी के बिना भेजी गई है। विपक्षी सदस्य दिल्ली वक्फ बोर्ड की एक प्रस्तुति पर अपनी आपत्ति पर कायम रहे, इसलिए समिति अध्यक्ष ने इस मामले पर लोकसभा महासचिव की राय लेने का फैसला किया।

केरल में उपचुनाव में अहम मुद्दा बनकर उभरा है वक्फ (संशोधन) विधेयक

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस-नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा)-नीत वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) का वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पर रुख केरल में वायनाड लोकसभा सीट और दो विधानसभा सीट के लिए होने वाले उपचुनाव में चर्चा का विषय बनकर सामने आ रहा है। वायनाड लोकसभा सीट पर अच्छा-खासा प्रभाव रखने वाले कैथोलिक चर्च ने केंद्र मे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)-नीत सरकार द्वारा लाए विधेयक का समर्थन किया है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव लड़ रही है। चर्च ने आरोप लगाया कि एर्नाकुलम जिले मे चेराई और मुनाम्बम गांवो मे कई पीढ़ियों से रह रहे ईसाई परिवारों की कई संपत्तियों पर वक्फ बोर्ड ने गैर-कानूनी तरीके से दावा जताया है। साइरो-मालाबार कैथोलिक चर्च समर्थित दैनिक अखबार दीपिका ने सोमवार को प्रकाशित एक संपादकीय मे यूडीएफ और एलडीएफ की आलोचना करते हुए उन पर प्रभावित लोगो की पीड़ा देखे बिना वक्फ कानून की रक्षा के लिए राज्य विधानसभा मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करने का आरोप लगाया। एलडीएफ और यूडीएफ की आलोचना करते हुए संपादकीय में कहा गया है कि मुनाम्बम मे न्याय का वादा करने वाले लोग तिरुवनंतपुरम गए और यह कहते हुए एक प्रस्ताव पारित किया कि वक्फ कानून मे छेड़छाड़ न की जाए।

पीसीआर दे रहे भारत के जॉब मार्केट को नया आकार

नई दिल्ली। पीसीआर पूरे भारत में कॉर्पोरेट हायरिंग में एक गेमचेंजर के रूप में उभरा है। यह नई पहल जिसे नियर मी जॉब्स के रूप में भी जाना जाता है। यह लोकल टैलेंट पूल का ध्यान रखके कंपनियों और नौकरी चाहने वालों को जोड़ने का नया रूप दे रहा है। पीसीआर नौकरी तलाश रहे उम्मीदवारों को उनकी ज्योग्रॉफी और निवास के आधार पर पिन कोड नौकरी के अवसरों को खोजता है। भारत में एक प्रमुख भर्ती फर्म, एड एस्ट्रा कंसल्टेंट्स की संस्थापक और एमडी निरुपमा वीजी के अनुसार पीसीआर एक प्रैक्टिकल सलूशन के रूप में उभरा हैए जो योग्य उम्मीदवारों को किसी भी जगह और घर के करीब नौकरी खोजने में सहायता करता है। एड एस्ट्रा में हमने इसकी क्षमता को पहचान कर उम्मीदवारों और रेक्रूटरस दोनों की बेहतर सेवा करने के लिए इसे अपने साथ जोड़ा है। पीसीआर लोकल कम्युनिटीज के अंदर वेरिफ़िएड जॉब्स के अवसरों को आसान बनाकर नौकरी की समस्या का सीधे समाधान करता है। निरुपमा बताती हैं लोकल टैलंट्स पर ध्यान केंद्रित करके पीसीआर न केवल शहर में प्रवास की आवश्यकता को कम किया है बल्कि नौकरी चाहने वालों के लिए बेहतर वर्क लाइफ बैलेंस भी दिया है। पीसीआर कंपनियों को एक ऐसा वर्कफोर्स बनाने में मदद करता है जो वहां के काम के अनुसार स्किल्ड और कल्चरल रूप से समृद्ध हैं। पीसीआर वर्कगैप को कम करने और जेंडर इक्वालिटी को बढ़ावा देने और स्थानीय समुदायों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। रिक्रूटर्स के लिएए पीसीआर ट्रडिशनल रिक्रूटमेंट मेथड्स से जुड़े समय और लागत में कमी सहित महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। नौकरी चाहने वालों के लिएए विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में पीसीआर ऐसे अवसरों को खोजता है। भारत भर में 19,000 से अधिक पिन के साथ, यह व्यक्तियों को अपने समुदायों के अंदर नौकरी खोजने में मदद करता है, जिससे यात्रा का समय और रहने की लागत कम होती है। पीसीआर उन लोकल जॉब्स के अवसर देता है जो पहले पहुंच से बाहर थे।

शिक्षा निदेशालय ने सभी विशेष स्कूलों को दिव्यांग छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा देने का निर्देश दिया

नई दिल्ली। दिल्ली शिक्षा निदेशालय (डीओई) ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सभी 12 विशेष स्कूलों को समावेशी शिक्षा शाखा (आईईबी) द्वारा निर्धारित प्रावधानों का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया। शिक्षा निदेशालय ने 22 अक्टूबर को दिए अपने आदेश में इन स्कूलों के प्रमुखों से पांच नवंबर तक कार्वाई रिपोर्ट (एटीआर) प्रस्तुत करने को कहा है। आदेश के अनुसार, इन उपायों का उद्देश्य दिव्यांगजन अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम, 2016 और नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का अनुपालन सुनिश्चित करना है। बयान में बताया गया कि 12 विशेष स्कूलों के प्रमुखों को समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी 19 प्रावधानों का पालन करना आवश्यक है, जिसमें उपयुक्त कक्षाओं में प्रवेश की अनुमति, ऑनलाइन मूल्यांकन की उपलब्धता, मुफ्त सहायक उपकरण, स्मार्ट कक्षाओं की उपलब्धता, ब्रेल पद्धति और सांकेतिक भाषा सहित संचार एवं भाषा कौशल में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल है। इसके अलावा, स्कूलों को विशेष शिक्षा के शिक्षकों के लिए संरचित समय-सारिणी तैयार करनी चाहिए, सभी छात्रों के लिए दिव्यांगता प्रमाण-पत्र और विशिष्ट दिव्यांगता आईडी (यूडीआईडी) का रिकॉर्ड रखना होगा।

कर्नाटक में वक्फ भूमि को लेकर किसानों को जारी किए गए नोटिस वापस लिए जाएंगे: मंत्री

बेंगलुरु। कर्नाटक के विजयपुरा जिले में किसानों की भूमि को वक्फ की संपत्ति के तौर पर चिह्नित करने के आरोप सामने आने के बाद राज्य के कानून और संसदीय कार्य मंत्री एच. के. पाटिल ने सोमवार को कहा कि उन्हें जारी नोटिस वापस लिए जाएंगे और उपायुक्त इस गलती की जांच करेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों की भूमि को वक्फ की संपत्ति में परिवर्तित करने का सरकार का कोई इरादा नहीं है और अगर कोई गलती हुई है तो उसे दूर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों के खिलाफ कार्वाई की जाएगी। पाटिल ने कहा, जो गलती हुई है, उसे ध्यान में रखते हुए जारी किए गए नोटिस वापस लिए जाएंगे। इसकी जांच की जानी चाहिए कि गलती क्यों हुई और उसके बाद (जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्वाई के बारे में) निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि जिले के उपायुक्त इस मामले की जांच करेंगे और जारी किए गए नोटिस वापस लेने के लिए कार्वाई शुरू करने में कुछ दिन लगेंगे।

बिश्नोई गिरोह से धमकी मिली है : पप्पू यादव

भाषा। पटना

बिहार के पूर्णिया लोकसभा क्षेत्र से सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से मिली धमकी के मद्देनजर सुरक्षा बढ़ाने की मांग की है। पूर्णिया के सांसद ने शाह को लिखे अपने दो पन्नों के पत्र को मीडिया के साथ साझा किया, जिसकी प्रतियां बिहार के मुख्यमंत्री और राज्य के अन्य शीर्ष अधिकारियों को भेजी गई हैं। इक्कीस अक्टूबर को लिखे गए इस पत्र को सोमवार को सार्वजनिक किया गया, जब मीडिया के एक वर्ग ने बिश्नोई के एक कथित सहयोगी द्वारा दुबई के नंबर से की गई कॉल की ऑडियो क्लिप प्रसारित की। अपने ेवाईे श्रेणी के सुरक्षा कवर को ेजेडे श्रेणी में अपग्रेड करने की मांग के अलावा, यादव ने बिहार भर में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में शिरकत के दौरान ेपुलिस एस्कॉर्टे की भी मांग की है। यादव ने चेतावनी दे ही है कि अगर उनकी

हत्या की जाती है तो इसकी जिम्मेदार केन्द्र सरकार एवं बिहार सरकार ही होंगे।इस बीच, पूर्णिया के पुलिस अधीक्षक (एसपी) कार्तिकेय शर्मा ने कहा, हमें मीडिया के माध्यम से सांसद के आरोप के बारे में पता चला है। हम इसकी जांच कर रहे हैं और यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि वाई प्लस के सुरक्षा कवर के अनुसार उनकी सुरक्षा के इंतजाम किए जाएं। गैंगस्टर से नेता बने यादव ने दावा किया कि फोन करने वाला व्यक्ति उनके द्वारा बिश्नोई के खिलाफ सोशल मीडिया पर की गई टिप्पणियों से खफा था। बिश्नोई गुजरात की जेल में बंद हैं। मुंबई में राकांपा नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद, यादव ने सोशल मीडिया मंच ेएक्सै पर कहा था कि अगर कानून द्वारा अनुमति दी गई तौ वह जेल में बंद गैंगस्टर बिश्नोई के ेपूरे नेटवर्क को 24 घंटे के भीतर खत्म कर देंगे। कुछ दिनों बाद, उन्होंने बॉलीवुड के सुपरस्टार सलमान खान के साथ भी एकजुटता जताई थी। खान को भी बिश्नोई गिरोह से धमकियां मिली हैं।

सीता सोरेन के खिलाफ इरफान अंसारी का बयान निंदनीय, कानूनी कार्रवाई हो: अलका लांबा

भाषा। नई दिल्ली

अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की प्रमुख अलका लांबा ने अपनी पार्टी के नेता एवं झारखंड सरकार में मंत्री इरफान अंसारी द्वारा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता सीता सोरेन के खिलाफ कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणी किए जाने की सोमवार को निंदा की और कानूनी कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि महिला विरोधी अपराधों को लेकर कांग्रेस की सरकार में सख्त कानून बने हैं और अपराध को अपराध के नजरिए से ही देखा जाना चाहिए। भाजपा की नेता और जामताड़ा विधानसभा सीट से उम्मीदवार सीता सोरेन, इरफान अंसारी की कथित अपमानजनक टिप्पणियों के बारे में बात करते हुए रविवार को रो पड़ीं थीं। इसी सीट से कांग्रेस उम्मीदवार अंसारी ने गत बृहस्पतिवार को नामांकन दाखिल करने के बाद सोरेन के बारे में कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणी की थी।अंसारी की टिप्पणी के बारे में पूछे जाने पर अलका लांबा ने संवाददाताओं से कहा, पार्टी के भीतर का आदमी हो या बाहर का आदमी हो, अपराध को अपराध के नजरिए से ही देखा जाना चाहिए। अगर आपने मौखिक रूप से कुछ कहा है, शारीरिक रूप से नुकसान पहुंचाया है, हर तरीके का कानून निर्भया की घटना के बाद कांग्रेस की सरकार में बने हैं। उन्होंने कहा, हम इसका (टिप्पणी) कभी समर्थन नहीं करते हैं। चाहे वो इरफान अंसारी हों, महिला किसी पार्टी की हो, हम इसकी (टिप्पणी) निंदा करते हैं, इसका विरोध करते हैं, इस पर कानूनी कार्वाई की मांग करते हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में निष्पक्ष कार्रवाई और सजा सुनिश्चित होनी चाहिए।

उत्तर कोरिया ने यूक्रेन से लड़ने के लिए 10,000 सैनिक रूस भेजे हैं : अमेरिका

भाषा। ब्रसेल्स

उत्तर कोरिया ने अगले कुछ हफ्तों में यूक्रेन में लड़ने के लिए लगभग 10,000 सैनिक रूस भेजे हैं। अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन की प्रवक्ता सबरीना सिंह ने सोमवार को यह जानकारी दी। सिंह ने कहा कि इनमें से कुछ सैनिक लड़ाई के लिए पहले ही यूक्रेन के नजदीक पहुंच चुके हैं। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, हमारी चिंता बढ़ रही है क्योंकि रूस इन सैनिकों का इस्तेमाल युद्ध में या रूस के कुर्स्क क्षेत्र में यूक्रेनी सेना के खिलाफ युद्ध अभियानों में सहायता के लिए करना चाहता है। सिंह ने कहा कि रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन पहले ही सार्वजनिक रूप से चेतावनी दे चुके हैं कि यदि उत्तर कोरिया के सैनिकों का इस्तेमाल युद्ध के मैदान में किया जाता है, तो उन्हें युद्धरत पक्ष माना जाएगा, जिससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) ने कहा है कि उत्तर कोरिया के कुछ सैनिक पहले ही रूस के कुर्स्क सीमा क्षेत्र में तैनात किए जा चुके हैं, जहां रूस यूक्रेनी सैनिकों को पीछे धकेलने के लिए संघर्ष कर रहा है।

चाड में सैन्य अड्डे पर हुए हमले में 40 सैनिक मारे गए

डकार। चाड के पश्चिमी भाग में एक सैन्य अड्डे पर रविवार रात अज्ञात हमलावरों ने हमला कर दिया, जिसमें कम से कम 40 सैनिक मारे गए। चाड के राष्ट्रपति कार्यालय ने यह जानकारी दी। चाड के राष्ट्रपति इदरीस डेबी ने सोमवार सुबह सैन्य अड्डे का दौरा किया और हमलावरों का पता लगाने के लिए सैन्य अभियान शुरू करने की घोषणा की। चाड लंबे समय से नाइजीरिया की सीमा के पास देश के पश्चिमी हिस्से में उग्रवाद से जूझ रहा है। जून में राजधानी एन जामेना में एक सैन्य गोला-बारूद डिपो में आग लगने से विस्फोट होने से नौ लोग मारे गए और 40 से ज्यादा घायल हो गए थे।

उज्बेकिस्तान:राष्ट्रपति के प्रति वफादार दलों की वास्तविक विपक्ष से रहित संसदीय चुनाव में भारी जीत

ताशकंद। उज्बेकिस्तान में राष्ट्रपति के प्रति वफादार दलों ने वास्तविक विपक्ष से रहित संसदीय चुनाव में भारी जीत दर्ज की है। सख्त नियंत्रण वाले मध्य एशियाई देश में सोमवार को जारी आधिकारिक परिणामों से यह जानकारी मिली। देश में पांच पंजीकृत पार्टियां हैं और उन्होंने रविवार को हुए मतदान में अपने-अपने उम्मीदवार उतारे।

ए दल भले ही व्यापारिक माहौल से लेकर पर्यावरण संरक्षण जैसे अलग-अलग मुद्दों पर जोर देते हों, लेकिन वे सभी राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोएव का समर्थन करते हैं। उज्बेकिस्तान में किसी भी वास्तविक विपक्षी दल को अनुमति नहीं दी गई। निर्वाचन अधिकारियों के अनुसार, रविवार के मतदान में लगभग 75 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था, जो वैध मतदान के लिए जरूरी 33 प्रतिशत से कहीं अधिक है। पिछले साल पेश किए गए विधाई परिवर्तनों के तहत, उज्बेकिस्तान ने एक मिश्रित चुनाव प्रणाली अपनाई है, जिसमें इसके 150 सांसदों में से आधे पार्टी सूचियों से चुने गए, जबकि आधे व्यक्तिगत रूप से चुने गए। नए नियमों में यह भी कहा गया है कि संसद के लिए चुनाव लड़ने वालों में 40 प्रतिशत महिलाएं होनी चाहिए।

मिर्जियोएव ने 2016 में पदभार ग्रहण करने के बाद से राजनीतिक और आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की है, जिसने उनके पूर्ववर्ती तानाशाह नेता इस्लाम करीमोव की कुछ कठोर नीतियों को आसान बनाया है। करीमोव के शासन के तहत, उज्बेकिस्तान इस क्षेत्र के सबसे दमनकारी देशों में से एक था।

नेपाल के प्रधानमंत्री ओली नवंबर अथवा दिसंबर में कर सकते हैं चीन की यात्रा

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली नवंबर अथवा दिसंबर में चीन की आधिकारिक यात्रा पर जाने की योजना बना रहे है। प्रधानमंत्री कार्यालय के एक उच्चस्तरीय सूत्र का हवाला देते हुए माई रिपब्लिका अखबार ने बताया कि विदेश मंत्रालय ऐसे समय में ओली की प्रस्तावित चीन यात्रा की तैयारी कर रहा है जब सरकार अपने कार्यकाल के पहले 100 दिन पूरे कर रही है। जब पीटीआई ने इस मामले में टिप्पणी के लिए विदेश मंत्रालय से संपर्क करने की कोशिश की तो प्रवक्ता उपलब्ध नहीं थे। हालांकि, विदेश मंत्रालय के एक उच्चस्तरीय सूत्र ने बताया कि न तो भारत और न ही चीन ने अभी तक प्रधानमंत्री ओली को आधिकारिक यात्रा के लिए निमंत्रण दिया है। ओली की प्रस्तावित चीन यात्रा जुलाई के मध्य में उनके पदभार ग्रहण करने के बाद अपने निकटतम पड़ोसी की पहली यात्रा होगी। ओली ने पिछले महीने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की थी। मुलाकात के दौरान ओली ने मोदी को नेपाल आने का निमंत्रण दिया था।

सिंगापुर एयरलाइंस की तोक्यो जाने वाली उड़ान को विंडशील्ड टूटने के कारण ताइपे की ओर मोड़ा गया

सिंगापुर। सिंगापुर एयरलाइंस (एसआईए) की सोमवार को तोक्यो जाने वाली उड़ान का विंडशील्ड टूटने के बाद विमान को ताइवान के ताइपे की ओर मोड़ दिया गया। उड़ान संख्या एसक्यू636 में 249 यात्री और चालक दल के 17 सदस्य सवार थे। उड़ान ने रविवार को रात 11 बजकर सात मिनट पर चांगी हवाई अड्डे से उड़ान भरी थी और उसे सोमवार को सुबह छह बजकर 20 मिनट पर जापान के हानेडा हवाई अड्डे पर उतरना था। चैनल न्यूज एशिया की खबर के अनुसार, उड़ान के बीच में विंडशील्ड टूटने के कारण बोइंग 777-300ईआर विमान को ताइपे के ताओयुआन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर मोड़ दिया गया।खबर के मुताबिक, सिंगापुर एयरलाइंस के प्रवक्ता के हवाले से बताया गया कि विमान हवाई अड्डे पर बिना किसी बाधा के उतर गया। उड़ान संख्या का नंबर बदल दिया गया और विमान रात साढ़े आठ बजे ताइपे से तोक्यो के लिए रवाना होगा।प्रवक्ता ने बताया कि विमान करीब 18 घंटे की देरी से सोमवार देर रात 12.30 बजे हनेडा हवाई अड्डे पर उतरेगा।

भारत ने श्रीलंका में धार्मिक स्थलों पर रूफटॉप सौर प्रणाली स्थापित की

कोलंबो। भारत ने श्रीलंका के साथ अपनी ऊर्जा साझेदारी को जारी रखते हुए वहां कई धार्मिक स्थलो पर रूफटॉप सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित की है। यहां भारतीय उच्चायोग ने यह जानकारी दी। इकॉनमी नेक्स्ट ने सोमवार को रिपोर्ट प्रकाशित की कि भारतीय उच्चायोग से प्रतिनिधियों, सीलोन इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड और श्रीलंका सस्टेनेबल एनर्जी अथॉरिटी ने होकंदरा स्थित बौद्ध मंदिर, श्री आंजनेयार मंदिर, सेंट एंथनी गिरजाघर और मुतवाल जुम्मा मस्जिद को सौर पैनल एवं अन्य सामग्री सौंपी। यह पहल 1.7 करोड़ अमेरिकी डॉलर की भारतीय परियोजना का हिस्सा है जिसका उद्देश्य समूचे द्वीपीय राष्ट्र में 5,000 धार्मिक संस्थानों में 25 मेगावॉट की सौर रूफटॉप प्रणालियां लगाना है। ऊर्जा खपत को कम करने तथा नवीकरणीय ऊर्जा की ओर श्रीलंका के बदलाव को समर्थन देने के लिए तैयार की गई यह परियोजना सभी नौ प्रांतों और 25 जिलों तक विस्तारित है। यह परियोजना सालाना लगभग 3.7 करोड़ यूनिट की आपूर्ति करेगी और श्रीलंका के जन-केंद्रित ऊर्जा परिवर्तन में योगदान देगी।

प्रंटियर कोर की जांच चौकी पर हमले में अर्द्धसैनिक बल के जवान की मौत

पेशावर (पाकिस्तान)। उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में फ्रंटियर कोर की एक जांच चौकी पर एक हमले में एक सुरक्षाकर्मी की मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। हमले की जिम्मेदारी प्रतिबंधित संगठन लश्कर-ए-इस्लाम ने ली है। हमला रविवार को अफगानिस्तान की सीमा से लगे खैबर जिले की तिराह घाटी में एफसी चेक पोस्ट पर हुआ। लश्कर-ए-इस्लाम एक देवबंदी जिहादी आतंकवादी समूह है जो पाकिस्तान के खैबर जिले और अफगानिस्तान के पड़ोसी नांगरहार प्रांत में सक्रिय है।

ब्रिटिश सांसद को कथित हमले के वीडियो के बाद लेबर पार्टी से निलंबित किया गया

लंदन। ब्रिटेन में लेबर पार्टी ने अपने एक सांसद को एक वीडियो सामने आने के बाद निलंबित कर दिया जिसमें वह एक व्यक्ति को मारते और उसे पीट पीटकर जमीन पर गिराते दिख रहे है। उत्तर-पश्चिम इंग्लैंड के रनकॉर्न एंड हेल्स्बी संसदीय क्षेत्र से सांसद माइक एम्सबरी को शनिवार सुबह हुई इस घटना की जांच होने तक निलंबित कर दिया गया है। मेल ऑनलाइन को प्राप्त निगरानी फुटेज में 55 वर्षीय एम्सबरी फुटपाथ पर एक व्यक्ति के चेहरे पर मुक्का मारते हुए और उसे पीट पीटकर सड़क पर गिराते हुए दिख रहे है। वीडियो में यह भी साफ नजर आ रहा है कि एम्सबरी जब खुद नीचे गिर गए तब भी उन्होंने व्यक्ति को मारना जारी रखा, जबकि अन्य लोग शोर मचाते और उन्हे रुकने के लिए कहते दिख रहे है। एम्सबरी ने शनिवार को एक बयान जारी कर कहा था कि उन्होंने अधिकारियो से संपर्क किया है और किसी भी तरह की जांच में वह सहयोग करेंगे। चेशायर पुलिस ने कहा कि वे फ्रॉडशैम में मेन स्ट्रीट पर कथित हमले की जांच कर रहे है।

महिला और दो बच्चों की हत्या की कोशिश के आरोप में गिरफ्तार व्यक्ति अदालत में पेश

लंदन। पूर्वी लंदन में एक महिला और दो बच्चों की हत्या के प्रयास के आरोप में गिरफ्तार भारतीय मूल के एक व्यक्ति को सोमवार को अदालत में पेश किया गया। इन लोगों को पिछले हफ्ते चाकू घोंपा गया था जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कुलविंदर राम (48) को बर्किंगसाइड मजिस्ट्रेट अदालत में पेश किया गया। उस पर 30 वर्षीय महिला, आठ वर्षीय बच्ची और दो वर्षीय बच्चे की हत्या के प्रयास के आरोप है। मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने कहा कि सभी पक्ष एक-दूसरे को जानते है। पुलिस ने इस संबंध में ज्यादा जानकारी नहीं दी। पुलिस ने कहा, तीन लोग - 30 साल की एक महिला, आठ साल की बच्ची और दो साल के बच्चे को चाकू घोंपकर जख्मी कर दिया गया। तीनों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। पुलिस के मुताबिक, पीड़ितों की हालत खतरे से बाहर है।

पाकिस्तान: मानवाधिकारी की प्रमुख अधिवक्ता ईमान, उनके पति गिरफ्तार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की प्रमुख मानवाधिकार अधिवक्ता ईमान जैनब मजारी-हाजिर और उनके पति हादी अली को सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप के आरोप में सोमवार को गिरफ्तार किया गया। इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच हाल ही में संपन्न हुए टेस्ट मैच के दिन ईमान और अली ने पुलिस द्वारा लगाए गए अवरोधकों को हटाने का प्रयास किया था। इसको लेकर ही उन्हें गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टीम के दौरे के समय सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप करके सुरक्षा जोखिम पैदा करने पर इस्लामाबाद पुलिस ने कानूनी कार्वाई करते हुए ईमान मजरी और हादी अली को गिरफ्तार किया।

अमेरिका : ट्रंप की रैली में वक्ताओं ने अभद्र और नस्लीय टिप्पणियां की

भाषा। न्यूयॉर्क

अमेरिका में राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल डोनाल्ड ट्रंप द्वारा न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित एक रैली के दौरान कथित तौर पर अभद्र और नस्लीय टिप्पणियां की गईं। चुनाव के दिन से ठीक एक सप्ताह पहले रविवार रात को आयोजित रैली में वक्ताओं ने प्यूर्टो रिको को कचरे का तैरता हुआ द्वीप बताया और डेमोक्रेटिक उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को शैतान करार दिया। हैरिस को निशाना बनाते हुए वक्ताओं ने कहा कि पहली महिला एवं अश्वेत महिला राष्ट्रपति बनने की होड़ में लगी महिला ने अपना करियर एक वेश्या के रूप में शुरू किया था। रैली के दौरान स्टैंडअप कॉमेडियन टोनी हिंचक्लिफ ने कहा, मुझे नहीं पता कि आप लोग यह जानते हैं या नहीं, लेकिन समुद्र के बीच में सचमुच कचरे का एक तैरता हुआ द्वीप है। मुझे लगता है कि इसे प्यूर्टो रिको कहा जाता है। हिंचक्लिफ की इस टिप्पणी की हैरिस के प्रचार अभियान द्वारा तुरंत आलोचना की गई क्योंकि वह पेंसिल्वेनिया और अन्य राज्यों में प्यूर्टो रिको के समुदायों का वोट पाने के लिए ट्रंप के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। हिंचक्लिफ के विवादास्पद बयान के तुरंत बाद प्यूर्टो रिको से ताल्लुक रखने वाले संगीत सुपरस्टार बैड बनी ने हैरिस का समर्थन किया। हालांकि, ट्रंप के प्रचार अभियान ने हिंचक्लिफ से दूरी बनाने का प्रयास किया है। वरिष्ठ सलाहकार डेनियल एल्वारेज ने एक बयान में कहा, यह हास्य-व्यंग्य टिप्पणी राष्ट्रपति ट्रंप या प्रचार अभियान के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करती है। इसके अलावा, रैली में अन्य वक्ताओं ने भी अभद्र टिप्पणियां कीं।

डेमोक्रेटिक पार्टी के चेतावनी का संकेत, भारतीय-अमेरिकियों का पार्टी के लिए झुकाव कम हुआ

वाशिंगटन। अमेरिका में भारतीय-अमेरिकी नागरिकों का डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रति झुकाव कम होता दिख रहा है जो पार्टी के लिए एक चेतावनी भरा संकेत है, जबकि रिपब्लिकन पार्टी के प्रति झुकाव रखने वाले मतदाताओं के आंकड़े में कोई बदलाव नहीं हुआ है। एक नए सर्वेक्षण में यह जानकारी सामने आई है। अनुसंधान एवं विश्लेषण कंपनी यूगॉव के सहयोग से कार्नेगी एंडोवमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस द्वारा आयोजित 2024 इंडियन-अमेरिकन एटीट्यूड्स नामक एक नए सर्वेक्षण में दावा किया गया है कि भारतीय-अमेरिकियों का झुकाव अब भी डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर दिख रहा है लेकिन रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवारों और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समर्थन में मामूली वृद्धि भी देखी जा रही है। यह विश्लेषण 18 सितंबर से 15 अक्टूबर के बीच 714 भारतीय-अमेरिकी नागरिकों के बीच किए गए राष्ट्रीय स्तर के ऑनलाइन सर्वेक्षण पर आधारित है। सर्वेक्षण के अनुसार, पंजीकृत भारतीय-अमेरिकी मतदाता उत्तरदाताओं में से 61 प्रतिशत हैरिस को वोट देने की योजना बना रहे हैं जबकि 32 प्रतिशत ट्रंप को वोट देने का इरादा रखते हैं।

कनाडा में सड़क दुर्घटना में चार भारतीय की मौत

ओटावा। कनाडा के ओंटेरियो प्रांत में सड़क दुर्घटना में चार भारतीय नागरिकों की मौत हो गई जबकि एक व्यक्ति घायल हो गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि दुर्घटना पिछले बृहस्पतिवार को टोरंटो शहर के लेक शोर बुलिवर्ड ईस्ट एंड चेरी स्ट्रीट इलाके में हुई। विज्ञप्ति में कहा गया है कि टेस्ला कार में 25 से 32 साल के पांच लोग सवार थे। चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया, जिसके बाद वह गार्ड रेल और फिर कंक्रीट के खंभे से टकराई और उसमें आग लग गई। टोरंटो सन समाचार पत्र ने अपनी खबर में टोरंटो के पुलिस उपनिरीक्षक फिलिप सिंक्लेयर के हवाले से कहा, अब तक हमने कुछ साक्ष्य जुटाए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि (तेज) गति दुर्घटना की एक वजह थी। प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि दुर्घटना की सूचना मिलने के बाद घटनास्थल पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने कार में सवार चार लोगों को मृत घोषित कर दिया जबकि 25 वर्षीय महिला को अस्पताल ले जाया गया, जिसकी हालत खतरे से बाहर है। खबर के अनुसार, महिला को एक गुजरते हुए वाहन चालक ने बचाया। टोरंटो में भारतीय वाणिज्य दूतावास के आधिकारिक हैंडल ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा गया, टोरंटो में हुई कार दुर्घटना में भारतीय नागरिकों की मृत्यु पर हार्दिक संवेदना।

मेरी कार पर गोली चलाकर हत्या का प्रयास किया गया: बोलीविया के पूर्व राष्ट्रपति इवो मोरालेस

ला पाज (बोलीविया)। बोलीविया के पूर्व राष्ट्रपति इवो मोरालेस ने दावा किया है कि रविवार को उनकी कार पर अज्ञात लोगों ने गोलीबारी की, जिसमें वह बाल-बाल बच गए।यह कथित हमला मोरालेस और उनके सहयोगी से प्रतिद्वंद्वी बने वर्तमान राष्ट्रपति लुइस एर्से के बीच हाल ही में सत्ता संघर्ष के बीच हुआ है तथा इस हमले में उन्हें कोई चोट नहीं पहुंची।मोरालेस (65) ने हिंसा के लिए राष्ट्रपति एर्से की सरकार को दोषी ठहराया और कहा कि यह बोलीवियाई प्राधिकारियों द्वारा उन्हें राजनीति से अलग-थलग करने के लिए एक समन्वित अभियान का हिस्सा था। यह घटना सत्तारूढ़ मूवमेंट टूवर्ड सोशलिज्म या एमएएस के शीर्ष पदों पर मतभेदों के बीच हुई है। मोरालेस और उनके पूर्व वित्त मंत्री आर्से अगले साल होने वाले चुनावों में पार्टी का नेतृत्व करने के लिए लड़ रहे हैं।विभाजित एमएएस पार्टी के मोरालेस-गठबंधन वाले गुट ने एक बयान में कहा कि काले कपड़े पहने भारी हथियारों से लैस कुछ लोग दो वाहनों में आए और मोरालेस के काफिले पर घात लगाकर हमला किया। इसमें कहा गया है कि गोलियां पूर्व राष्ट्रपति के सिर से कुछ ही सेंटीमीटर दूर से निकलीं।राष्ट्रपति आर्से ने हमले की निंदा की और जांच का अनुरोध किया।सोशल मीडिया मंच एक्स पर आर्से ने लिखा, राजनीति में किसी भी हिंसक प्रथा की निंदा की जानी चाहिए और उस पर स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए।

पाकिस्तान में पोलियो के मामले बढ़ने के बाद एक और टीकाकरण अभियान शुरू

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में पोलियो के नए मामले सामने आने के बाद सरकार ने देशभर में सोमवार को नया टीकाकरण अभियान शुरू किया ताकि देश के 4.5 करोड़ बच्चों को पोलियो की गिरफ्त में आने से बचाया जा सके। पाकिस्तान में नियमित रूप से टीकाकरण अभियान संचालित किया जाता है लेकिन स्वास्थ्यकर्मियों और उन्हें सुरक्षा मुहैया कराने वाले पुलिसकर्मियों पर आतंकवादी हमले होते रहते है। उग्रवादी झूठा दावा करते है कि पश्चिमी साजिश के तहत नसबंदी कराने के लिए टीकाकरण अभियान चलाया जाता है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सलाहकार आयशा रजा फारूक ने बताया कि पोलियो के मामलों में वृद्धि हो जाने के कारण इस साल तीसरी बार टीकाकरण अभियान शुरू किया गया है जो रविवार तक जारी रहेगा। उन्होने एक बयान में कहा कि इस बार हम पोलियो से लड़ने के लिए और जोर-शोर से अभियान चला रहे है। फारूक ने बताया कि पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को घर-घर जा कर टीका लगाया जाएगा तथा उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए विटामिन ए की खुराक दी जाएगी।प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने हाल ही में स्वास्थ्यकर्मियों से मुलाकात की तथा उनसे कहा कि वह घर-घर जा कर पोलिया के लिए टीका लगाए जिससे कोई भी बच्चा वंचित न रह सके।

पाकिस्तान के 16 जिलों में पोलियों का विषाणु पाए जाने के बाद देशभर में तीसरा टीकाकरण अभियान शुरू

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के 16 जिलों में पोलिया के विषाणु का पता चलने के बाद सरकार ने देशभर में सोमवार को अपना तीसरा टीकाकरण अभियान शुरू किया, ताकि देश के 4.5 करोड़ बच्चों को पोलियो की गिरफ्त में आने से बचाया जा सके। अखबार डॉन में प्रकाशित खबर के मुताबिक, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पिछले सप्ताह विश्व पोलियो दिवस पर प्रधानमंत्री आवास में आयोजित एक समारोह के दौरान तीसरे अभियान की घोषणा की थी। उन्होंने वहां बच्चों को पोलियो की खुराक भी पिलाई। पाकिस्तान में पोलियो के खिलाफ तीन नवंबर तक टीकाकरण अभियान चलेगा, जिसका उद्देश्य देश में पोलियो के खतरनाक प्रसार को खत्म करना है। देश में इस साल पोलियो के 41 मामले सामने आए है। अभियान के दौरान, स्वास्थ्य विभागों की विशेष टीम घर-घर जाकर 4.5 करोड़ से अधिक बच्चों को टीका लगाएंगी। खबर के अनुसार, अभियान के दौरान बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए विटामिन-ए की खुराक दी जाएगी। खबर में बताया गया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान द्वारा 16 जिलों से लिए गए नमूनों में पोलियोवायरस टाइप-I (डब्ल्यूपीवी1) पाए जाने की पुष्टि हुई, जिसके बाद देशभर में तीसरी बार टीकाकरण अभियान शुरू किया गया।

पूरी दुनिया में दिखेगा बॉलीवुड सितारों का जलवा

ग्लोबल। इमेजिन कीजिए कि करवा चौथ पर जब एक नहीं, बल्कि सात बॉलीवुड सितारे एक साथ आएंग, तो क्या होगा! मशहूर बहन की जोड़ी करीना और करिश्मा कपूर को दर्शकों के सामने पेश करने के बादए नेटफ्लिक्स फैबुलस लाइव्स वर्सेज बॉलीवुड वाइव्स सीजन 3 की क्वीन . महीप कपूरए सीमा सजदेहए भावना पांडेए नीलम कोठारी सोनीए रिद्धिमा कपूर साहनीए शालिनी पासी और कल्याणी साहा चावला को हंसाने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह एपिसोड ग्लैमरए ग्रेस और मजे का पटाखा के अलावा और कुछ नहीं होने का वादा करता है! हंसी के बीचए कपिल शर्मा मजाकिया अंदाज में बॉलीवुड स्टार्स की पत्नियों की उनकी भारी फैन फॉलोइंग के लिए तारीफ करते हैंए फिर पूछते हैंए ष्क्या आपने कभी पता लगाया है कि इस शो में कौन अधिक दिलचस्पी रखता है . पुरुष या महिलाएं,इस सवाल का तुरंत जवाब देते हुए नीलम कोठारी सोनी ने कह कि दरअसलए पुरुषों को गपशप करने में मजा आता है। भावना पांडे ने उन्हें सपोर्ट करते हुए कहाए ष्यह सच है कि पुरुषों को गपशप करना ज़्यादा पसंद है। लेकिन फिर वे अपनी पत्नियों को दोष देते हैं और कहते हैं यार उसने फैबुलस लाइव्स का शो लगाया हुआ हैए मैं तो बस यहां बैठा हुआ हूँए लेकिन असल में वे भी शो देखना चाहते हैं।ष्और सच तो यह है किए हम सभी के पास एक ऐसा मजे का पटाखा होता है जिसका हम विरोध नहीं कर सकते!अगर आप भी हमारी तरह ही उत्सुक हैं तो रात 8 बजे द ग्रेट इंडियन कपिल शो देखना न भूलेंए सिर्फ नेटफ्लिक्स पर।

जापान के सत्तारूढ़ गठबंधन ने निचले सदन में बहुमत गंवाया

राजनीतिक तौर पर अनिश्चितता की स्थिति

भाषा। तोक्यो

जापान के प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा के सत्तारूढ़ गठबंधन ने संसद के 465 सदस्ईय निचले सदन के चुनाव में रविवार को बहुमत गंवा दिया। ए परिणाम सत्तारूढ़ पार्टी के व्यापक वित्तीय घोटालों पर मतदाताओं के आक्रोश को दर्शाते हैं। इशिबा की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) जापान की संसद में शीर्ष पार्टी बनी हुई है और सरकार में बदलाव की उम्मीद नहीं है लेकिन इन नतीजों से राजनीतिक अनिश्चितता पैदा होती है। इन नतीजों के कारण इशिबा के लिए अपनी पार्टी की नीतियों को संसद में पारित कराना मुश्किल हो जाएगा और उन्हें तीसरा गठबंधन सहयोगी तलाशना पड़ सकता है। एलडीपी गठबंधन का अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली ऊपरी सदन में बहुमत बरकरार है।जापानी मीडिया के अनुसार, सत्तारूढ़ गठबंधन ने साझीदार कोमिटो के साथ मिलकर 215 सीट हासिल कीं जबकि इससे पहले उसके पास 279 सीट थीं। यह 2009 में सत्ता से कुछ समय बाहर होने के बाद से गठबंधन का सबसे खराब चुनावी परिणाम है। जापान की द्विसदनीय संसद में निचला सदन बहुत ताकतवर है।इशिबा ने एक अक्टूबर को पदभार ग्रहण किया था। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती फुमियो किशिदा द्वारा लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के कदमों के कारण जनता में उपजे आक्रोश को शांत करने में विफल रहने के बाद समर्थन जुटाने की उम्मीद में तुरंत चुनाव का आदेश दिया था। इशिबा ने रविवार देर रात जापान के राष्ट्रीय एनएचके टेलीविजन से कहा, हम नतीजों को बहुत गंभीरता से लेते हैं।

नाइजीरिया में रिहायशी इमारत ढहने से सात लोगों की मौत

भाषा। अबुजा

नाइजीरिया की राजधानी अबुजा के उपनगरीय इलाके में इस सप्ताहांत एक इमारत ढहने से कम से कम सात लोगों की मौत हो गई। एक स्थानीय अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। अबुजा शहर के आपातकालीन विभाग के प्रवक्ता नकेची ईसा ने कहा, हमने तलाश अभियान एवं बचाव कार्य रोक दिया है, क्योंकि हमने खुदाई की और मलबे में कोई भी नहीं बचा। नाइजीरिया में इमारतें गिरने की घटनाएं तेजी से आम होती जा रही हैं, पिछले दो वर्षों में एक दर्जन से अधिक ऐसी घटनाएं दर्ज की गई हैं। अधिकारी अक्सर ऐसी आपदाओं के लिए भवन सुरक्षा नियमों को लागू करने में विफलता और खराब रख-रखाव को जिम्मेदार ठहराते हैं। अबुजा पुलिस की ओर से रविवार को जारी एक बयान के अनुसार, शनिवार को ढही इमारत, सबोन-लुग्बे क्षेत्र में स्थित थी, जिसे पहले ही आंशिक रूप से ध्वस्त कर दिया गया था तथा धातु के टुकड़े ढूंढने आए सफाईकर्मियों के कारण इसकी संरचना और भी क्षतिग्रस्त हो गई थी। अबुजा पुलिस के प्रवक्ता जोसेफिन अडेह ने बताया कि मलबे से पांच लोगों को बचा लिया गया है। अफ्रीका के सबसे अधिक आबादी वाले देश नाइजीरिया में इस साल जनवरी से जुलाई के बीच इमारतें ढहने की 22 घटनाएं दर्ज की गईं हैं।

दो सबसे बड़े अमेरिकी अखबारों का किसी भी उम्मीदवार का समर्थन नहीं करना लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण

मेलबर्न। फरवरी 2017 में, जब डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में पदभार संभाला था तो द वाशिंगटन पोस्ट ने अपने 140 साल के इतिहास में पहली बार यह नारा अपनाया था, लोकतंत्र अंधकार में मर जाता है। कैसी विडंबना है कि अब यह अखबार आगामी राष्ट्रपति चुनाव के लिए किसी भी उम्मीदवार का समर्थन नहीं करके अमेरिकी लोकतंत्र की लौ को बुझाने में लगा है। द वाशिंगटन पोस्ट और अमेरिका के तीन बड़े समाचार पत्रों में से दूसरे सबसे बड़े अखबार द लॉस एंजिलिस टाइम्स द्वारा लिया गया ऐसा ही निर्णय, पत्रकारिता को अपमानित कर रहा है, समाचार पत्रों की अपनी विरासत को अपमानित कर रहा है और ऐसे समय में नागरिक जिम्मेदारी का परित्याग दर्शाता है जब अमेरिका गृहयुद्ध के बाद से अपने सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रपति चुनाव का सामना कर रहा है।अब प्रश्न यह है कि क्या अमेरिका एक कार्यशील लोकतंत्र बना रहेगा या एक भ्रष्ट धनतंत्र में बदल जाएगा जिसका नेतृत्व एक दोषी अपराधी कर रहा है जिसने पहले ही राष्ट्रपति चुनाव को पलटने के लिए हिंसा भड़काई थी है और उन परंपराओं के प्रति अवमानना दिखाई, जिन पर लोकतंत्र टिका हुआ है। उन्होंने ऐसा क्यों किया ?पश्चिमी दुनिया के दो बेहतरीन समाचार पत्रों ने इतना लापरवाही भरा गैर-जिम्मेदाराना निर्णय क्यों लिया होगा? यह डोनाल्ड ट्रम्प और कमला हैरिस के कार्यालय के लिए संबंधित योग्यता के किसी भी तर्कसंगत आकलन के आधार पर नहीं हो सकता है। यह उम्मीदवारों की अपनी रिपोर्टिंग और विश्लेषण के आधार पर भी नहीं हो सकता है, जहां ट्रम्प द्वारा जारी किए गए झूठ और धमकियों को निडरता से रिकॉर्ड किया गया है। इस संदर्भ में, किसी उम्मीदवार का समर्थन न करने का निर्णय अपने ही संपादकीय कर्मचारियों के साथ विश्वासघात है। द वाशिंगटन पोस्ट के संपादक-एट-लार्ज, रॉबर्ट कैगन ने हैरिस का समर्थन न करने के अखबार के फैसले के विरोध में इस्तीफा दे दिया। मेरे विचार से, इस सबकी एक मात्र व्यवहार्य व्याख्या यह हो सकती है कि संभवत: यह कायरता और लालच का मिलाजुला रूप है। दोनों अखबारों के मालिक अरबपति अमेरिकी व्यवसाई हैं। द वाशिंगटन पोस्ट के मालिक जेफ बेजोस हैं जो अमेज़ॉन के भी मालिक हैं, वहीं द लॉस एंजिलिस टाइम्स का स्वामित्व जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र के उद्योगपति पैट्रिक सून-श्योंग के पास है। बेजोस ने 2013 में अपनी निजी निवेश कंपनी नैश होल्डिंग्स के माध्यम से द वाशिंगटन पोस्ट को खरीदा।

ईरान: जेल में बंद नोबेल पुरस्कार विजेता को अस्पताल में भर्ती कराया जाएगा

दुबई। जेल में बंद नोबेल शांति पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी को ईरान के अधिकारियों ने उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराने की अनुमति दे दी है। मोहम्मदी करीब नौ सप्ताह से बीमार थीं। सामाजिक कार्यकर्ता के बारे में एक संगठन ने यह जानकारी दी। फ्री नार्जेस कोलिशन ने रविवार को एक बयान में कहा कि मोहम्मदी को उपचार के लिए चिकित्सकीय फरलो प्रदान किया जाना चाहिए। महीनों तक उनकी उपेक्षा और देखभाल के अभाव के कारण यह गंभीर स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हुई है तथा उन्हें अस्पताल में स्थानांतरित करने से ही इसका समाधान नहीं होगा। मोहम्मदी को ईरान की एविन जेल में रखा गया है, जहां राजनीतिक कैदियों और पश्चिमी देशों से जुड़े लोगों को रखा जाता है। वह पहले से ही 30 महीने की सजा काट रही थीं तथा जनवरी में उनकी सजा में 15 महीने और जोड़ दिए गए थे। ईरान के प्राधिकारियों ने शनिवार को उनके खिलाफ छह महीने की अतिरिक्त सजा जारी की, उनके लिए यह अतिरिक्त सजा इसलिए जोड़ी गई क्योंकि उन्होंने छह अगस्त को एविन जेल के महिला वार्ड में एक अन्य राजनीतिक कैदी की फांसी की सजा का विरोध किया था। मोहम्मदी हृदय रोग से पीड़ति हैं और सितंबर में जारी हुई उनकी मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार, उनके हृदय की मुख्य धमनी में फिर से गंभीर जटिलताएं उत्पन्न हो गई हैं।

भारत से दवाओं के अवैध आयात के लिए ब्रिटेन में दो लोगों को हुई जेल

लंदन। भारत से ब्रिटेन में अवैध रूप से दवाओं के बड़े पैमाने पर आयात और वितरण में शामिल होने के दो लोगों को ब्रिटेन में जेल की सजा सुनाई गई है। लंदन शहर की पुलिस ने अनुमानित दस लाख पाउंड के रैकेट को विफल कर दिया तथा कार्वाई के दौरान 730 किलोग्राम से अधिक शक्तिशाली ओपिओइड और शामक दवाएं जब्त कीं। सलमान अंसारी (33) को प्रतिबंधित श्रेणी ए, बी और सी की दवाओं की आपूर्ति करने के इरादे से उन्हें रखने के 12 मामलों, दवाओं की आपूर्ति करने की साजिश के एक मामले और धन शोधन के एक मामले में दोषी पाए जाने के बाद छह साल की सजा काटनी होगी। वकास सलीम (33) को शुक्रवार को लंदन में एक मुकदमे के अंत में इसी तरह के आरोपों में दोषी पाए जाने पर ढाई साल की जेल की सजा सुनाई गई।

भारतीय महिला टीम को बल्लेबाजी में करना होगा गंभीर सुधार

● न्यूजीलैंड के खिलाफ श्रृंखला जीतने के लिए खेलना होगा दमदार

भाषा। अहमदाबाद

भारतीय महिला टीम तीन मैचों की श्रृंखला के आखिरी एकदिवसीय में मंगलवार को यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ जब मैदान में उतरेगी तो श्रृंखला जीतने के लिए उसके बल्लेबाजों को अच्छा प्रदर्शन करना होगा। भारतीय बल्लेबाजी रविवार को दूसरे वनडे में लक्ष्य का पीछा करते समय बुरी तरह से फ्लॉप हो गई थी। जीत के लिए 260 रन का पीछा करते हुए भारत ने 108 रन पर आठ विकेट गंवा दिए थे। राधा यादव (48) और साइमा ठाकोर (29) ने नौवें विकेट के लिए 70 रन की साझेदारी कर टीम को शर्मनाक हार से बचाया। भारतीय टीम 183 रन पर आउट हो गई। इससे पहले श्रृंखला के शुरुआती मैच में भी भारतीय गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन कर टीम को 59 रन से जीत दिलाई। श्रृंखला के शुरुआती दो मैचों में किसी भी भारतीय बल्लेबाज ने अर्धशतक नहीं जड़ा है। भारत को श्रृंखला के निर्णायक मैच में सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा के साथ कप्तान हरमनप्रीत कौर की तिकड़ी को दमखम दिखाना होगा। मध्यक्रम में जेमिमा रोड्रिग्स, दीप्ति शर्मा और तेजल हसबनीस अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलने में नाकाम रहे है। भारत को सबसे ज्यादा परेशानी मंधाना की खराब लय से हो रही है। दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाजों में से एक मंधाना पिछले कुछ मैचों में से रन बनाने के लिए संघर्ष कर रही है। वह श्रृंखला के शुरुआती दो मैचों में अब तक दहाई के आंकड़े में भी नहीं पहुंची है। वहीं दूसरी तरफ भारतीय गेंदबाजों का प्रदर्शन सराहनीय रहा है। टीम ने शुरुआती मैच में न्यूजीलैंड की पारी को 168 रन पर समेट दिया था। दूसरे मैच में न्यूजीलैंड की टीम 14 ओवर में बिना किसी नुकसान के 259 रन बनाने के बाद बड़े स्कोर की तरफ बढ़ रही थी लेकिन भारतीय गेंदबाजों के राधा यादव (चार विकेट) की अगुवाई में अच्छी वापसी करते हुए उनकी पारी का 259 रन पर रोक दिया। न्यूजीलैंड के लिए पिछले मैच में अनुभवी सूजी बेट्स (58) और कप्तान सोफी डिवाइन (79) ने शानदार बल्लेबाजी टीम को मनोबल बढ़ाने वाली जीत दिलाई।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में टेस्ट पदार्पण के लिए इंग्लिस योजना में शामिल : बेली

सिडनी। मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने सोमवार को संकेत दिया कि फॉर्म में चल रहे ऑस्ट्रेलिया के सफेद गेंद के विकेटकीपर-बल्लेबाज जोश इंग्लिस अगले महीने होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में बतौर विशेषज्ञ बल्लेबाज टेस्ट पदार्पण करने की योजना में शामिल हैं।

भारत 21 नवंबर से पर्थ में शुरू हो रही पांच टेस्ट की श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया का सामना करेगा जिसे पिछले चार मौकों पर हार का सामना नहीं करना पड़ा है। बेली ने पत्रकारों से कहा, इसमें कोई शक नहीं है कि इस समय वह वाकई शानदार फॉर्म में है। मुझे लगता है कि वह बल्लेबाज के तौर पर जिस तरह से प्रदर्शन कर रहे हैं, उसे देखते हुए वह साल में विभिन्न श्रृंखलाओं में शामिल हो सकते हैं। न्होंने कहा, अगर गर्मियों में पूरे वर्ष सही मौका मिलता है और वह जिस स्थान पर प्रदर्शन करने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त हैं, मुझे लगता है कि उसे शामिल किया जा सकता है। इंग्लिश (29 वर्ष) वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय में ऑस्ट्रेलिया के विकेटकीपर हैं।

चिराग चिक्कारा ने स्वर्ण पदक जीता

भारतीय पहलवानों ने बिखेरी चमक

भाषा। तिराना (अल्बानिया)

चिराग चिक्कारा अंडर-23 विश्व चैंपियन बनने वाले तीसरे भारतीय पहलवान बन गए हैं जिसकी मदद से भारत ने यहां चल रहे इस आयु वर्ग टूर्नामेंट में एक स्वर्ण और रजत सहित नौ पदक जीते। पुरुषों की फ्रीस्टाइल 57 किग्रा वर्ग में प्रतिस्पर्धा कर रहे चिक्कारा ने किर्गिस्तान के अब्दिमालिक कराचोव पर अंतिम सेकंड में 4-3 से जीत दर्ज की। वह पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता अमन सहरावत के बाद अंडर-23 चैंपियनशिप में स्वर्ण जीतने वाले दूसरे भारतीय पुरुष खिलाड़ी बन गए हैं। सहरावत ने 2022 में इस प्रतियोगिता के इसी वजन वर्ग में यह उपलब्धि हासिल की थी, जबकि रीतिका हुडा पिछले साल 76 किग्रा वर्ग में जीत दर्ज करके टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी थीं। रवि कुमार दहिया ने 2018 में अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीता था। चिक्कारा ने फाइनल में पहुंचने से पहले प्रभावशाली प्रदर्शन किया। उन्होंने प्री-क्वार्टर फाइनल में गौकोटो ओजावा को 6-। से, अंतिम आठ चरण में इयुनुस इवबातीरोव को 12-2 से और सेमीफाइनल में एलन ओरलबेक को 8-0 से हराया। पुरुषों की फ्रीस्टाइल श्रेणी में भारत के पदकों में दो कांस्य पदक भी शामिल हैं। इससे वह 82 अंक लेकर टीम तालिका में ईरान (158), जापान (102) और अजरबैजान (100) से पीछे चौथे स्थान पर है। भारत ने पुरुषों की फ्रीस्टाइल में दो और कांस्य पदक जीते, जिससे इस वर्ग में देश के पदकों की संख्या चार हो गई। विक्की ने पुरुषों की 97 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा में अंडर-20 विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता और यूक्रेन के यूरोपीय जूनियर चैंपियन इवान प्राइमाचेंको को 7-2 से हराकर कांस्य पदक जीता। विक्की ने पहले दौर में जॉर्जिया के मेरब सुलेमानिश्विली को और क्वार्टरफाइनल में मोल्दोवा के राडू लेफ्टर को हराया था लेकिन सेमीफाइनल में वह ईरान के महदी हाजीलोइयन मोराफा से हार गए थे। पुरुषों की 70 किग्रा फ्रीस्टाइल में सुजीत कलकल ने 0-4 से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए ताजिकिस्तान के मुस्तफो अखमेदोव को 13-4 से हराकर कांस्य पदक जीता। सुजीत ने पहले दौर में जॉर्जी एंटोनोव जज़िगोव को 10-0 से, प्री-क्वार्टर में तुग्सजर्गल एर्डेनेबैट को 7-4 से और क्वार्टर फाइनल में नारेक पोहोसियन को 6-। से हराया था, लेकिन सेमीफाइनल में वह मैगोमेद बसिहर खानिएव से 4-8 से हार गए थे। इससे पहले अभिषेक ढाका ने कांस्य पदक जीता था। इस तरह से भारत ने फ्रीस्टाइल में चार पदक (एक स्वर्ण और तीन कांस्य) जीतकर अपने पिछले साल के प्रदर्शन में सुधार किया।

चौफला ने अखिल भारतीय रैकेटलॉन स्पर्धा में रजत पदक हासिल किया

मुंबई,। भारत के विक्रमादित्य चौफला को यहां अखिल भारतीय रैकेटलॉन ओपन में संयुक्त अरब अमीरात के मोहम्मद कुबा से हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा। भारत के सर्वोच्च रैंक वाले रैकेटलॉन खिलाड़ी चौफला को कई विश्व चैंपियनशिप में भाग लेने का अनुभव है। इस प्रतियोगिता में भारत के आदित पटेल तीसरे स्थान पर रहे। रैकेटलॉन टेबल टेनिस, बैडमिंटन, टेनिस और स्क्वैश जैसे चार रैकेट खेलों का संयोजन है। महिला वर्ग में नाहिद दिवेचा चैम्पियन बनी जबकि शिखा बरासिया और तारा भंडारे क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे।

शुभंकर शर्मा संयुक्त 66वें स्थान पर रहे

इंचियोन (कोरिया)। भारत के शुभंकर शर्मा का निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा और वह अंतिम दो दौर में 76 के समान स्कोर के साथ डीपी वर्ल्ड टूर की जेनेसिस गोल्फ चैंपियनशिप में संयुक्त रूप से 66वें स्थान पर रहे।शुभंकर ने पहले दो दौर में 71 और 68 का स्कोर बनाया था। कोरिया के बियोंग हुन आन ने हमवतन टॉम किम को प्ले ऑफ में हराकर अपना दूसरा डीपी विश्व टूर खिताब जीता।

रेहान थॉमस थाईलैंड में सातवें स्थान पर रहे

बैंकॉक। भारतीय गोल्फर रेहान थॉमस यहां अंतरराष्ट्रीय सीरीज थाईलैंड के अंतिम दौर में दो अंडर 68 का कार्ड खेलकर संयुक्त सातवें स्थान पर रहे जिससे एशियाई टूर पर वह दूसरी दफा शीर्ष 10 में शामिल रहे। संयुक्त अरब अमीरात में बसा यह गोल्फर हालांकि दूसरे और तीसरे दौर में क्रमश: 63-64 का जादू दोहराने में असफल रहा। रेहान का कुल स्कोर 16 अंडर हुआ। रेहान ने 14वें से 17वें होल के बीच में तीन से कुल चार बर्डी लगाई।

आईडब्ल्यूएल-2 की शुरुआत 10 जनवरी को दो मुकाबलों के साथ

नई दिल्ली। गत चैंपियन ओडिशा एफसी 10 जनवरी 2025 को इंडियन वुमेन्स लीग (आईडब्ल्यूएल) फुटबॉल टूर्नामेंट के पहले दिन ईस्ट बंगाल से भिड़ेगी जबकि इसी दिन गोकुलम केरल एफसी का सामना पदार्पण कर रहे श्रीभूमि एफसी से होगा।इस लीग का आयोजन अपने और विरोधी की मेजबानी में होने वाले मुकाबलों के प्रारूप के आधार पर होगा। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार लीग 13 अप्रैल तक चलेगी।पिछले सत्र की दूसरे टीयर की लीग की चैंपियन कोलकाता की श्रीभूमि एफसी और उप विजेता ओडिशा की एनआईटीए फुटबॉल अकादमी को आईडब्ल्यूएफ में प्रमोट किया गया है जिससे लीग के दूसरे सत्र में आठ टीम हिस्सा लेंगी।

एटलेटिको मैड्रिड का संघर्ष जारी, रियाल बेटिस हारा

मैड्रिड। एटलेटिको मैड्रिड को स्पेनिश लीग फुटबॉल टूर्नामेंट ला लिगा में आत्मघाती गोल के कारण रियाल बेटिस से।-0 से हार का सामना करना पड़ा।मैच समाप्त होने में जब पांच मिनट से भी कम समय बचा था तब डिफेंडर जोस मारिया जिमेनेज के आत्मघाती गोल ने एटलेटिको की लगातार दूसरी हार तय कर दी।एटलेटिको मैड्रिड सभी प्रतियोगिताओं में पिछले छह मैचों में केवल एक मैच जीत पाया है। उसने पिछले सप्ताहांत स्पेनिश लीग में लेगानेस को 3-। से हराया था। इससे पहले उसने घरेलू मैदान पर रियाल मैड्रिड और रियाल सोसिदाद के खिलाफ ड्रॉ खेला था जबकि चैंपियंस लीग में बेनफिका से उसे 4-। से हार मिली थी।

उत्तर प्रदेश ने पंजाब पर शिकंजा कसा

रणजी ट्राफी : रिंकू और राणा चमके

भाषा। मुल्लांपुर

उत्तर प्रदेश ने रिंकू सिंह और नीतिश राणा के अर्धशतकों से सोमवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप सी मैच के तीसरे दिन पंजाब के खिलाफ शिकंजा कस दिया। सलामी बल्लेबाज माधव कौशिक की करियर की सर्वश्रेष्ठ 163 रन की पारी के बाद उत्तर प्रदेश ने चार और अर्धशतक जड़कर पहली पारी नौ विकेट पर 556 रन के विशाल स्कोर पर घोषित की और पंजाब पर 346 रन की बढ़त बना ली। स्टंप तक पंजाब की टीम दूसरी पारी में एक विकेट पर 49 रन पर जूझ रही थी और 297 रन से पिछड़ रही है। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के राणा और रिंकू ने तीसरे विकेट के लिए 120 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी बनाई।

राणा ने 106 गेंद में 66 रन की आक्रामक पारी खेली जिसमें 11 चौके जड़े थे जबकि रिंकू ने 131 गेंद में आठ चौके और एक छक्के से 68 रन बनाए। सौरभ कुमार ने 67 गेंद में तीन छक्के और पांच चौके से 69 रन की पारी खेली जबकि शिवम शर्मा ने 58 गेंद में चार छक्के और दो चौके से नाबाद 50 रन की पारी खेलकर पंजाब के आक्रमण को हताश किया। इंदौर में नौवें नंबर खेलने उतरे हर्षल पटेल के नाबाद 72 रन से और युजवेंद्र चहल की 142 गेंद में 27 रन की पारी से हरियाणा ने मध्य प्रदेश पर पहली पारी की अहम बढ़त हासिल की। मध्य प्रदेश के 308 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए हरियाणा ने नौ विकेट पर 431 रन बनाए जिसमें पटेल अंतिम खिलाड़ी अमन कुमार (04) के साथ क्रीज पर थे। सलामी बल्लेबाज लक्ष्य दलाल ने 271 गेंद में 105 रन बनाकर अपना पहला शतक जड़ा जबकि धीरू सिंह ने 94 रन की पारी खेली और शतक से चूक गए। हिमांशु राणा (90 रन) भी शतक से चूक गए लेकिन दलाल और धीरू ने चौथे विकेट के लिए 143 रन की साझेदारी निभाकर मजबूत नींव रखी। बाएं हाथ के स्पिनर कुमार कार्तिकेय ने 117 रन देकर चार विकेट झटके। कोलकाता में बंगाल के तेज गेंदबाज ईशान पोरेल ने 83 रन देकर पांच विकेट चटकाए जो उनका प्रथम श्रेणी क्रिकेट में पांच विकेट चटकाने का पांचवां प्रदर्शन है जिससे केरल का स्कोर पांच विकेट पर 83 रन हो गया।

सुमित के शतक से असम पर दिल्ली जीत की राह पर

नई दिल्ली। ऑलराउंडर सुमित माथुर के शतक से दिल्ली रणजी ट्रॉफी ग्रुप डी मैच के तीसरे दिन सोमवार को यहां असम के खिलाफ जीत के करीब पहुंच गया।असम के 330 रन के जवाब में दिन की शुरुआत छह विकेट पर 214 रन से करते हुए दिल्ली की टीम मुश्किल में थी। शुरुआती दो मैच की एकादश से बाहर रहे माथुर (112 रन, 230 गेंद) ने इसके बाद भारतीय टीम में जगह बनाने वाले हर्षित राणा (59 रन, 78 गेंद) के साथ सातवें विकेट के लिए 99 और फिर सिद्धांत शर्मा (89 रन, 128 गेंद) के साथ आठवें विकेट के लिए 166 रन जोड़कर टीम का स्कोर 454 रन तक पहुंचाया।अंतिम चार विकेट ने 272 रन जोड़े।पहली पारी में 124 रन की बढ़त मिलने के बाद दिल्ली के तेज गेंदबाजो हर्षित और मनी ग्रेवाल ने दिन का खेल खत्म होने तक दूसरी पारी में असम का स्कोर तीन विकेट पर 44 रन कर दिया।दिल्ली की टीम शुरुआती दो मैच से सिर्फ चार अंक ही जुटा पाई है और इस मुकाबले में जीत उसके लिए काफी महत्वपूर्ण हो सकती है।कोयंबटूर में छत्तीसगढ़ के 500 रन के जवाब में तमिलनाडु की टीम पहली पारी में सी आंद्रे सिद्धार्थ (55) और एम शाहरूख खान (50) के अर्धशतक के बावजूद 259 रन पर सिमट गई और उसे फॉलोऑन के लिए मजबूर होना पड़ा।छत्तीसगढ़ की ओर से शुभम अग्रवाल ने 62 रन देकर पांच विकेट चटकाए।तमिलनाडु ने दूसरी पारी में एक विकेट पर 71 रन बना लिए हैं। मेजबान टीम अब भी 170 रन से पिछड़ रही है।राजकोट में रेलवे ने सौराष्ट्र को 37 रन से हराकर जीत दर्ज की। रेलवे की टीम दूसरी पारी में सात विकेट पर 122 रन से आगे खेलने उतरी और 141 रन पर सिमट गई।

त्रिपुरा के जीवनजोत का उम्दा शतक

तेज गेंदबाजो ने मुंबई के शुरूआती दो विकेट झटके

अगरतला। त्रिपुरा के तेज गेंदबाज मनीशंकर मुरासिंह और अभिजीत सरकार ने सोमवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप ए मैच के तीसरे दिन मुंबई के दोनों सलामी बल्लेबाजों को आउट कर गत चैम्पियन का स्कोर दो विकेट पर सात रन कर दिया। 42 बार की चैम्पियन मुंबई ने पहली पारी में 450 रन बनाए और फिर त्रिपुरा को 302 रन पर समेट दिया जिसमें युवा स्पिनर हिमांशु सिंह ने 65 रन देकर छह विकेट झटके। मुंबई की कुल बढ़त 155 रन हो गई है। पर मंगलवार को अगर मुंबई ने शुरूआत में विकेट गंवा दिए तो इससे उसे परेशानी हो सकती है। त्रिपुरा के अनुभवी बल्लेबाज जीवनजोत सिंह (118 रन) ने 14वां प्रथम श्रेणी शतक जड़ा जबकि मध्यक्रम में श्रीदम पॉल (52 रन) और कप्तान मंदीप सिंह (नाबाद 62 रन) के अर्धशतकों से मेजबान टीम ने पूरे दिन बल्लेबाजी की जबकि उसने दिन की शुरूआत एक विकेट पर 60 रन से की थी। भारतीय गेंदबाज शार्दुल ठाकुर और शम्स मुलानी के खिलाफ त्रिपुरा ने 300 रन का स्कोर पार किया जिससे मुंबई की बढ़त 148 रन रह गई। दिन के तीन ओवर बचे थे जिससे त्रिपुरा के नई गेंद के गेंदबाज सरकार (चार रन देकर एक विकेट) और मनीशंकर (तीन रन देकर एक विकेट) ने तुरंत प्रभाव डाला तथा अंगकृष रघुवंशी (छह रन) और आयुष म्हात्रे (01) पवेलियन लौट गए।

ग्रुप बी: शोरे, राठौड़ के अर्धशतक से विदर्भ ने उत्तराखंड पर दबदबा बनाया

देहरादून। यश राठौड़ और ध्रुव शोरे के अर्धशतक से विदर्भ ने दूसरी पारी में छह विकेट पर 255 रन बनाकर सोमवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप बी मैच के तीसरे दिन उत्तराखंड के खिलाफ दबदबा बरकरार रखा।दिन का खेल खत्म होने तक विदर्भ की कुल बढ़त 292 रन की हो गई है। मेजबान उत्तराखंड की टीम सुबह पहली पारी में सात विकेट पर 242 रन से आगे खेलने उतरी और 289 रन पर ऑल आउट हो गई जिससे विदर्भ ने पहली पारी में 37 रन की महत्वपूर्ण बढ़त हासिल की। विदर्भ की ओर से अक्षय वखारे ने 62 रन देकर चार विकेट चटकाए। दूसरी पारी में विदर्भ ने सलामी बल्लेबाज अथर्व ताइडे और अमन मोखादे के विकेट 24 रन तक ही गंवा दिए जिसके बाद शोरे (59 रन, 114 गेंद, पांच चौके) और दानिश मालेवार (42 रन, 63 गेंद, सात चौके) ने तीसरे विकेट के लिए 64 रन जोड़कर पारी को संभाला। दानिश के आउट होने के बाद शोरे ने पहली पारी के शतकवीर राठौड़ (56 रन, 75 गेंद, तीन चौके) के साथ चौथे विकेट के लिए 68 रन जोड़कर टीम का स्कोर 150 रन के पार पहुंचाया। स्वप्निल सिंह ने शोरे को आउट करके उत्तराखंड को वापसी दिलाने की कोशिश की।

क्विक न्यूज

गैरी कर्स्टन ने पाकिस्तान की सीमित ओवरों की टीम के कोच पद से इस्तीफा दिया

कराची। पाकिस्तान की सीमित ओवरों की टीम के मुख्य कोच गैरी कर्स्टन ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के साथ मतभेद पैदा होने के कारण अपनी नियुक्ति के छह महीने के अंदर ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। भारत की 2011 में वनडे विश्व कप की चैंपियन टीम के कोच रहे 56 वर्षीय कर्स्टन को पीसीबी ने इस साल अप्रैल के आखिर में मुख्य कोच नियुक्त किया था।पीसीबी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने आज घोषणा की कि जेसन गिलेस्पी अगले महीने ऑस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के दौरे पर पाकिस्तान की पुरुष क्रिकेट टीम के कोच होंगे। गैरी कर्स्टन ने अपना इस्तीफा सौंप दिया है, जिसे स्वीकार कर लिया गया है। इस घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले एक विश्वसनीय सूत्र ने कहा कि टेस्ट टीम के कोच गिलेस्पी ने पीसीबी से स्पष्ट कर दिया है कि वह चार नवंबर से शुरू होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर ही सीमित ओवरों की टीम के कोच पद की जिम्मेदारी संभालेंगे तथा उनकी इन प्रारूप में स्थाई कोच बनने में दिलचस्पी नही है।सूत्र ने कहा, गिलेस्पी ने बोर्ड को सूचित कर दिया है कि जिंबॉब्वे के खिलाफ और उसके बाद होने वाले सीमित ओवरों के मैचों के लिए उन्हें कोई दूसरा कोच नियुक्त करना होगा। पीसीबी ने कर्स्टन के अचानक लिए गए इस फैसले का कोई कारण नही बताया लेकिन सूत्रों ने पुष्टि की कि ऑस्ट्रेलिया और जिंबॉब्वे दौरे के लिए टीम का चयन करने और नया कप्तान नियुक्त करने के लिए उनकी राय नही लिए जाने से दक्षिण अफ्रीका का यह पूर्व क्रिकेटर नाखुश था।इससे पहले पीसीबी ने टीम के चयन से जुड़े उनके अधिकार वापस ले लिए थे, जिसे मतभेद का मुख्य कारण माना जा रहा है। टीम का चयन करना अब विशेष रूप से चयन समिति का क्षेत्र है।

लिवरपूल ने आर्सेनल को बराबरी पर रोका, मैनचेस्टर यूनाइटेड की एक और हार

लंदन। स्टार स्ट्राइकर मोहम्मद सलाह के शानदार खेल की मदद से लिवरपूल ने इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल प्रतियोगिता के मैच मे दो बार पिछड़ने के बाद अच्छी वापसी करके आर्सेनल को 2-2 से बराबरी पर रोका।मैच के अंतिम क्षणों में जब लिवरपूल जब पीछे चल रहा था तब सलाह ने 81वें मिनट में दूसरा बराबरी का गोल किया। लिवरपूल ने इस तरह से अपना शानदार अभियान जारी रखा। आर्ने स्लॉट के मुख्य कोच बनने के बाद लिवरपूल में इस सत्र में जो 13 मैच खेले है उनमें से उसे केवल एक मैच में हार का सामना करना पड़ा। उसके प्रीमियर लीग में अब नौ मैच में 22 अंक हो गए हैं और वह शीर्ष पर काबिज मैनचेस्टर सिटी से केवल एक अंक पीछे है।मैनचेस्टर युनाइटेड के साथ कुछ भी अच्छा नही चल रहा है और उसे वेस्ट हैम से 2-। से हार का सामना करना पड़ा। जब खेल खत्म होने में कुछ मिनट का खेल बचा था तब वीडियो समीक्षा प्रणाली से वेस्ट हैम को पेनल्टी मिली जिसे जारोड बोवेन ने गोल में बदलने में कोई गलती नही की।

44 प्रतिशत युवा लाइव खेल देखने के शौकीन

मुंबई। अग्रणी वैश्विक यात्रा ऐप स्काईस्कैनर ने आज अपना ट्रैवल ट्रेंड्स 2025् जारी किया। रिपोर्ट खुलासा करती है कि आगामी वर्ष सामूहिक यात्रा अनुभवों के बारे में है। तारा दर्शन से रात के आसमान के नीचे गहन कला दीर्घाओं की खोज करने के लिए भारतीयों का रुझान तेजी से बढ़ रहा है साहसिक कार्य जो समुदाय की भावना प्रदान करते हैं। इसके अलावाए 66 प्रतिशत भारतीय अधिक यात्रा करने की योजना बना रहे हैं। 2025 वैश्विक अन्वेषण सर्वोच्च प्राथमिकता है क्योंकि वे ऐसे गंतव्यों की तलाश करते हैं जो समृद्ध अनुभव प्रदान करते हैं। 25 से 34 वर्ष की आयु के लोगों में 44 प्रतिशत लोग लाइव खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए उत्साहित हैं, उनका समर्थन करने के लिए उत्सुक हैं साथी प्रशंसकों के साथ.साथ पसंदीदा टीमें। यह रिपोर्ट आने वाले वर्ष में भारतीय यात्रियों की नब्ज, उनके विकास के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है यात्रा प्राथमिकताएँए और शीर्ष 10 ट्रेंडिंग और सर्वोत्तम मूल्य वाले गंतव्य। रिपोर्ट के आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि भारतीय यात्री तेजी से गहरे संबंधों की तलाश कर रहे हैं। इस बीचए 47 प्रतिशत गहन कला अनुभवों की तलाश में हैं जो सक्रिय भागीदारी को आमंत्रित करता है। सामूहिक यात्रा में यह बढ़ती रुचि एक साझा प्रवृत्ति को उजागर करती है। क्षण और अपनेपन की भावना लोगों के दुनिया को जानने के तरीके को बदल देती है। नवीनतम ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्टश् पर अपने विचार साझा करते हुए मोहित जोशी स्काईस्कैनर ट्रैवल ट्रेंड्स और गंतव्य विशेषज्ञ ने कहा किभारतीय यात्री सिर्फनए गंतव्यों की खोज नहीं कर रहे हैंय वे खोज रहे हैं सार्थक और सामूहिक यात्रा अनुभव। 2025 में भारतीय यात्री स्टेडियमों में सीटों के लिए सोफ़े की अदला.बदली कर रहे हैं। 53 प्रतिशत लोग इसमें उतरने के लिए उत्सुक हैंदेश या विदेश में लाइव स्पोर्ट्स का रोमांचक माहौल। चाहे वह क्रिकेट,फुटबॉल, या अन्य हो वैश्विक टूर्नामेंटों मेंए खेल पर्यटन अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच रहा हैए जिसमें लगभग दो तिहाई 63प्रतिशत भारतीय शामिल हैं। मनोरंजन प्रयोजनों के लिए अनुभव का आनंद लेने की योजना बना रहे हैं। और आधे 50 प्रतिशत भारतीय प्रशंसकों के लिएए अपनी पसंदीदा खेल हस्तियों को एक्शन में देखने का मौका इन भव्य आयोजनों को देखने के लिए प्रेरित करता है। दिलचस्प बात यह है कि स्काईस्कैनर ने इस बढ़ते उत्साह को पकड़ लिया है, जिससे आगे उड़ान बुकिंग में बढ़ोतरी दिख रही है। फॉर्मूल-1 जैसे प्रमुख खेल आयोजनों में। आंकड़ों के अनुसारए अबू धाबी ;6.8 दिसंबरद्ध में 188 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।दौड़ से पहले 2 दिसंबर को बुकिंग में। इससे पहले सिंगापुर 20.22 सितंबर में भी ऐसा देखा गया थापिछले दिन की तुलना में 18 सितंबर को उड़ान बुकिंग में उल्लेखनीय 189प्रतिशत की वृद्धि हुई। भारतीय प्रशंसक उत्साह से भरे हुए हैं और स्काईस्कैनर आपको एक्शन में डूबने में मदद करने के लिए यहां है।

ऑस्ट्रेलिया ने टेस्ट क्रिकेटरों को विश्राम दिया, अभी टी20 टीम का कप्तान नियुक्त करना बाकी

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया ने भारत के खिलाफ होने वाली बॉर्डर गावस्कर श्रृंखला को ध्यान मे रखते हुए पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू टी20 श्रृंखला के लिए अपने नियमित टेस्ट खिलाड़ियों को विश्राम दिया है।ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली श्रृंखला के लिए अपनी टी20 टीम की घोषणा कर दी है लेकिन अभी तक कप्तान नियुक्त नही किया है।ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच चार नवंबर से तीन एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच की श्रृंखला खेली जाएगी। इसके बाद यह दोनों टीम 14 नवंबर से शुरू होने वाली टी20 श्रृंखला में एक दूसरे का सामना करेंगी।यह टी20 श्रृंखला 18 नवंबर को समाप्त होगी जबकि आस्ट्रेलिया को भारत के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला का पहला मैच 22 नवंबर से पर्थ में खेलना है।टी20 टीम के कप्तान मिशेल मार्श, ट्रैविस हेड तथा वनडे और टेस्ट टीम के कप्तान पैट कमिंस को विश्राम दिए जाने के कारण ऑस्ट्रेलिया ने अभी तक श्रृंखला के लिए कप्तान नियुक्त नही किया है।ऑस्ट्रेलिया ने सोमवार को जो टीम घोषित की उसमें कोई भी खिलाड़ी ऐसा नही है जिसने इससे पहले किसी भी प्रारूप में अपने देश की कप्तानी की हो, लेकिन ग्लेन मैक्सवेल, एडम ज़म्पा, मैथ्यू शॉर्ट और आरोन हार्डी जैसे खिलाड़ियों ने बिग बैश लीग में अपनी टीम का नेतृत्व किया है।

सलीमा टेटे बनीं महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय कप्तान

नई दिल्ली। बिहार के नवनिर्मित राजगीर हॉकी स्टेडियम में 11 से 20 नवंबर तक होने वाली एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए सलीमा टेटे की अगुवाई में सोमवार को 18 सदस्ईय भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा की गई। नवनीत कौर को टीम का उपकप्तान नियुक्त किया गया है। भारत ने पिछले साल रांची में हुए आयोजन में खिताब जीता था लेकिन उसके बाद से टीम के प्रदर्शन में गिरावट आई है।इस महाद्वीपीय प्रतियोगिता में टीम को मौजूदा ओलंपिक रजत पदक विजेता चीन, जापान, कोरिया, मलेशिया और थाईलैंड सहित पांच अन्य देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। भारत अपने अभियान की शुरुआत 11 नवंबर को मलेशिया के खिलाफ करेगा। टीम के चयन और टूर्नामेंट के लिए उनकी तैयारी पर मध्य पंक्ति की खिलाड़ी सलीमा ने कहा, एक और बड़े टूर्नामेंट में टीम का नेतृत्व करना एक शानदार एहसास है। हम गत चैम्पियन के रूप में टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। यह इसे और भी खास बनाता है। हमने कड़ी ट्रेनिंग की है। हमारे पास अनुभवी खिलाड़ियों और युवा प्रतिभाओं के साथ एक मजबूत टीम है। हमारा लक्ष्य अपने खिताब की रक्षा करना और उसी जुनून और दृढ़ संकल्प के साथ खेलना है जो हमने पिछले साल दिखाया था। टीम में गोलकीपर की भूमिका अनुभवी सविता और उभरती प्रतिभा बिचू देवी खारीबाम साझा करेंगी। रक्षापंक्ति की जिम्मेदारी उदिता, ज्योति, इशिका चौधरी, सुशीला चानू पुखरामबम और वैष्णवी विट्ठल फाल्के के पास होगी।

वाराणसी मंडल बना राज्य स्तरीय सब जूनियर बालिका हैंडबॉल का चैंपियन

लखनऊ। वाराणसी मंडल ने राज्य स्तरीय सब जूनियर बालिका हैंडबॉल प्रतियोगिता का खिताब अयोध्या मंडल को 20-10 गोल से हराकर अपने नाम कर लिया। उत्तर प्रदेश खेल विभाग व उत्तर प्रदेश हैंडबॉल संघ के समन्वय से गत 25 से 28 अक्टूबरए 2024 तक अयोध्या में आयोजित प्रतियोगिता में वाराणसी मंडल की काजल पटेल एवं अयोध्या मंडल की मानकी को सर्वश्रेष्ठ स्कोरर चुना गया। इससे पूर्व खेले गए सेमीफइनल में वाराणसी मंडल ने आजमगढ़ मंडल को 9.4 से और अयोध्या मंडल ने प्रयागराज मंडल को 15.7 से हराकर फ इनल में जगह बनायी थी। प्रतियोगिता में आजमगढ़ को तीसरा व प्रयागराज को चौथा स्थान मिला। समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश हैंडबॉल संघ के महासचिव डाण् आनन्देश्वर पाण्डेय ने विजेता व उपविजेता टीमों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी श्रीमती चंचल मिश्रा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

एसएमआर को अनिल ने दिलाई जीत

लखनऊ। मैन ऑफद मैच अनिल सिंह-2 विकेटए 48 रन के आलराउंड खेल से एसएमआर क्लब ने तृतीय अधीर दुबे स्मारक टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में तारिक क्रिकेट क्लब को 6 विकेट से शिकस्त दी। पंडित रास बिहारी तिवारी स्टेडियम पर तारिक क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 9 विकेट पर 141 रन बनाए। डाण्प्रियेश ने 46 गेंदों पर 4 चौके से सबसे ज्यादा 49 रन जोड़े। जसविंदर सिंह ने 25 व मयंक ने 19 रन का योगदान किया। एसएमआर क्लब से अनिल सिंह व ईशा शेख को 2.2 विकेट की सफलता मिली। जवाब में एसएमआर क्लब ने 18०5 ओवर में 4 विकेट पर 144 रन बनाकर मैच जीत लिया। अनिल सिंह ने 49 गेंदों पर 2 चौके व 4 छक्के से 48 रनए जावेद ने 26ए अजय कुमार लाल ने 20 व रेहान ने नाबाद 22 रन बनाकर टीम को जीत दिलाई। तारिक क्रिकेट क्लब से हनी जाफरी को दो विकेट की सफलता मिली।

कॅरियर क्लब ने जीता राजेश सिंह स्मारक टी-20 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट

लखनऊ। कॅरियर क्लब ने शिशिर पाण्डेय नाबाद 52 व मोहन यादव नाबाद 68 के अर्धशतकों से कॅरियर क्लब ने तृतीय राजेश सिंह स्मारक टी-20 नाइट क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में सीआईडी इलेवन को 7 विकेट से हराकर खिताबी जीत दर्ज की।कॅरियर क्रिकेट स्टेडियम पर सीआईडी इलेवन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 3 विकेट पर 195 रन का स्कोर बनाया।सलामी बल्लेबाज शैलेंद्र सिंह 55 ने अर्धशतक जड़ा। रामू यादव ने 31 व शमी ने 29 रन का योगदान किया।कॅरियर क्लब से मोण्दानिश व रिजवी को दो.दो विकेट मिले। जवाब में कॅरियर क्लब ने 16०2 ओवर में 3 विकेट पर 199 रन बनाकर जीत के साथ विजेता ट्रॉफी अपने नाम कर ली। सलामी बल्लेबाज मोण्सलीम ने 43 रन बनाए।उनके बाद शिशिर पाण्डेय ने 25 गेंदों पर 5 चौके व 2 छक्के से नाबाद 52 रन और मोहन यादव ने मात्र 31 गेंदों पर 7 चौके व 3 छक्के से नाबाद 68 रन की पारियां खेलकर टीम को जीत दिलाई। विशेष पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज मो.शरीफ डीएसएस ,सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज डा.अपूर्व मेहरोत्रा कॅरियर क्लब, सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर जीशान अजहर डीएसएस और मैन ऑफ द सीरीज मयंक यादव ;रायल वारियर्सद्ध बने। समापन के अवसर पर चंदन सिंह ने पुरस्कार वितरित किए।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-693425001